Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

1656

अर्क गुण विधान

डा० गणपति सिंह वर्मा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्क (आक) गुण विधान

जिसमें

अनेक रोगों का केवल आक से ही इलाज करना बतलाया गया है।

डा० गणपति सिंह वर्मा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लेखक (सम्पादक)
डा० गणपति सिंह वर्मा

प्रकाशक—
रसायन फार्मेसी
३, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

तृतीय पुनर्मुद्रण

मूल्य ५–००

मुद्रक—
स्वस्तिक प्रिंटिंग वर्क्स
६१, नया बांस, दिल्ली-११०००६

कापीराइट एक्ट १९५० के अनुसार
सर्वाधिकार प्रकाशक के सुरक्षित

चेतावनी—
इस पुस्तक या इसके किसी अंश के किसी भी भाषा में नकल प्रकाशित न करें अन्यथा हमारी क्षति व खर्चे के जुम्मेवार होंगे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विषय अनुक्रमणिका

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्क गुण विधन

शिरः रोगों का वर्णन

यद्यपि शिर के रोग असंख्य हैं तथापि जिन रोगों में आक का उपयोग होता है, यहां केवल उन्हीं रोगों से तात्पर्य है। विशेष कर आक से बड़ी अद्‌भुत और चमत्कारी नस्य तैयार होती हैं, जो मस्तिष्क सम्बन्धी बहुत सी व्याधियों के लिए बहुत ही उपयोगी तथा लाभदायक सिद्ध हुई हैं। अतएवं नीचे कई एक नस्यों के प्रयोग लिखे जाते हैं।

जुकाम

प्रतिश्यायावरोध होने से मनुष्य को बहुत कष्ट का सामना करना पड़ता है यथा शिर पीड़ा, अंगमर्द (अंगों का टूटना) आदि व्याधियां प्रतिश्याय के रुकने से ही उत्पन्न होती हैं। प्रतिश्यायावरोध को खोलने के लिये और श्लेष्मा को नासिका मार्ग से बहाने के लिए निम्नलिखित नस्य अक्सीर के समान गुणकारी और सैकड़ों औषधालयों में प्रतिदिन व्यवहृत होने वाली महौषधि है।

(१) अद्‌भुत नस्य

बासमति सुगन्धित चावल इच्छानुसार लेकर उन्हें किसी चीनी अथवा कांच के पात्र में डालकर उनके ऊपर आक का दूध इतना डालें कि वह अच्छी तरह भीग जायें। फिर उस बर्तन को धूल मिट्टी तथा बालकों के हाथ आदि लगाने से बचाकर किसी सुरक्षित स्थान में रखदें। जब सम्पूर्ण आक का दूध जज्ब होकर सूख जाये तब पुनः अर्क दुग्ध से परिपूर्ण कर दें। इसी प्रकार पूर्ववत तीन बार तर व खुष्क करें। तीसरी बार अच्छी तरह सूख जाने के पश्चात् किसी खरल में सुरमे की भांति सूक्ष्म पीसकर शीशी में भरकर सुरक्षित स्थान में रखें। नस्य तैयार है।

प्रयोग विधि—रोगी को दो चावल की मात्रा में यह नस्य सुंघावें और थोड़ी देर प्रतीक्षा करें। कुछ ही क्षणों बाद छींकें आनी आरम्भ हो जायेंगी और मस्तिष्क से गन्दा पानी निकलकर शिर हल्का हो जायेगा।

अदभुत नस्य नं० २

जो कि शिर [illegible] पीनस की चमत्कारी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दवा है। जंगली उपलों की राख इच्छानुसार लेकर उसको आक के दूध से तर करें। जब खुष्क हो जावे तब इसी प्रकार पुन: तर करें एवंमेव तीन बार तर और खुष्क करें और फिर खरल में वारीक पीसकर शीशियों में भरलें। आवश्यकता के समय थोड़ी सी नस्य चुटकी में देकर सुंघा दें। रुके हुए प्रतिश्याय, सिर दर्द और पीड़ा को तत्कालिन दूर कर देने वाली अपूर्व नस्य है।

नस्य नं० ३

यह नस्य यूनानी हकीमों का आश्चर्यजनक आविष्कार है, जो कि मस्तिष्क पीड़ा, सूर्यावर्त, प्रतिश्याय, पीनस, दन्त पीड़ा आदि को लाभकारी होने के अतिरिक्त मोतियाविन्द के आरम्भ में अत्यन्त लाभदायक है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक शिर सम्बन्धी रोगों के लिए यह नस्य किसी से कम नहीं हैं।

प्रयोग–पुरानी पक्की ईंट लेकर उसे पीसकर गेरू बना लें और इस गेरू को आक के दूध में तर कर दें। खुष्क हो जाने पर तोल कर प्रति १२ ग्राम ७ लवंग वारीक पीसकर मिलादें और शीशी आदि में भरकर सुरक्षित रखें इसमें से थोड़ी सी नस्य लेकर रोगी को सुंघाया करें। उपरोक्त रोगों में अति गुणकारी है।

सूर्यावर्त, कनपटी पीड़ा, दन्त पीड़ा, मोतियाबिन्दु को लाभदायक है।

अर्धावभेदक

अर्धावभेदक (आधा सीसी) बहुत ही भयंकर व्याधि है। विशेषकर अनंतवात जो इसी का भेद है, उसकी तो इतनी असह्य पीड़ा होती है कि रोगी को किसी पहलू चैन नहीं पड़ता, क्योंकि यह एक मृत्यु का चिन्ह है। इससे कई बार तो आंखें फूट जाया करती हैं या न्युनातिन्युन दृष्टि मांद्य तो अवश्य हो जाता है। इस रोग की निवृत्ति के लिए नीचे कई एक अनुभूत सिद्ध तथा चमत्कारी प्रयोग लिखे जाते हैं, जिनको बनाकर लाभ उठावें। परन्तु अर्धावभेदक (इसीका एक भेद सूर्यावर्त भी है) अनन्तवात आदि रुक्षता के कारण उत्पन्न हुआ करते हैं इसलिए साथ साथ मस्तिष्क को बल प्रदान करने वाली औषधियों का भी सेवन करते रहना उचित है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्धावभेदक तथा अनन्तवात नाशक

४—अद्वितीय नस्य

यद्यपि इससे पूर्व भी ३ नस्यों के प्रयोग लिखे जा चुके हैं, वह भी अर्धावभेदक और अनन्तवात के लिए लाभदायक है, परन्तु उनमें आक का दूध अपक्व (कच्चा) डाला जाता है इसलिए कई रोगी इसे पसन्द नहीं करते और कइयों के प्रकृति विरुद्ध भी होता है। क्योंकि इसकी गन्ध अप्रिय सी होती है, जिससे कोमल प्रकृति वाले इसका प्रयोग नहीं कर सकते। इसी लिए नीचे एक ऐसा प्रयोग लिखा जाता है जो सर्वथा निर्दोष है और शिर पीड़ा, आधासीसी, प्रतिश्याय और पीनस आदि के लिए लाभदायक है।

प्रयोग—ऊंट की मींगनी को आक के दुग्ध में खूब भिगोकर छाया में सुखा लें। जब भली भांति खुश्क हो जाय तब इसको अर्थात ऊंट की मींगनी को जलाकर राख बना लें और बारीक पीसकर शीशी में रखें। इसकी भस्म बनाने से अर्क दुग्ध की दुर्गन्धि बिल्कुल नष्ट हो जाती है। गुण वही बना रहता है। आवश्यकता के समय रोगी को सुंघा दें। तत्क्षण ही लाभ प्रतीत होगा। यदि अत्यन्त कोमल प्रकृति का रोगी हो तो उसे निम्नलिखित प्रयोग बनाकर दें, क्योंकि यह अति लाभदायक होने के अतिरिक्त सुगन्धित भी है।

अनन्तवात के लिए

५—सुगन्धित नस्य

यह प्रयोग अर्श रोग के प्रसिद्ध चिकित्सक स्व० मौलवीइलाही बख्श साहिब का सैंकड़ों बार का परीक्षित अनुभूत प्रयोग है, जो कि इससे पूर्व हमारी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणि" में प्रकाशित हो चुका है। यह प्रयोग अनन्तवात (उल्ल) के अतिरिक्त, पीनस, प्रतिश्याय और साधारण सिर पीड़ा के लिए भी हितकारी है। यह नस्य हर समय प्रस्तुत रहनी चाहिए।

प्रयोग—आक की जड़ की छाल उतारकर छाया में सुखा लें और फिर १२ ग्राम बारीक पीसकर, बीज छोटी इलायची ७ और कपूर चार रत्ती मिलाकर पीसें और कपड़छान कर शीशी में रख छोड़ें।

प्रयोग विधि—आवश्यकता के समय रोगी को इसमें से एक चुटकी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नस्य लेकर सुंघा दें। मस्तिष्क से व्यर्स श्लेष्मा निकलकर तत्क्षण आराम हो जायगा, चूंकि यह नस्य सुगन्धित है, इसलिए प्रत्येक कोमल प्रकृति वाले मनुष्य को भी दी जा सकती है। इसे बनाकर अवश्य लाभ उठावें।

सूचना–कपूर के स्थान में पीपरमेंट भी मिश्रित किया जा सकता है, परन्तु कपूर ही उत्तम है।

६–अनन्तवात (उल्ल) का विशेष प्रयोग

आक के पके हुए पीले रंग के पत्तों को लेकर साफ करें और गौ घृत से चुपड़कर कोयलों की आग पर गरम करके हाथों से मसल कर उनका स्वरस निकाल लें। उसको शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय रोगी को चित्त (सीधा) लिटाकर उसका सिर नीचा करें और नासिका के दोनों छिद्रों में दो-दो बूंद उपरोक्त रस टपका दें। उसी समय छींकें आनी प्रारम्भ होंगी और नाक द्वारा बहुत सा पानी निकलकर पीड़ा शांत हो जायेगी।

अर्धाङ्ग तथा अर्दित

अर्धाङ्ग (फालज) तथा अर्दित (लकवा) अत्यन्त ही दुष्ट एवं भयंकर रोग है। इनसे परमात्मा ही बचाये। अर्धाङ्ग से शरीर का आधा भाग निर्बल वरंच मुरदे के सदृश्य हो जाता है और अर्दित से मुख एक ओर को मुड़ जाता है। दोनों रोग स्नायविक है और स्नायु सम्पूर्ण मस्तिष्क का समाचार सूचक है। अतः इनको भी मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों में ही गिना जाता है। स्नायु सम्बन्धी कई रोगों में आक अद्भुत गुणकारी है। अर्दित रोगों के लिए आक द्वारा निर्माण होने वाले विशेष प्रयोग नीचे लिखे जाते हैं।

७-अर्धांग तथा अर्दित के लिये तेल नं० १

तिलों के तेल को लोहे की कढाई में डालकर अग्नि पर रखें और उस में आक के पत्ते डालकर पकावें। जब पत्ते जल जावें तब तेल को छानकर रखें और उसकी मालिश किया करें। अर्धाङ्ग अर्दित और सुन्न हो जाना आदि के लिये लाभकारी है।

८-तेल नं० २

आधा मीटर खद्दर का कपड़ा लेकर उसको आक के दूध में भिगोकर सुखालें। इसी प्रकार २१ बार भीगा सूखा करें। फिर कैंची से बारीक-बारीक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कतर कर पाताल यन्त्र से तेल निकाल कर शीशी में सुरक्षित रखें।

प्रयोग विधि—इस तेल को मालिश करायें और हवा (वायु) से बचाव रखें। अर्धाङ्ग तथा अर्दित के लिये अतीव लाभकारी तेल है।

९-अर्धांग तथा अर्दित की औषधि

आक के दूध को चीनी अथवा कांच के वर्तन में डालकर उसके सम-भाग कुक्कुट (मुर्ग) का रक्त उसमें मिलादें और उसकी मालिश किया करें। अर्धांग, अर्दित और सुन्न बहरी की विशेष अनुभूत औषधि है।

१०-अर्धांग की फकीरी चिकित्सा

इस व्याधि के लिये यहां एक पूर्ण चिकित्सा विधि का वर्णन किया जाता है, जिससे अर्धांग तथा आमवात (गठिया) रोगी का, जो हिल जुल न सकता हो वह भी चलने फिरने लगता हैं।

विधि—जमीन में एक इतना चौड़ा तथा गहरा गढा खुदबायें जिसमें एक आदमी सरलता पूर्वक बैठकर छिप जाय। पुन: उस में उपले भरकर जलादें ताकि उसकी अग्नि के ताप से उसकी दीवारें लाल सुर्ख हो जावें। ऐसा होने पर उस गडे में से अग्नि और राख इत्यादि सब सावधानी से निकलवा दें और उसमें बहुत सारे आक के ताजे पत्ते डाल दें। जब उसमें से वाष्प (भाप) निकलना आरम्भ हो जाय और उसकी उष्मा सहने योग्य प्रतीत हो, तब उसमें रोगी को ऊन का कम्बल उढ़ाकर बिठा दें। परन्तु याद रखें कि रोगी का मुंह खुला रहना चाहिये, क्योंकि रोगी के मुंह को यह वाष्प नहीं लगनी चाहिये। यह क्रिया किसी ऐसे स्थान (मकान आदि) में करना उचित है, जहां वायु का प्रवेश न हो सकता हो। जब रोगी पसीने से अच्छी प्रकार भीग जाय तब रोगी को वस्त्र लपेट कर धीरे-धीरे गढे से निकाल लें और दूसरे दिन रोगी को एरंड के बीज छ: ग्राम बादाम रोगन में भूनकर शहद में मिलाकर चटायें। इनसे उसको वमन तथा विरेचन होंगे। तीसरे दिन पुन: उसी प्रकार उस गढे को गर्म कर आक के पत्ते डालकर रोगी को बैठाकर वाष्प स्नान करावें। इस प्रकार तीन बार ऐसा करने से कठिन से कठिन व्याधि से पीड़ित रोगी भी स्वस्थ हो जाता है। दूसरी यह बात है कि इस क्रिया से शरीर पर छोटी-२ अरूपिकायें (फुन्सियां) निकल आया करती हैं जो स्वयं ही शांत हो जाया करती हैं और इससे प्राय: ज्वर भी हो जाया करता है, परन्तु घबराने की कोई बात नहीं। क्योंकि यह ज्वर स्वयंमेव ही

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उतर जाया करता है। यह एक सन्यासी द्वारा परीक्षित प्रयोग है, जो गठिया आदि रोगों का अपूर्व तथा अचूक इलाज है।

अपस्मार (मृगी)

अपस्मार एक अत्यन्त ही भयानक व्याधि है। जब इसका आक्रमण होता है तो रोगी को कोई सुधबुध नहीं रहती, कई बार दौरे के अन्दर ही मल-मूत्र तथा वीर्य भी निकल जाता है। अपस्मार का जब दौरा (Fi.) आवे तो रोगी को शीघ्र चेतन कराने वाली औषध का प्रयोग करें।

११—अपस्मार का दौरा रोकने की विधि

आक की जड़ की छाल को बकरी के दूध में पीसकर अपस्मार के दौरे में रोगी की नासिका के छिद्रों में दो दो बूंदें डालदें। तत्क्षण चेतनता हो जायेगी।

१२—अपस्मार की चिकित्सा

जब एक घन्टा दिवस शेष रहे तब रोगी की पगथलियों को आक के दूध से भली भांति तर करके उन पर कालीमिर्च बारीक पिसी हुई छिड़क दें और पैरों के नीचे ऊपर आक के पत्ते लपेटकर जुर्राबें पहना दें। इसी प्रकार निरन्तर ४० दिन तक करते रहें, किन्तु पैरों को पानी से नहीं धोना चाहिए। इस क्रिया से अपस्मार के रोगी को परमात्मा की कृपा से पूर्णतया आराम हो जाता है।

१३—लाभदायक नस्य

एक आक का कीड़ा (टिड्डा) लेकर उसे शीशी में बन्द कर दें। जब वह शीशी के भीतर सूख जावे तब उसे निकालकर उनके समान भाग काली मिर्च सम्मिलित करके खूब बारीक पीसलें। अपस्मार के दौरे को रोकने के लिए अत्युत्तम नस्य है और इससे धीरे धीरे रोग भी मिट जाता है।

नेत्र रोग

नेत्र रोगों में आक का कुछ कम ही प्रयोग किया जाता है। इसका कारण यह है कि आक कुछ तीक्ष्ण प्रभाव वाला होता है। तथापि कई एक ऐसे प्रयोग उपस्थित किये जाते हैं, जो सर्वथा लाभदायक हैं। आवश्यकता होने पर परीक्षा करके लाभ उठावें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१४—नेत्राभिष्यन्द (आंखें आना)

दुखती हुई आंखों में आक का दूध बहुत ही लाभकारी वस्तु है। आप चकित न हों, मेरा तात्पर्य नेत्रों में आंजने से नहीं है। वरंच निम्न विधि से प्रयोग किया जाता है, तथा नेत्राभिष्यंदी (दुखती हुई आंखों के रोगी) को उचित है कि रात को शयन करते समय आक का दूध अपने हाथ और पाँवो के बीसों नाखूनों पर थोड़ा २ लगा कर सो जायें, आशा है कि प्रातःकाल होते २ पूर्ण लाभ प्रतीत होगा। कदाचित कुछ पीड़ा अवशेष रह जावे तो दूसरी रात इसी प्रकार पुनः करें। परमात्मा की कृपा से अवश्य आराम होगा। परन्तु यह सावधानी आवश्यकीय है कि नखों पर से आक का दूध कहीं आंख वा मुंह पर न लगने पावे।

१५—एक अदभुत घटना

हमारे यहां का एक किसान कहीं यात्रा में जा रहा था। जिसकी आंखों में पीड़ा थी। मार्ग में चलने से पैरों की आहट आदि से पीड़ा में वृद्धि हो जाया करती है। इसलिए पीड़ा के मारे चलने से विवश हो गया और अत्यन्त ही कष्ट का सामना करना पड़ा। वन में न तो कोई सहायक ही था न ही कोई आराम होने की सूरत हो सकती थी। अन्त में विवश होकर एक आक का डूसा तोड़ लिया (जिसमें आक का दूध टपक रहा था) और शीघ्र ही आंखों में डाल लिया। आक के दूध का आंखों में पड़ना था कि ऐसी कठिन पीड़ा आरम्भ हो गई कि परमात्मा ही रक्षक था। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो आंख का ढेला निकलकर बाहिर गिर पड़ेगा। कई मिनट तक यही दशा रही। पुनः धीरे धीरे पीड़ा शान्त होने लगी और अन्त को नितांत ही शान्त हो गई। अब इस घटना को हुए अनेकों वर्ष व्यतीत हो गए किन्तु उस दिन के पश्चात उस मनुष्य की आंखों में कभी कोई तकलीफ नहीं हुई।

यद्यपि इस घटना से अर्क दुग्ध का अत्यन्त लाभदायक बल्कि अकसीर होना सिद्ध होता है तथापि हम अपने प्यारे पाठकों को इस भयावह प्रयोग की आज्ञा कदापि नहीं दे सकते।

१६—अकसीर काजल

यह काजल नेत्र कण्डू, बाह्मनी को आश्चर्यजनक लाभकारी है। रूई की बत्ती को आक के दूध में भिगोकर सुखा लें और दीपक में तिलों का तेल डालकर उसमें इस बत्ती को रखकर नियमानुसार काजल बनालें और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किसी शीशी में सुरक्षित रखें।

प्रयोग विधि—रात्रि को शयन करते समय दो दो सलाई आंखों में डाल दिया करें। नेत्र कण्डू तथा बाह्मनी पलक के लिये अत्यन्त लाभदायक काजल है।

१७—आंख के फूले की अद्भुत औषधि

प्रयोग—पुरानी रूई को तीन बार आक के दूध में भिगो २ कर सुखालें, पुनः गौ घृत में तर करके एक बड़ी सीपी में रखकर भस्म बना लें। किन्तु ध्यान रखें कि जलकर भस्म काली रहे। (जलकर श्वेत वर्ण न हो जाय) इस भस्म को पीसकर शीशी में डाल कर रखें।

प्रयोग विधि—रात्रि के समय इस भस्म की एक एक सलाई आंखों में डाला करें। इससे फूला तथा जाला तो तीन दिन में ही दूर हो जायगा।

१८—अक्सीर नेत्र

प्रयोग—आक के सम्पूर्ण अ गों (फूल, फल, पत्ते, टहनी, जड़) को लेकर सुखालें और जलाकर इसकी राख बना लें। इस राख को किसी मिट्टी के खुले वर्तन में आठ गुणा पानी डालकर भिगो दें और दिन में कम से कम तीन बार किसी लकड़ी आदि से हिला दिया करें। चार दिन के पश्चात् ऊपर से पानी निथार कर उतार लें और शेष द्रव्य को फैंक दें। पुनः इस निथरे हुए पानी को किसी वर्तन (कढाई) में डालकर पकावें। पकाते २ जब सब पानी जल जायेगा तब नीचे श्वेत क्षार शेष रह जायगा। बस यही नेत्र अकसीर है।

प्रयोग विधि—इसको बारीक पीसकर रखें, इसमें से एक २ सलाई आंखों में लगाया करें। फूला, जाला और नेत्रों की सफेदी के लिए अतीव हितकर है। इसके अतिरिक्त इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं। भोजन पाने, खांसी, दमा तथा विच्छू काटे की अनुभूत औषधि है। इसकी सेवन पतथा प्रयोग विधि यथास्थान वर्णन की जायगी।

१९—नेत्रकण्डू हर लेप

प्रयोग—आक की जड़ की छाल को जलाकर इसकी राख बनाकर पानी से आंख के चारों ओर लेप कर दें, इससे लाली, कण्डू और पलकों का मोटापा दूर हो जायगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दन्त रोग

यद्यपि दांतों की बीमारियां तो असंख्य हैं, परन्तु जिन रोगों में आक हितकर तथा अत्यन्त ही लाभकारी सिद्ध हो चुका है, वे ही प्रयोग लिखे जाते हैं।

दन्त पीड़ा

बहुत से मनुष्यों के दांतों में पीड़ा रहा करती है, खासकर ठण्ड के समय और ठण्डा पानी पीने के समय तो बस प्राण ही निकलने को हो जाते हैं। इस रोग का रोगी वेचारा ठण्डे पानी जैसी नियामत से वंचित हो जाता है। इस रोग के लिये निम्नलिखित औषधि का प्रयोग करें।

२०—अक्सीर दन्त पीड़ा

प्रयोग—सैंधा नमक को मिट्टी के सराव (कूजे) के अन्दर भरकर उसमें इतना आक का दूध डाल दें कि नमक के ऊपर तक आ जावे। पुनः उस सराव का मुंह बन्द करके ५ किलो कन्डों की (गढ़े के अन्दर) आग दें। ठण्डा होने पर निकाल लें और पीसकर सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—आवश्यकता के समय इसमें से थोड़ा सा नमक लेकर दान्तों पर मलें।

लाभ—परमात्मा की कृपा से एक ही मिनट में पीड़ा दूर हो जायगी।

सूचना—पटियाला स्टेट के अन्तर्गत आदम के निवासी चौ० मौहम्मद यूसफ दर्जी का कथन है, "हमने उपरोक्त शुद्ध नमक के अन्दर थोड़ा सा तेजाब मिलाकर शीशी में रख दिया और इसको रूई की फरेरी द्वारा लगा कर दन्त रोगों के अनेक रोगियों पर अनुभव किया तो आशा से अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुआ। विशेषता यह कि कभी असफल नहीं हुआ।

कर्ण पीड़ा

कर्ण पीड़ा मस्तिष्क के समीप होने के हेतु अत्यन्त ही भयावह होती है। इससे रोगी बहुत ही व्याकुल होकर किसी क्षण भी शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता। कर्ण पीड़ा दूर करने के लिये निम्न प्रयोग अत्यन्त ही अद्भुत तथा नितान्त सरल है।

२१—कर्ण रोग

प्रयोग—आक के पीले पत्ते लेकर तथा उनको धूल आदि से साफ

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करके घी से चुपड़कर आग पर गर्म करें, जब उष्णता के कारण सिकुडने लगें तब उनको हथेली से मलकर कान में निचोड दें। इससे कर्ण पीडा शीघ्र ही शान्त हो जाती है।

२२—कर्ण पीड़ा तथा कर्ण कीट

कई मनुष्यों के कानों में कृमी पड जाया करते हैं, जिससे रोगी को इतना असह्य कष्ट होता है कि ईश्वर ही रक्षा करे, इसके लिये निम्न प्रयोग लाभकारी है।

प्रयोग—आक के पीले तथा निश्छिद्र पत्ते धूल आदि से निर्मुक्त करके उनको घी और हींग से चुपडकर गरम करें। गरम हो जाने के पश्चात् कान में उनका पानी निचोडकर डाल दें। परमात्मा की कृपा से कान की पीडा तो तुरन्त ही शान्त होगी और कई वार के प्रयोग से कृमी भी मर जायेंगे।

गण्ड माला (SCROFULA)

इसको अंग्रेजी में Scrofula, उर्दू में खनाजीर और हिन्दी में कण्ठमाला, गलगण्ड और अपचि कहते हैं। यह एक अत्यन्त कठिन और दुष्ट व्याधि है, जो प्रायः असाध्य रोगों में गिनी जाती है। इस रोग का दुष्फल प्रायः उरक्षत (सिल्ल) तथा राजयक्ष्मा (टी० बी०) होता है। अतः इसकी चिकित्सा में विलम्ब तथा आलस्य नहीं करना चाहिए। नीचे इस रोग के लिये एक विशेष प्रयोग का उल्लेख किया जाता है जो कि इस रोग के लिए विश्वसनीय है। जो सज्जन परिश्रम से बनायेंगे वे अवश्य सफल मनोरथ होंगे।

२३—गंडमाला की लाभकारी सोमल भस्म

सोमल (सखिया) १२ ग्राम को पूरे २१ दिन तक आक के दूध में खरल करें, पुनः इसकी टिकिया बनाकर सुखालें और इसको एक मिट्टी के सराब (कूजे) में १२ ग्राम लाल फिटकडी बारीक पीसकर उसके चूर्ण के मध्य में रखकर कूजे को भलीभांति कपडमिट्टी करके ८ किलो जंगली उपलों की आग दें। ठण्डा होने पर निकाल कर फिटकडी सहित बारीक पीसकर रखें।

सेवन विधि—इसमें से २ चावल से ४ चावल तक लेकर सिरस के बीजों के माजून के साथ या मक्खन में रखकर कुछ समय तक सेवन कराते रहें। गण्डमाला की विशेष लाभकारी औषधि है।

सूचना—माजून तुख्म सिरस (सिरस के बीजों का माजून) का प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणि" प्रथम भाग में लिखा जा चुका है, जो कि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गण्डमाला की बहुत ही लाभकारी औषधि है। जो सज्जन देखना चाहें वे अनुभूत योग चिन्तामणि नामक पुस्तक प्रथम भाग देखकर लाभान्वित हो सकते हैं।

छाती और फुफ्फुस के रोग

छाती तथा फुफ्फुस की व्याधियों में आक से बहुत लाभ प्राप्त किया जा सकता है। क्योंकि कास (खांसी) और श्वास के लिये तो आक एक अद्वितीय और अनुपम वस्तु है जिससे सहस्रों वैद्य तथा हकीम पूरा-पूरा लाभ उठा रहे हैं। नीचे छाती के रोगों की निवृत्ति के लिए कई एक विशेष और चुने हुए प्रयोगों का उल्लेख किया जाता है। यदि इन प्रयोगों को अनुभूत अकसीर प्रयोगों का कोष कहा जाय तो किंचित भी अनुचित न होगा। आप ही न्यायपूर्वक बतलाइये कि केवल तीन रुपये की मामूली रकम में रसायन फार्मेसी के संचालकों ने आपको जो कुछ दिया है वह इस मूल्य में मंहगा है या सस्ता।

२४–खांसी की सरल औषधि

खांसी की नितान्त सरल और सस्ती औषधि निर्माण करके अपने घर में रखिये और खांसी के रोगियों में मुफ्त वितरण कीजिये। यह प्रयोग श्रीमान मौलवी हकीम निजामुद्दीन साहिब नागपुरी सदैव निर्माण करके तैयार रखते हैं। आप भी बनाकर लाभ उठायें।

प्रयोग--एक मिट्टी की हांडी लेकर उसमें आक के पत्तों की तह बिछा दें और एक किलो सेन्धा नमक की छोटी-छोटी डलियां बना कर इन आक के पत्तों पर रख दें। पुनः उसी प्रकार से आक के पत्तों की तह बिछा कर उन पर नमक की डलियां डाल दें। इसी प्रकार आक के पत्ते और नमक की डलियां बिछाते रहें। जब सम्पूर्ण नमक उसमें भर जाय तब आक के पत्ते ऊपर बिछा दें और हांडी के मुख पर मुद्रा देकर सुखालें। तत्पश्चात् एक गढे में ४० किलो उपलों की आग दें। शीतल होने पर निकाल लें और नमक को पीसकर रख छोडें।

सेवन विधि---इस पिसे हुए नमक में से एक दो चुटकी दिन भर में दो तीन बार चटा दिया करें। खांसी के लिये आश्चर्यजनक प्रभावशाली है।

२५-खांसी की काली दवा

प्रयोग—आक की छाल आवश्यकतानुसार लेकर एक मिट्टी के सराव (कूजे) में डालकर थोडी सी अग्नि में जलालें और शीतल होने पर निकाल

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लें और पीसकर रखें। अग्नि उतनी ही देनी चाहिए, जिससे कोयला ही हो—जलकर भस्म न हो जाय।

सेवन विधि—इसमें से एक ग्राम दवा लेकर शहद में मिलाकर दोनों समय चटा दिया करें। खांसी की उत्तम औषधि है।

२६-सरल गुटी

प्रयोग—अर्क पुष्प केसर, जिसको आक का लौंग भी कहते हैं (जो मधानी के आकार का होता है) लेकर उसके समान भाग छोटी पीपल और काला नमक मिलाकर बारीक पीसकर काली मिर्च के बराबर गोलियां बनालें और छाया में सुखाकर शीशी में डालकर रखें।

सेवन विधि—दो गोली से चार गोली तक गौ दुग्ध के साथ दें और छोटे बच्चों को एक या अधिक दिया करें। खांसी को प्रायः पहिले ही दिन बन्द कर देती है।

२७-खांसी की अचूक औषधि

आक के पुराने पेड की जड निकाल कर उसको मिट्टी आदि से साफ करके अग्नि में जलाकर कोयला बनालें और कोयलों को बारीक पीसकर किसी बोतल में बन्द करके एक मिट्टी के ढेर में दबादें और उस स्थान को प्रातः सायं पानी से भिगो दिया करें। इसी प्रकार छः मास तक करते रहें। तद्पश्चात उसे निकालकर काम में लावें। यह अद्‌भुत औषधि है।

सेवन विधि—इसमें से दो चावल औषधि लेकर पान में रखकर खिला दिया करें। इससे सब प्रकार की खांसी चाहे कितनी ही पुरानी क्यों न हो, परमात्मा की कृपा से निर्मूल हो जाती है।

रूक्ष कास वाले रोगी को दवा मलाई में मिलाकर सेवन कराना उचित है।

२८—कास की अक्सीर दवा

प्रयोग—छोटी कटेली के फूल जो बैंगनी रंग के होते हैं, लेकर छाया में सुखा लें और उन्हें तीन बार आक के दुग्ध में भिगोकर सुखा लें। फिर पीसकर शीशी में रखें।

सेवन विधि—इसमें से चावल भर मात्रा पान में रखकर खिला दिया करें। खांसी के लिए अत्यन्त लाभदायक औषधि है और तत्क्षण चमत्कार दिखाती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२९–अकसीर खांसी नं० ६

प्रयोग––६० ग्राम अजवायन को एक सराव में डालकर उसमें २५० ग्राम आक का दूध भरकर कपरोटी करके सुखा लें। तत्पश्चात ३० किलो उपलों की आंच में जला दें और शीतल होने पर निकालकर पीसलें। दवा तैयार है।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती तक शहद में मिलाकर चटा दिया करें। इससे कफज कास (खांसी) निश्चय ही दूर हो जाती है।

श्वास रोग अर्थात दमा

यह एक अत्यन्त कष्टप्रद रोग है, जिसका कष्ट विशेषकर दौरे के समय आसन्न मृत्यु की सी दशा उत्पन्न कर देता है। रोगी कभी खड़ा होता है और कभी आगे को झुककर अपने प्राण कष्ट से छुड़ाना चाहता है, परन्तु श्वास आसानी से नहीं आता। ईश्वर यह रोग शत्रु को भी न लगाये। इस रोग के विषय में प्रसिद्ध है कि दमा दम के साथ जाता है। परन्तु इस किम्वदन्ती को यथार्थ प्रकट करना उचित नहीं, क्योंकि न्यायकारी प्रभु ने प्रत्येक रोग की औषधि उत्पन्न की है तथा चिकित्सक भी। हां इसके कष्ट-साध्य होने में कुछ सन्देह नहीं। यदि आप इस रोग पर अन्य लोगों के हृदय के गुप्त योग पूर्ण विवरण सहित तथा सन्यासियों के अनुभूत योग देखने की इच्छा रखते हैं तो मेरी बनाई हुई दूसरी पुस्तक "अनुभूत योग प्रकाश" का अवलोकन करें। इसमें आपको ऐसे गुप्त भेदों का प्रकट होना दृष्टिगोचर होगा, जो आज तक कृपणता की तिलस्म के कठिन कारागार में बन्द थे। अब नीचे कई एक विशेषातिविशेष चुने हुए प्रयोग प्रकट किये जाते हैं जो कि हमारे शुभ क्षुप आक के द्वारा बनते हैं। क्योंकि यह एक सर्वसम्मत बात है कि आक श्वास रोग के लिए सर्वोत्कृष्ट रसायन है। जिससे सहस्रों प्रसिद्ध हकीम तथा सन्यासी अपनी-अपनी विधियों से उपयोग करके प्राय: ही सफल मनोर्थ होते हैं।

निम्नलिखित प्रयोगों को हमने बड़े परिश्रम और प्रयत्न से संग्रह करके आपकी भेंट किया है। जिसमें से कई तो खास खास प्रसिद्ध-हकीमों के प्रदानित योग हैं और इनमें कई प्रयोग तो ऐसे हैं जिनको लोग अत्यन्त गुप्त रखकर आजीविका का साधन बनाये हुए हैं। शेष सहस्रों रुपये की पुस्तकों का सार है, सारांश गुणग्राही सज्जनों के लिए यह एक प्रकरण ही अनुपम भण्डार है। आशा है कि विद्वान लोग देश काल का ध्यान रखते हुए इनका अनुभव कर लाभ उठायेंगे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्वास (ASTHMA) की चिकित्सा विधि

पहले यह देखना आवश्यक है कि रोगी को रूक्ष श्वास अर्थात वाताधिक (खुश्क) है या कफज (बलगमी) है। यदि श्वास के रोगी को खांसी में कफ अधिक आता है तो प्रथम उसके फुफ्फुस शुद्ध कर लेना उचित है। क्योंकि वमन द्वारा जब फुफ्फुस शुद्ध हो जाते हैं तब न्युनातिन्यून पांच-छः मास तक तो रोगी को आराम हो जाता है। यदि वमन करने के पश्चात कोई उचित औषधि भी सेवन कराई जाय तो पूर्ण आशा है कि रोग निवृत हो जायेगा। अतः प्रथम नीचे वमन का ही सर्वोत्तम प्रयोग लिखा जाता है। तद्पश्चात शेष अनुभूत प्रयोग लिखे जायेंगे।

३०—वमन कारक औषधि

वमन कराने के लिए उचित समय आश्विन, कार्तिक और चैत मास हैं। इसलिए आवश्यकता के बिना और समय वमन कराना उचित नहीं है। वमन कराने से २ या ३ दिन पूर्व लघु भोजन सेवन करावें, जिससे वमन होने से किसी प्रकार का कष्ट न हो। अब वमन कराने का प्रयोग लिखा जाता है।

प्रयोग—आक की जड़ की छाल लेकर छांया में सुखा लें और सूख जाने पर बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय १५ रत्ती से ३० रत्ती तक दवा गर्म पानी के साथ सेवन करायें, इससे अच्छी प्रकार वमन होगी। तद्पश्चात गर्म पानी पिलावें ताकि फिर खुलकर वमन हो जावे।

सूचना—वमन कराने का अत्यन्त सरल निर्दोष प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणि" में उल्लेख कर दिया गया है। यदि इच्छा हो तो मंगाकर देख लें। मूल्य ८-५० रुपये मात्र डाक खर्च ३-५० रुपये।

कफज श्वास के लिए अत्यन्त लाभदायक

३१—श्वांस नाशक गुटी

प्रयोग—आक के पके हुए पीत वर्ण के ६ पत्ते लेकर उनको खरल में डालकर पीसें और उनमें १२ ग्राम असली यवक्षार मिलाकर एक २ रत्ती की गोलियां बनालें, फिर छाया में सुखाकर रखें।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक २ गोली गर्म पानी से दिया करें।

यदि गर्मी प्रतीत हो तो रात को ३ ग्राम गुल बनफशा पानी में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भिगोकर उसके स्वरस से प्रातःकाल एक गोली ले लें। दूसरे दिन से उसी प्रकार गर्म पानी से लेना आरम्भ कर दें। यह गोलियां कफ को सुगमता से निकालती हैं और इनके सेवन से श्वास, (दमा) नष्ट हो जाता है।

३२-श्वास के लिये अक्सीर नस्य

आक के पके हुए पीत वर्ण पत्ते जो स्वयंमेव ही गिर पड़े हों, लेकर उनपर चूना तथा नमक प्रत्येक ५५-५५ ग्राम पीसकर (पत्तों के ऊपर) लगादें और इसी प्रकार पत्ते ऊपर नीचे बिछा दें। फिर उनको मिट्टी के कूजे में डालकर कपड़ मिट्टी करके सुखालें और गजपुट में भस्म कर लें। भस्म हो जाने पर उसे निकालकर बारीक पीसकर शीशी में रखें। यह औषधि श्वास के लिए आश्चर्यजनक वस्तु हैं। जिसको स्वर्गीय हकीम डाक्टर गुलाम जीलानी साहिब ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'मखजन हिक्मत' (घर का डाक्टर व हकीम) में कथन किया है।

सेवन विधि—रात्रि के समय इसमें से २ रत्ती औषधि पान में रखकर खिला दिया करें। खटाई तथा तेल की चीजों से परहेज रखवायें। यह भस्म श्वांस तथा कफ की खांसी के लिए अत्यन्त ही लाभदायक है।

३३-अक्सीर श्वास नं० ३

श्वास के लिए यह एक अपूर्व वस्तु है। यह प्रयोग एक वयोवृद्ध संन्यासी प्रदत्त भेंट है, जो श्वास रोग के लिये अत्यन्त लाभदायक एवं उच्च प्रभावजनक औषधि है। यह उन अनुभूत प्रयोगों में से एक है जिसका कि हमने भलीभांति अनुभव किया है। परमात्मा की कृपा से अत्यन्त ही लाभकारी सिद्ध हुआ है। इसको १५ दिन सेवन करने से सर्व प्रकार का श्वास प्रायः दूर हो जाता हैं। परन्तु प्रथम वमन द्वारा फुफ्फुस(फेफड़े)तथा वायु की नलियों को साफ कर लेना उचित है। पुनः इस प्रयोग को सेवन किया जाय तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है। वमन कारक प्रयोग इससे पूर्व कथन किया जा चुका है, उसे देखलें। एक बडा साबत नारियल लेकर उसके ऊपर का कठिन छिलका धीरे-धीरे उतार डालें और भीतर से खोपरा निकाल लें, फिर इसमें एक छिद्र करदें, परन्तु जो टुकडा खोपरे का निकालें उसको व्यर्थ न जाने दें। पुनः उसको उलटा करके देखलें। यदि पानी आदि भरा हो तो निकाल दें। तत्पश्चात इसको अर्क दुग्ध (आक के दूध) से पूरित करदें और ऊपर वही टुकडा देकर (जो छिद्र से निकाला था) एक सप्ताह पडा रहने दें। फिर जितना खाली हो उतना ही अर्क दुग्ध फिर डालदें। इसी प्रकार तीन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बार करें और पुनः इतने दिन तक पड़ा रहने दें कि सम्पूर्ण दूध सूख जावे। फिर इसको एक मिट्टी के सराव में बन्द करके ऊपर कपड़मिट्टी करके वायु से बचाकर बीस किलो उपलों की अग्नि गढे के अन्दर दें और शीतल होने पर सराव में से जो कुछ प्राप्त हो उसे निकालकर बारीक पीसकर रखें। बस यही अक्सीर श्वाश है।

सेवन विधि--कफ जन्य श्वास वाले को १ रत्ती बताशे में और रुक्ष श्वास वाले को मक्खन में खिलावें। कफ जन्य तथा रुक्ष श्वास दोनों के लिए अपूर्व महौषधि है।

३४—अक्सीर श्वास तथा शुद्ध सौंफ

प्रयोग---एक मिट्टी अथवा चीनी के बर्तन में साठ ग्राम सौंफ रखकर उसमें आक का दूध इतना डालें कि जिससे सौंफ भली प्रकार भीग जावे, फिर छाया में रखकर सुखा लें। इसी प्रकार तीन बार सौंफ को भिगो भिगो कर सुखा लें। फिर एक मिट्टी के सराव में बन्द तथा कपड़मिट्टी करके दस-बारह किलो उपलों की आग दें। यदि श्वेत रंग की भस्म हो जाये तो अच्छा है। अन्यथा पुनः आग दें और बारीक पीसकर शीशी में रखें।

सेवन विधि----आधी रत्ती से १ रत्ती तक दवा खांड में मिलाकर प्रातः सायं दिया करें। खांसी तथा श्वास के लिए अत्यन्त ही लाभकारी है।

३५—श्वास नाशक गुटी नं० ५

आक के लौंग, छोटी पीपल, सेंधा नमक प्रत्येक २५-२५ ग्राम लेकर अत्यन्त ही बारीक पीस लें और जंगली बेर के बराबर गोली बना लें।

सेवन विधि—१ गोली प्रातःकाल गरम पानी के साथ दिया करें। इससे श्वास बहुत शीघ्र ही दूर हो जाता है।

३६—अद्वितीय गुटी नं० ६

जो श्वास रोग तथा पुरानी खांसी के लिए रामबाण है। आक के हरे पत्तों पर जो बारीक श्वेत रंग का रुंवा सा होता है, उसको सावधानी से चाकू द्वारा पृथक करके बाजरे के दाने के बराबर गोलियां बनालें और एक गोली प्रातःकाल तथा एक गोली सायंकाल खिलाकर, ऊपर से पान का बीड़ा खिला दिया करें। परमात्मा की कृपा से, आशा है कि दो चार दिन में ही आराम हो जायेगा। यह गोलियां पुरानी खांसी को भी अति लाभदायक सिद्ध होगी।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

३८—श्वांस नाशक सन्यासी टोटका

आक के लौंग जो फूलों के अन्दर हुआ करते हैं (जिनकी आकृति मथानी की तरह की होती है) बहुत सी व्याधियों के लिए एक अनुपम अकसीर हैं। अन्य रोगों को छोड़कर हम यहां केवल खांसी तथा दमा (श्वास) के लिए इसका उच्च प्रभावक होना उल्लेख करते हैं। जो महाशय बहुत सी चिकित्सा कराने के पश्चात निराश हो गये हों, वे इस सरल चुटकले का अनुभव करके देखें। फिर आपको मालूम होगा कि इस साधारण हेर फेर के अन्दर कितना प्रभाव विद्यमान है। रोगी को प्रतिदिन आक के लौंग खिला दिया करें और प्रति सप्ताह के पश्चात दो लौंगों की वृद्धि करवा दिया करें। जब मात्रा दस लौंग तक पहुंच जावे तब प्रतिदिन दस ही लौंग निरोग होने पर्यन्त सेवन कराते रहें। इससे पुराने से पुरानी खांसी तथा श्वास निर्मूल हो जाता है।

३९—पुरानी खांसी तथा पुराने श्वास की रामबाण औषधि

आक की कली आवश्यकतानुसार लेकर प्रत्येक कली में एक एक काली मिर्च रखकर बन्द कर दें, पुनः मिट्टी के कूजे में नीचे ऊपर नमक रखकर कूजे के मुंह पर मुद्रा देकर तन्दूर में रख दें और प्रातः निकालें। इसे सावधानी से बारीक पीसकर शीशी में रखें। यह अक्सीर श्वांस है।

सेवन विधि—४ रत्ती दवा पान अथवा अर्क गाजवां आदि के साथ खिलायें। यद्यपि देखने में सरल सी दवा प्रतीत होती है, परन्तु लाभ की दृष्टि से बड़े २ प्रयोगों से बढ़कर है। किन्तु यह नवीन रोग में लाभकारी नहीं है, वरंच जब रोग पुराना हो चुके तब उनके लिए उत्तम रसायन है।

४०—खांसी तथा श्वास रोग को रामबाण

चोवा सज्जी आवश्यकतानुसार लेकर किसी मिट्टी के कूजे में रख उस पर आक का दूध इतना डालदें कि सज्जी पर एक अंगुल चढ़ जावे। फिर इसको रख दें। जब यह सम्पूर्ण दूध सूख जावे तब पुनः भर दें, इसी प्रकार तीन बार भीगी सूखी करें। तत्पश्चात कूजे को कपड़ मिट्टी करके ५ किलो उपलों की आग दें और शीतल होने पर बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। यह श्वास की आश्चर्यजनक औषधि है।

सेवन विधि—इस औषधि में से १ रत्ती दवा बताशे या पान में रखकर खिला दिया करें। खांसी तथा श्वास की अत्युत्तम औषधि है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

४१—अकसीर खांसी तथा श्वास

आक के क्षुप के पांचों अंग लेकर छाया में सुखायें और जलाकर उसकी राख बना लें, उस राख को आठ गुणे पानी में भिगो दें और तीन-चार दिन पड़ा रहने दें। प्रतिदिन २–३ बार लकड़ी से हिला दिया करें, पुनः उस पानी को निथारकर किसी कढाही में पकावें। जब सम्पूर्ण पानी जल जावेगा तब नीचे श्वेत वर्ण का क्षार बाकी रह जायगा, जिसको नमक आक (अर्कक्षार) कहते हैं। यह औषधि श्वास तथा खासी के लिए अकसीर वस्तु है।

सेवन विधि—१ रत्ती से ३ रत्ती तक गर्म पानी से प्रातः सायं दोनों समय दें। कफ जन्य खांसी तथा श्वास के लिए आश्चर्यजनक लाभप्रद औषधि है।

सूचना--रुक्ष कास वाले को मक्खन में रखकर देना चाहिए एवं जिसे रुक्ष श्वास हो उसको भी मक्खन में सेवन कराना चाहिए। जो सज्जन इसका अनुभव करेंगे, निश्चय ही प्रसन्न हो जायेंगे।

पार्श्वशूल तथा सन्निपात

पार्श्वशूल और सन्निपात पृथक-पृथक रोग हैं, जिनमें बहुत अन्तर है, परन्तु नीचे लिखे प्रयोग सन्निपात तथा पार्श्वशूल दोनों के लिए ही समान लाभप्रद हैं।

४२--पार्श्वशूल व सन्निपात पर अद्भुत योग

प्रयोग—यह प्रयोग पार्श्वशूल व सन्निपात के लिए अनमोल रसायन है। यही कारण है कि सहस्रों वैद्य, हकीम अपने २ रोगियों पर प्रयोग करते हैं। क्योंकि इसकी पहली मात्रा से ही लाभ होना आरम्भ हो जाता है। यह योग हर एक घर या न्यून से न्यून प्रत्येक औषधालय में अवश्य प्रस्तुत रखना उचित है। यह अनुपम औषधि बारहसिंगे की भस्म है, जिसके निर्माण और सेवन करने की विधि पुस्तक के अन्त में लिखी है। इसलिए थोड़ा कष्ट उठाकर पृष्ठों को उल्टें और वहां से योग देखकर बनाकर रखें।

४३--पार्श्वशूल के लिए रामबाण लेप

जब रोगी पीड़ा के मारे कान्तिहीन हो तो उचित है कि आक के पत्तों को कूटकर उनका पानी निकालें। इस पानी से गेहूं का आटा गूंधकर उसका लेप बनालें और रोगी के जिस पार्श्व पर पीड़ा हो, उस पर लेप करा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दें और रूई को गरम करके सेंक करते रहें। इस क्रिया से अतिशीघ्र पीड़ा दूर हो जाती हैं।

४४--अत्युत्तम लेप का योग

यह प्रयोग उपरोक्त लेप से अधिक लाभदायक है और सरल होने से शीघ्र तैयार भी किया जा सकता है। जब रोगी मारे पीड़ा के हाय २ पुकारता हो तो उस समय निम्नलिखित योग को प्रयोग में लाना चाहिए। पूर्ण आशा है कि उसी दिन वरंच उसी घण्टे पीड़ा शान्त होनी आरम्भ हो जायगी।

प्रयोग—काले तिल आवश्यकतानुसार लेकर अच्छी प्रकार बारीक पीसें और बारीक होने पर आक का दूध मिलालें। फिर पुनः अच्छी तरह खरल करें, यहां तक कि अत्यन्त बढ़िया लेप तैयार हो जाये। फिर थोड़ा सा गर्म करके पार्श्व पर, पीड़ा के स्थान पर लेप कर दें। ईश्वरेच्छा से यह विधि जरूर ही सफल सिद्ध होगी।

४५--पीड़ा शान्त करने की अत्यन्त सरल विधि

आक के पत्तों को तिल तेल से चुपड़कर तवे पर रखकर गर्म करें और पार्श्व के ऊपर रखकर बांध दें। आशा है कि शीघ्र पीड़ा में कमी हो जायगी। ऐसे सरल योग किसी समय ऐसे प्रभावशाली सिद्ध होते हैं कि लोग वाह २ कह उठते हैं।

आमाशय की व्याधियां

यद्यपि आमाशय मुख्य अवयव नहीं है, परन्तु सत्य तो यह है कि मुख्य अवयव भी इसके आधीन हैं। जिस प्रकार बड़े २ धनी और महाराजा लोग पाचक के बिना निर्वाह नहीं कर सकते उसी प्रकार मनुष्य के शरीर रूपी राज्य का सम्राट भी आमाशय पर निर्भर है। यदि आमाशय ठीक दशा में होगा तो प्रत्येक अवयव अपने २ कार्य को अच्छी प्रकार निभाते रहेंगे। परन्तु ज्योंही आमाशय में कोई विकार उत्पन्न होने की आशंका हुई कि कभी विशूचिका (हैजा) कभी आमाशय शोथ (वर्म मेदा) कभी अमल-पित्त, खट्टे डकार, कभी भूख न लगना आदि २ सब आमाशय की ही व्याधियां हैं। इसके अतिरिक्त भी आमाशय की खराबी से अनन्त रोग उत्पन्न हो जाते हैं। एक यूनानी बुजुर्ग का कथन है कि प्रत्येक रोग आमाशय से ही उत्पन्न होता है। सुतरां आमाशय की शुद्धि एक अत्यन्त आवश्यक बात है, जिसका हमें हर समय ध्यान रखना उचित है। जो लोग आमाशय को ठीक रखने में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

असावधानी करते हैं और हर समय पत्र मंजूषा (लैटर बक्स) की भांति इसके भरने में लगे रहते हैं, उनको अति शीघ्र इसका दुष्फल प्रतीत होता है। यहां आमाशय के कई एक रोगों को दूर करने के लिए कई एक योग उपस्थित किये जा रहे हैं जो कि आक द्वारा ही निर्माण किये जाते हैं। क्योंकि आक के अन्दर परमात्मा ने जहां और अनन्त लाभकारक गुण पैदा किये हैं वहां आमाशय के लिए अकसीरी गुण भी इसमें उच्च श्रेणी का रखा है। विशेष करके विशूचिका के लिए तो उच्चकोटि का अगद है। इसलिए विशूचिका के वर्णन में हम अपने खास अनुभूत सिद्ध प्रयोगों का कथन करेंगे।

४६--चमत्कार पूर्ण औषधि

आक के लौंग, नमक काला, कालीमिर्च समभाग लेकर बारीक पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें। ये गोलियां आमाशय के बहुत से रोगों पर लाभकारी हैं, यथा उदरशूल, अजीर्ण, भूख न लगना, आदि रोगों के लिए अर्क सौंफ के साथ दिया करें। अत्यन्त ही लाभप्रद और अनुभूत है। बनाकर हर समय विद्यमान रखें और उक्त व्याधीग्रस्त लोगों को सेवन करायें।

४७--चमत्कार पूर्ण औषधि

आक के क्षुप को (फूल, फल, पत्ते, जड़ और टहनी आदि समेत) सुखा करके जलायें और उसकी राख को बड़े बर्तन में रखकर ऊपर १६ गुणा पानी डालकर किसी डंडे आदि से हिला दिया करें। इस प्रकार न्यून से न्यून ३ दिवस तक हिलाते रहें। दिन में दो तीन बार हिला देना पर्याप्त है। फिर इसके ऊपर से पानी निथार कर शेष द्रव्य को फैंक दें और उपरोक्त पानी को अग्नि पर पकाना आरम्भ करें। जब सम्पूर्ण पानी जल जायगा तब नीचे श्वेत सी औषधि शेष रह जायगी. जिसको अर्क क्षार कहते हैं। यह औषधि आमाशय की असंख्य व्याधियों के लिए अमृत है। विशेष कर उदरशूल और अजीर्ण के लिए तो एक जादू है। आवश्यकता के समय इसमें से १ रत्ती ज्यादा से ज्यादा २ रत्ती क्षार लेकर जिव्हा पर रखें और ऊपर से गरम पानी की घूंट पिला दें। शीघ्र ही खाया पीया जीर्ण हो जायगा और उदरशूल नष्ट होगा।

विशूचिका (हैजा)

विशूचिका वह संक्रामक व्याधि है, जिससे लाखों प्राणी प्रति वर्ष हमारे देश के अन्दर मृत्यु का ग्रास हो जाते हैं। सरकार भी इस दुष्ट रोग को रोकने के प्रबन्ध में पर्याप्त उद्योग करती है, फिर भी इसकी पूरी चिकित्सा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अभी तक हाथ नहीं आई। यद्यपि विशूचिका की चिकित्सा में डाक्टर लोग असीम उद्योग कर रहे हैं, तथापि अभी पूर्ण सफल नहीं हैं। हां! यूनानी हकीम और वैद्य, डाक्टरों की अपेक्षा बहुत अच्छी चिकित्सा कर सकते हैं। सत्य बात को स्वीकार करने के लिए हम हर समय तैयार हैं, वह यह है कि हमारे यूनानी हकीमों के अन्दर बहुत सी त्रुटियां हैं, जैसे कि इनको शुद्धता का बहुत कम ध्यान है। विशूचिका का रोगी वमन करता रहता है, परन्तु इसको उठाने और जलाने आदि का कोई ध्यान नहीं रखते। यदि स्वास्थ्य रक्षा का ध्यान रक्खें तो निश्चय ही यूनानी हकीम डाक्टर लोगों से प्रत्येक रोगों की चिकित्सा में बाजी ले जायें। विशूचिका की साध्यासाध्य अवस्था चार श्रेणियों में विभक्त की गई है, जिसका पूरा विवरण तो "अनुभूत योग चिन्तामणि" में है, यहां केवल एक प्रयोग उपस्थित किया जाता है।

४८--विशूचिका के लिए रामबाण वटिका

आक की जड़ की छाल २ भाग, काली मिर्च आधा भाग, काला नमक आधा भाग बारीक पीसकर अदरक के पानी में २--३ घण्टे तक खरल करें और चने के बराबर गोलियां बना लें। जब रोगी के बचने की आशा न रह गई हो और कडल्ल (बांईटे) पड़ रहे हों ऐसे समय पर घण्टे घण्टे के पश्चात एक गोली उचित अर्क से दें। परमात्मा की कृपा से शीघ्र ही आराम होगा। हमारा अनेकों बार का परीक्षित प्रयोग है।

यकृत और प्लीहा की व्याधियां

यकृत (जिगर) और प्लीहा (तिल्ली) की व्याधियों में कई रोगों के लिए आक एक अत्यन्तही उत्तम वस्तु है। इसलिए नीचे रोगों के नाम सचिकित्सा उल्लेख किये जाते हैं।

४९--यकृत शोथ

यह एक अत्यन्त कठिन रोग है, जिससे यकृत में शोथ हो जाता है, और हर समय थोड़ा २ ज्वर रहने लगता है एवं रोगी को सीधा शयन करने में कष्ट प्रतीत होता है। भूख नितान्त रुक जाती है, चलने फिरने से श्वास फूल जाता है। यकृत के स्थान को दबाने से पीड़ा होती है और सबसे बड़ा चिन्ह यह है कि रोगी दांई करवट नहीं लेट सकता। मुख का वर्ण मटि-याला सा रक्तहीन के समान हो जाता है। इस रोग के लिये निम्नलिखित

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चुटकला अत्यन्त ही अकसीर और शतसो अनुभूत है। हमने स्वयं अनुभव किया है।

प्रयोग—आक के पीले पत्ते और हल्दी समभाग लेकर वारीक पीसें और रत्ती रत्ती की गोलियां बनालें। पुनः अधोलिखित क्वाथ से प्रथम दिवस ५ गोलियां और दूसरे दिन ६ इसी प्रकार प्रतिदिन १ गोली बढ़ाते २ जब १२ गोली पर्यन्त पहुंच जायें तब फिर एक २ गोली प्रतिदिन घटाते जायें और ५ पर लाकर छोड़ दें। ईश्वर ने चाहा तो अवश्य आराम हो जायगा।

५०--क्वाथ

सौंफ, कासनी, मकोय, घृतकुमारी का गुदा प्रत्येक १२-१२ ग्राम लेकर २५० ग्राम पानी में क्वाथ करें और २०० ग्राम रहने पर पिलायें। यह सर्वोत्कृष्ट और अनुभूत योग है, जो कभी व्यर्थ नहीं जाता।

५१--जलोदर

उपरोक्त प्रयोग केवल यकृत शोथ को ही नहीं वरंच जलोदर के दोनों भेदों के लिए भी लाभकारी है। जलोदर में रोगी का पेट फूल जाया करता है और इस रोग का फल प्रायः मृत्यु ही हुआ करता है। परन्तु ऊपर-युक्त प्रयोग से आरोग्यता प्राप्त हो जाती है।

पाण्डु रोग

यह प्रसिद्ध रोग है। इसमें रोगी को आंखें हल्दी की तरह पीतवर्ण हो जाती हैं और मूत्र भी पीला ही आता है। जिससे वस्त्र पर रंगत आ जाती है, भूख रुक जाती है, मुंह और शरीर पर भी पीतता छा जाती है, बल्कि रोग के पुराने हो जाने पर तो सम्पूर्ण वस्तुयें रोगी को पीली ही दृष्टिगोचर होती है।

५२--पांडु रोग का सरल प्रयोग

पांडू के उत्तमोत्तम प्रयोग हमने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणि" में कथन कर दिए हैं, जो कि परमात्मा की कृपा से कदापि व्यर्थ जाने वाले नहीं हैं, किन्तु उनका इस पुस्तक में उल्लेख नहीं किया जा सकता। अतः वहीं देखने का कष्ट करें। यहां आक से निर्माण होने वाला प्रयोग लिखा जाता है।

आक की जड़ की छाल ६ रत्ती, काली मिरच ११ दाने, पानी में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

घोट छानकर दिन में दो बार पिलावें और गरम तथा स्निग्ध वस्तुओं से परहेज करायें। ऐसा करने से रोग शांत हो जायगा।

प्लीहा शोथ

प्लीहा शोथ मनुष्य को निकम्मा बना देता है। क्योंकि रोगी से कोई भी बल का कार्य नहीं हो सकता। ज्योंही थोड़ा सा कार्य किया बस ! वहीं श्वांस फूल गया, दो चार कदम भागना पड़ गया तो बस प्लीहा में पीड़ा शुरू हो गई। भूख बन्द हो जाती हैं, यदि खा भी लिया तो पक्वाशय जीर्ण नहीं करता। मुंह की रंगत नितांत रक्तहीन और मिट्टी की तरह हो जाती है। इसको दूर करने के लिए कई एक वस्तुएं हैं जिनमें से आक भी एक औषधि है। नीचे दो एक प्रयोग लिखे जाते हैं।

५३--प्लीहा नाशक चूर्ण

आक के पत्ते आवश्यकतानुसार लेकर उनके समान भाग नमक मिला दें और उन दोनों को भली-भांति कूटकर कल्क (लुगदी) बनावें और पुनः किसी मिट्टी के कूजे में बन्द करके कपड़मिट्टी करें। जब मिट्टी अच्छी तरह सूख जावे तब ४–५ किलो उपलों की आग में फूंक दें। शीतल होने पर निकालकर खरल करें और शीशी सुरक्षित रक्खें।

सेवन विधि—इसमें से एक ग्राम दवा प्रतिदिन उष्ण जल या ऊंटनी के दूध से प्रातःकाल सेवन कराते रहने से प्लीहा शोथ निवृत हो जाता है।

५४--द्वितीय प्रयोग

अर्क क्षार—जिसकी विधि गत पृष्ठों में किसी स्थान पर लिखी जा चुकी है-वह क्षार शोथ को न्यून करने के लिए अत्यन्त लाभकारी है। प्रतिदिन दो रत्ती क्षार उष्ण जल से दिया करें।

अर्श (बवासीर)

अर्श वह कष्टप्रद रोग है, जिससे प्रत्येक मनुष्य परिचित है। किन्तु हमारे दुर्भाग्य से यह रोग भारतवर्ष में संक्रामक रूप से व्यापक है। जिस मनुष्य को देखो वही इस रोग में ग्रस्त दृष्टिगोचर होता है। इसके कष्ट को

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वही मनुष्य जानता है जिस पर इसका आक्रमण हुआ हो। ऐसा प्रतीत होता है मानो चाकू से काटकर मांस निकाला जा रहा है। यही कारण है कि अधिकांश चिकित्सक केवल अर्श की चिकित्सा से ही अपना उदर पोषण कर रहे हैं। बेचारे दरिद्र से दरिद्र रोगी भी वैद्य और हकीमों को पर्याप्त फीस देकर चिकित्सा कराने को बाधित होते हैं। वरना आजकल लोग तो इतने मुफ्तखोरे हो गये हैं कि अपनी चिकित्सा पर १) व्यय करना भी अनुचित भार समझते हैं। यदि दुर्भाग्य से वैद्य को १) रु० दे देते हैं तो फिर वैद्य महाशय को न्यून से न्यून सप्ताह भर के लिए उनके आधीन रहना पड़ता है। क्या मजाल कि वैद्य दिन में चैन से बैठ सके। मैंने स्वयं देखा है कि कई महाशय तो इसी कष्ट के कारण वैद्यक धंधे से हाथ धो बैठे हैं। परन्तु यह सारी भूल हमारे उन वैद्यों की है जो कि इस विद्या में पूर्ण तो होते ही नहीं यों ही इस उच्च विद्या को अप्रतिष्ठित करने को तैयार रहते हैं। परन्तु इनके अतिरिक्त अर्श चिकित्सकों की तूती अब तक बोल रही है। सारांश यह है कि अर्श अधिक से अधिक कष्टप्रद रोग है। इस रोग की निवृत्ति के लिए पूर्ण चिकित्सा तथा तत्सम्बन्धी अनुभूत प्रयोग जो भारतवर्ष के अर्श चिकित्सकों की जान हैं और जिनसे प्रत्येक मनुष्य पूर्ण रूप से चिकित्सा कर सकता है वे प्रयोग हमने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अनुभूत योग चिन्तामणि" में सविस्तार प्रकाशित कर दिये हैं। अर्श के नामी सफल चिकित्सक बनने की इच्छा हो तो उक्त पुस्तक मंगाकर देखिये। यहां पर कई एक ऐसे प्रयोग लिखते हैं, जो अर्क द्वारा निर्माण किये जाते हैं। आशा है कि पाठकगण आवश्यकता के समय परीक्षा कर लाभ उठावेंगे।

५५--अर्श के लिए सरल टोटका

अर्श के रोगी को उचित है कि ग्राम से दूर शौच (मलत्यागनार्थ) जाये और किसी आक के क्षुप के समीप मल त्याग कर उसके तीन पत्ते तोड़ लें और गुदा साफ करने का काम उन पत्तों से लें। देखने में यद्यपि यह क्रिया निस्सार सी प्रतीत होती है, परन्तु लाभ की दृष्टि से अत्युत्तम है। ऐसा करने से कुछ दिनों पश्चात मस्सों का बल हटकर आराम हो जाता है। गरीब लोगों को ऐसे चुटकलों से अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

५६—अर्श नाशक वटिका

आवश्यकतानुसार हल्दी लेकर भली प्रकार बारीक पीसकर आक के दूध में भिगोदें, एवंमेव ७ बार भिगोवें और सुखायें। पुनः अर्क दुग्ध (आक का दूध) द्वारा ही लम्बी २ गोलियां बनालें और छाया में सुखाकर सुरक्षित रखें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

प्रयोग विधि—प्रतिदिन प्रात: व सायंकाल के समय एक गोली अपने थूक में अथवा ताजा पानी से घिसकर मस्सों पर लेप कर दिया करें। कुछ समय निरन्तर लगाते रहने से मस्से सूखने लगते हैं और धीरे-धीरे सूखते सूखते बिल्कुल गिर जाते हैं, फिर विशेषता यह है कि कष्ट भी अधिक नहीं होता। बनाकर अवश्य लाभ उठावें।

५७—अक्सीर अर्श

आक का दूध १२५ ग्राम खरल में डालकर इस प्रकार खरल करें कि सूखकर खरल से चिपट जावे। दूसरे दिन १२५ ग्राम दूध और डालकर पुन: खरल करें और उस समय तक खरल करते रहें कि जब तक गाढा होकर चिपक न जाये। एवमेव ८ दिन तक प्रतिदिन १२५ ग्राम आक का दूध डालते जावेंऔर खरल करते रहें। तत्पश्चात उस दूध को खरल में से खुरच कर उतार लें और उसके दो भाग करें। फिर एक मिट्टी के प्याले में दोनों भागों के मध्य सुहागा १२ ग्राम रखकर उस प्याले के ऊपर दूसरा प्याला, जिसके मध्य में छिद्र हो, रखकर दोनों प्यालों के मुंह पर कपरौटी कर दें और दूसरे प्याले के ऊपर १ तीसरा सावत प्याला रखकर उसके मुंह को भी नीचे वाले प्याले की पीठ पर कपड़ मिट्टी कर दें अर्थात् ऊपर के दोनों प्याले उल्टे रहेंगे। फिर उन प्यालों को ईंटों के चूल्हे पर रखकर नीचे एक मोटी बत्ती का दीपक जला दें। दोपहर के पश्चात ऊपर का प्याला गरम हो जायगा, उस पर चार तह का कपड़ा पानी से भिगोकर रख दें और दीपक उसी प्रकार जलता रहे। चार पहर की आंच देकर शीतल करलें और प्रात:काल प्यालों को खोलकर नीचे के प्याले का द्रव्य पृथक रखें और मध्य प्याले में जो पीत वर्ण की औषधि होगी उसको पृथक रखें। इसी प्रकार तीसरे प्याले में जो सत्व ऊपर लगा हुआ होगा उसे भी पृथक रखें।

सेवन विधि—नीचे वाले प्याले का द्रव्य आमवात(गठिया)के रोगी के लिए अकसीर है। इसमें से एक रत्ती औषधि प्रतिदिन बताशे में रखकर खिलायें। केवल तीन दिन में ही बहुत लाभ होगा। शेष दोनों औषधियां अर्श के रोगी के लिए लाभकारी हैं। प्रथम दो दिन तक मध्य के प्याले वाली पीत वर्ण औषधि एक रत्ती परिमाण से मक्खन में मिलाकर खिलायें। भोजन के लिए मिश्री मिश्रित दुग्ध के अतिरिक्त और कुछ न दें। दो दिन के अनन्तर रोगी के उदर में पीड़ा होनी आरम्भ होगी, किन्तु कोई भय नहीं। तीसरे दिन प्रात:काल सबसे ऊपर वाले प्याले का सत्व एक रत्ती मक्खन में मिला

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कर खिलायें और रोगी को लिटाये रक्खें। एक पहर के पश्चात् रोगी की गुदा की बल्लियें (कांच) बाहिर आवेंगी और मस्से ढीले तथा अधमुये से हो जायेंगे। उनको सावधानी से किसी कोमल वस्त्र से पृथक करलें। फिर १२ ग्राम फिटकरी बारीक करके कपड़े पर रखकर कांच पर रखें और उसी लंगोट कसवादें और उसी समय कुक्कुट मांस का रस (शोरबा) पिलादें तथा रोगी को सूचित कर दें कि वह दो घण्टे तक पांवों के बल बैठा रहे इसके बाद कई दिन तक मूंग की दाल की खिचड़ी अथवा दलिया आदि नरम भोजन खावें। बस ईश्वर की कृपा से रोगी अर्श रोग से सदैव के लिए मुक्त हो जायगा। यह प्रयोग हकीम करीमबख्श को एक सन्यासी महात्मा से प्राप्त हुआ था। आपने उदारतापूर्वक इसे जनता के लाभार्थ प्रकाशित करा दिया।

त्वचा और जोडों की व्याधियां

जोड़ों के रोग दो प्रकार के होते हैं। एक बड़ी सन्धियों में पीड़ा, दूसरी छोटी सन्धियों में पीड़ा। जब यह रोग पुराना हो जाता है तब इसकी चिकित्सा बड़ी कठिनाई से होती है। रोग के आरम्भ में तो केवल सन्धि में ही पीड़ा हुआ करती है, अथवा सन्धियों में शोथ आ जाता है. परन्तु रोग के बढ़ जाने पर रोगी नितान्त जकड़ जाता है और चलने फिरने बल्कि उठने बैठने या करवट बदलने से भी लाचार हो जाता है। इस रोग के लिए आक अत्युत्तम वस्तु है। अतएव नीचे आक से तैयार होने वाले उत्तमोत्तम योगों का कथन करते हैं।

५८—प्रथम योग

इससे पूर्व अर्श के लिए जो प्रयोग कथन किया जा चुका है, उसके नीचे वाले प्याले का द्रव्य गठिया के लिए एक अनुपम अकसीर है। इसकी सेवन विधि भी वहीं पर लिख दी गई है। वहीं देख लें।

५९—आमवात के लिए लाभदायक टकोर

जब रोगी गठिया की पीड़ा से व्याकुल हो रहा हो तो उस समय निम्नलिखित टकोर पीड़ा को शान्त कर देती है। चिरकाल तक इस क्रिया को करते रहने से रोगी रोग मुक्त हो जाता है।

प्रयोग—आक के पत्तों को कूटकर इसकी पोटली सी बनालें और पोटली पर घृत लगाकर गरम करें। पश्चात् विधिपूर्वक टकोर करते रहें। टकोर कर चुकने के पश्चात आक के पत्तों को घृत से चुपड़कर गरमकर ऊपर बांध दें इससे साधारण आमवात पीड़ित रोगी स्वस्थ हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

६०--आमवात नाशक तेल

आक के बहुत से पत्ते लेकर मिट्टी के बर्तन में बन्द करके किसी गरम भट्टी या तन्दूर में रख दें। जब पत्ते साग की भांति नरम हो जावें तब निकालकर पत्तों को निचोड़कर पानी निकाल लें और उस पानी से आधा तिल तेल मिलाकर कलईदार देगची में अग्नि पर पकावें। पकते २ जब पानी जलकर तेल मात्र शेष रह जावे तब उतार लें। बस यही आमवात (गठिया) नाशक तेल है।

प्रयोग विधि—रात्रि के समय ऐसे स्थान पर जहां वायु का प्रवेश न हो–रोगी की सन्धियों पर इस तेल की मालिश करें। न्यूनातिन्यून ३० मिनट तक मालिश करना चाहिए। तदपश्चात् रोगी को ३ घण्टे तक पानी पीने को न दें। इससे जुड़ी हुई सन्धियां खुल जाती हैं और सन्धि शोथ तथा शूल दूर हो जाता है।

६१--आमवात पर खाने की औषधि

एक घड़े में २ किलो आक के पत्ते अच्छी तरह ऊपर नीचे बिछाकर रख दें फिर उनके ऊपर ६० ग्राम सोंठ के टुकड़े पृथक २ रख दें और उन पर आक के पत्ते सावधानी से बिछादें। ऊपर से पानी डालदें। फिर घड़े के मुख पर मुद्रा देकर कोई भारी चीज पत्थर आदि रखें, ताकि वाष्प के जोर से सरपोश (ढक्कन) उतर न जावे। तद्पश्चात नीचे आग जलादें। जब पानी जल जावेगा तब उसका शब्द बन्द हो जायगा। उस समय आग बन्द करदें और सारी रात उसी दशा में पड़ा रहने दें। प्रातःकाल सावधानी से घड़े को खोलें। खोलते समय चेहरे को घड़े के सामने से हटा लेना चाहिए ताकि वाष्प चेहरे पर न लगने पावे। सोंठ को निकालकर आध किलो गौ घृत में भून लें और फिर सोंठ को घृत में से निकालकर शहद में डालदें। घृत को भी सम्भाल कर रखें।

सेवन विधि—इसमें से २ ग्राम से ३ ग्राम तक सोंठ गठिया के रोगी को खिला दिया करें और उस सोंठ भुने हुए घृत में से २५ ग्राम लेकर उसमें रोटी चूर कर खिलाया करें तथा उसी घृत में से जोड़ों (सन्धियों) पर मालिश करके रोगी को धूप में बिठाये। इस औषधि के सेवन काल में यथासम्भव शीतल जल से परहेज करना उचित है। साथ ही शीतल वायु से भी रोगी को बचना चाहिए। आमवात से जुड़ा हुआ रोगी इस प्रयोग से ३-४ दिन में खुल जाता है। जब रोगी को शहद सहित सोंठ खिलाकर और मालिश

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करके धूप में बिठाया जाता है तब उसको अत्यधिक पसीना आकर जोड़ खुल जाते। परन्तु रोगी को तत्क्षण कपड़ा ओढा देना चाहिए ताकि सम्पूर्ण दोष स्वेद द्वारा निकल जायं।

आमवात की रामबाण औषधि

६२--अर्क तेल

यह प्रयोग तनिक परिश्रम से तैयार होता है, परन्तु है सर्वोत्कृष्ट एवं लाभदायक। आक के फूल, अजवायन देशी प्रत्येक ५ किलो, सुहांजने की जड़ ढाई किलो एक बड़े से घड़े में डालकर इसके ऊपर इतना पानी डालें कि औषधियों के ऊपर एक बालिश्त पानी चढ जाये। फिर घड़े का मुंह बन्द करके रखदें और इसी प्रकार ९ दिन तक पड़ा रहने दें। तद्पश्चात बक्र यन्त्र (भबके) द्वारा अर्क खींच लें और उसके ऊपर जो तेल दृष्टिगोचर हो उसको धीरे धीरे उतार कर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि--इस तेल में से एक बूंद परिमाण में लेकर पान पर लगा कर खिलाया करें। आमवात, गठिया, श्वांस, कास और जलोदर की सर्वोत्तम और अद्वितीय औषधि है।

६३--व्रण शोथ

जब तक व्रण शोथ पककर उसमें पीप न पड़ी हो, तब तक के लिए यह उत्तम प्रयोग है। आक का दूध और गोघृत समभाग लेकर अच्छी तरह मिलालें और दिन में दो या तीन बार लगाते रहें। इससे व्रण शोथ बैठ जायगी।

सन्यासी का प्रयोग

६४--मल्हर

एक मिट्टी के कूजे में ६० ग्राम सिन्दुर डालकर उसमें आक का दूध इतना डालदें कि सिन्दुर अच्छी तरह भीग जाये। जब वह सूख जाये तब एक बड़ी सी कड़हाई में आधकिलो तिलों कातेल डालकर अग्नि पर पकने दें। जब तेल पकने लगे तब उसमें उपरोक्त सिन्दूर डालकर किसी लोहे की छड़ से हिलाते रहें। पकते २ जब तेल का रंग काला हो जाय तब नीचे उतारकर जब तक वह गाढ़ा न हो जावे बराबर हिलाते रहें। गाढा तथा ठंडा हो जाने पर अत्योत्तम अद्वितीय मल्हम (मल्हर) तैयार हो जायगी। किसी डिबिया में भरकर रखें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रयोग विधि—आवश्यकता के समय किसी कपड़े पर लगाकर व्रण शोथ या व्रण पर लगा दें। इससे व्रण शोथ (फोड़ा) शीघ्र ही फूट जाता है। इससे पुराने से पुराने क्षत (घाव) तथा नाड़ी व्रण (नासूर) तक ठीक हो जाते हैं। इस मलहम में यह खास विशेषता है कि इसके फाये पर पानी का तनिक भी प्रभाव नहीं होता। यदि मल्हम उत्तम रीति से तैयार हो जावे तो एक बार लगाया हुआ फाया क्षतपर से अच्छा हो जाने पर ही उतरता है। भरना फूटना इत्यादि सब इसी से हो जाते हैं, दूसरी औषधि की आवश्यकता नहीं पड़ती।

६५--पैरों के फोड़े

कई मनुष्यों के पैरों पर प्राय: फोड़े निकलते रहा करते हैं, इसलिए यहां उनकी चिकित्सा लिखी जाती है। आक के ६–७ पत्ते पैरों पर रखकर एक ईंट को चूल्हे में गरम करें और फिर उन पत्तों पर रख दिया करें इस प्रकार पैरों पर कई बार टकोर करने से फोड़े अच्छे हो जायेंगे।

६६--बद्ध

आक के पत्तों को अरण्डी के तेल से चुपड़कर गर्म करके बद्ध के ऊपर बांधें। ऐसा करने से या तो बद्ध बैठ जायगी अथवा फूट जायगी।

दद्रु तथा चर्मदल

दद्रु (दाद) व चर्मदल (चम्बल) के लिए हमने अपने सर्वोत्कृष्ट उत्तमोत्तम प्रयोग, जो आज तक किसी पुस्तक में नहीं लिखे गये थे—वे प्रयोग हमारी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणि" में प्रकाशित कर दिए हैं। नीचे आक से तैयार होने वाले कुछ योग लिखे जाते हैं।

६७--दाद तथा चर्मदल के लिए मल्हर

यह योग हकीम हाजी खैरुद्दीन साहिब का है, जो कि मक्का शरीफ में तीन वर्ष तक मतब करते रहे थे। आप बड़े ही दयालु और सज्जन पुरुष थे।

इस योग को जनाब हाजी हकीम गुलाम जीलानी साहिब ने भी अपनी पुस्तक में कथन किया है। सारांश यह योग अत्यन्त विश्वसनीय और लाभदायक है। जहां भी इसका अनुभव किया जायेगा, अत्यन्त ही अकसीर, उच्च प्रभावक और लाभप्रद सिद्ध होगा। आक के खिले हुए फूल ६० ग्राम, पारा ३६ ग्राम दोनों मिलाकर न्यून से न्यून १५ घण्टे तक खरल करें, जब

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तक कि पारा भली भांति अदृश्य न हो जाये। फिर १२ ग्राम बावची का सूक्ष्म चूर्ण बनाकर उसी में मिश्रित कर दें और पुनः गाय के मक्खन में (जो १०१ बार पानी से धुला हुआ हो) मिश्रित कर (मलहर) बनावें

प्रयोग—प्रतिदिन पीड़ित स्थान पर लगाया करें। दद्रु तथा चर्म दल को एक सप्ताह हद दो सप्ताह में नाश कर देने वाली मल्हर है।

६८--दाद की अद्वितीय औषधि

अर्क दुग्ध और मधु समभाग मिलाकर दाद के ऊपर मालिश करें। इस अभ्यंग से कई दिन में दाद अच्छा हो जाता है।

६९—दाद के लिए तृतीय योग

बावची को एक सप्ताह तक आक के दूध में खरल करें और फिर दाद थोड़ा सा खुजाकर ऊपर लेप कर दिया करें। दाद दो अथवा तीन दिन में अच्छा हो जायगा।

७०—दाद के लिए चतुर्थ योग

अर्क पुष्प, आंवलासार गन्धक समभाग दही में सूक्ष्म पीसकर प्रातः सायं लगाया करें, कई दिन लगाने से दाद ठीक हो जायगा।

कंडू (खुजली)

कंडू के दो भेद हैं रुक्ष तथा आर्द्र। जिसको खुजलाने से रक्त या पीला पानी सा निकले वह आर्द्र (तर) और दूसरी रुक्ष होती है। कंडू के लिए आक अतीव लाभप्रद हैं। नीचे उत्तमोत्तम और चुने हुए योगों का उल्लेख किया जाता है।

७१—कंडू नाशक रामबाण तेल नं० १

सरसों का तेल ६० ग्राम लेकर अग्नि पर चढ़ायें। जब पककर अच्छी तरह लाल हो जावे, तब धीरे से आक का दूध १२ ग्राम डाल दें। जब दूध जलकर काला सा हो जावे तब छानकर तेल को पृथक करलें और दिन में दो बार शरीर पर मालिश कराया करें। ईश्वरेच्छा से केवल तीन दिन की मालिश से आराम हो जायगा। अभ्यंग (मालिश) करने के ३ घण्टे के पश्चात् स्नान करने की रुकावट नही है। परन्तु इससे पहले स्नान नहीं करना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

७२--कंडूहर मल्हर नं० २

मिट्टी के एक कोरे कूजे में आक का दूध डालकर छाया में रखकर सुखायें। जब दूध शुष्क हो जाये, तब उस कूजे को तोड़कर जमे हुए दूध को निकालकर सावधानी से रखें और आवश्यकता के समय यह दूध १२ ग्राम और गाय का मक्खन जो १०१ बार पानी से धुला हुआ हो, ६० ग्राम मिलाकर मल्हर सी बना किसी खुले मुंह की पेचदार शीशी में डालदें। आवश्यकता के समय मालिश कर दिया करें। औषधि प्रयोग काल में शरीर पर ठण्डा पानी न लगने दें। इस मल्हर से बुरी से बुरी कंडू भी ३ दिन में समाप्त हो जाती है।

७३--तृतीय योग

२५० ग्राम सरसों का तेल किसी बर्तन में डालकर अग्नि पर रखें, जब कड़कड़ाने लगे तब एक एक आक का पत्ता तेल में छोड़ते जायें। जब एक पत्ता जल जावे तब दूसरा पत्ता डालें और दूसरे के जल जाने के पश्चात् तीसरा पत्ता डालें। इसी प्रकार जब २१ पत्ते जल जावें, तब उतारकर इसमें ३ ग्राम मैंसिल सूक्ष्म पीसकर डाल दें और दिन में एक बार मालिश किया करें। यह कण्डू की विशेष औषधि है।

७४--चतुर्थ योग

रूई का एक टुकड़ा लेकर आक के दूध में तर करके धूप में सुखालें। फिर इसको जलादें,परन्तु ज्योंही इसकी ज्वाला निकलनी आरम्भ हो, तत्क्षण इस पर कोई बर्तन उल्टा रखकर वायु बन्द कर दें, ताकि इसकी राख न बने वरंच इसका कोयला तैयार हो जावे। इसको कड़वे तेल में पीसकर पूर्वोक्त विधि से उपयोग में लावें। तीन रोज में आराम हो जावेगा।

७५--अत्युत्तम पंचम योग

आंवलासार गन्धक ६० ग्राम को २४ घण्टे तक आक के दूध में खरल करके छाया में सुखालें। फिर बारीक पीसकर उसे तीन किलो पानी में डालकर अग्नि पर चढा दें और देर तक पकाते रहें ऐसा करने से तेल पानी के ऊपर तैर आवेगा। उसको उतार कर रखें और इसकी मालिश किया करें। ईश्वर की कृपा से आराम होगा।

विषधर जन्तुओं का काटना और उनके सरल अगद

यह अत्यावश्यक प्रकरण है। इस पाठ को ५-६ बार मनन करके

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कंठस्थ कर लेना उचित है, ताकि आवश्यकता के समय काम आवे, क्योंकि कई बार ऐसी दुर्घटना हो जाती हैं कि मनुष्य परेशान हो जाता है। ऐसे समय में इस पाठ के प्रयोग अत्यन्त ही लाभदायक एवं कार्य साधक सिद्ध होते हैं। क्योंकि इस स्थान में जो कुछ भी लिखा जायगा, वह सब प्रयोग प्राय: भारतवर्ष में सर्वत्र प्राप्त होने वाले कल्याणकारी आक के क्षुप से ही निर्माण किये जाते हैं। यही कारण है कि हमारी इन पुस्तकों से न केवल नागरिक वरंच ग्रामीण और धनी तथा निर्धन प्रत्येक श्रेणी के लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

भिड़ तथा मधुमक्खी का विष

भिड़ तथा मधुमक्खी प्रत्यक्ष में नन्हे २ जीव हैं, परन्तु विष की दृष्टि से अत्यन्त ही दुष्ट होते हैं। कई मनुष्यों की प्रकृति तो ऐसी होती है कि उन पर विष का इतना अधिक प्रभाव नहीं होता परन्तु भिन्न प्रकृति वालों पर इनके विष का इतना अधिक प्रभाव पड़ता है कि शरीर ही विष के हेतु सूज जाता है, चुनांचे लेखक को अपनी बाल्यावस्था की दो तीन घटनायें स्मरण हैं, जबकि मुझे एक बार भिड़ ने काट लिया था। मुझे उससे पूरे १०—१२ घण्टे अचैतन्यता सी रही थी। पुन: एक बार मधुमक्षिका ने काट लिया तो कई एक छींकें आकर सारे शरीर पर उदर्द (छपाकी) से प्रकट हो गये थे और मुझे पर्याप्त कष्ट उठाना पड़ा था। इनके विष की निवृति के लिए आक एक अत्यन्त ही उच्च श्रेणी का अगद (तिर्यांक) है। नीचे अपने अनेक बार के अनुभव वर्णन करता हूं।

भिड़ तथा मधुमक्षिका विष का (अगद)

जब ततैया अथवा मक्खी आदि काटें तब शीघ्र ही उस स्थाव पर आक के दूध को भलीभाति मल देना चाहिए। बस तत्क्षण ही पीड़ा शान्त हो जाती है और शोथ आदि भी नहीं होने पाता। मैंने इसका कई बार अनुभव किया है। अभी हाल ही का जिकर है कि मैं श्रीमान् पंडित अमरनाथ जी के कार्यालय में बैठा हुआ था कि उनको भिड़ ने काट लिया तब मैंने आक का दूध मंगवाकर मल दिया और पीड़ा शान्त हो गई।

बिच्छू काटे का अनुभूत योग

बिच्छू के काटे की पीड़ा कोई साधारण पीड़ा नहीं होती इससे रोगी के प्राण निकलने के समीप हो जाते हैं। दाना लोग इसके दंश को सर्प दंशित पीड़ा से भी अधिक समझते हैं। इसलिए प्रसिद्ध है "सांप का डोसा सवे, बिच्छू का काटा रोवे" इसका विष मनुष्य को पूरे २४ घण्टे पर्यन्त व्याकुल

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रखता है। यहां इसके लिए उत्तमोत्तम अगद कथन किए जाते हैं। क्योंकि आक बिच्छू का सर्व सम्मत और सफल अगद है। आपको इसका अनुमान निम्नलिखित कथाओं से हो जायगा।

७७—प्रथम कथा

मेरी मामी जी को एक भयानक विषैले बिच्छू ने काट लिया, वह बेचारी असह्य पीड़ा से कराह रही थी। मैंने उसी समय आक का दूध मंगवाकर दंशित स्थान पर लगवा दिया, तत्क्षण पीड़ा शांत हो गई। रुग्णा का कथन है कि दंशित स्थान पर आक के दूध की बूंदें इस प्रकार प्रतीत होती थीं मानो जलते हुए स्थान पर हिम का टुकड़ा रख दिया है।

७८—द्वितीय कथा

एक मिस्त्री के पुत्र को घोर विषैले बिच्छू ने रात्रि के समय काट लिया था। उसकी चिकित्सा के लिए मुझे बुलाया गया। मैंने आते ही कई साधारण योग बरते किन्तु उस कठिन विष पर तनिक भी प्रभाव नहीं हुआ। मैं अपनी इस असफलता पर बहुत ही लज्जित हो रहा था। रोगी विचारा हाय २ के आर्तनाद से लोगों को कातर बना रहा था। अन्त में मैंने दो लड़कों को लालटैन देकर भेजा और उसी समय आक का दूध मंगवाकर उपरोक्त विधि से दंशित स्थान पर दो तीन बार टपकाया, ईश्वर की कृपा से विष का प्रभाव तत्क्षण दूर हो गया और रोगी उसी क्षण सो गया। इसी प्रकार के अनेक दृष्टान्त हैं। यह मैंने केवल विश्वास दिलाने के लिए कथा के रूप में वर्णन कर दिए हैं।

७९—बिच्छू दंश पर उत्तम अगद

हीरा हींग को अर्क दुग्ध की सात भावना देकर गोलियां बना लें। आवश्यकता के समय उपरोक्त गुटी को पानी में घिसकर दंशित स्थान पर लेप कर दें, उसी क्षण जहर दूर हो जाएगा।

८०—अन्यच्च

सरसों का तेल किसी बर्तन में डालकर अग्नि पर रखदें, जब गर्म हो जाय तब आक के पत्ते गर्म करके उनका पानी निचोड़कर सावधानी से उस तेल में डालें। पानी डालते ही तेल में धुंआ निकलेगा, शीघ्र ही उस धूम्र से दंशित स्थान को सेकें। विष दूर हो जायगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सर्प-दंश

भारतवर्ष में केवल सर्प के विष से लाखों प्राणी अकाल में ही मृत्यु की मुख गह्वर में पतित होते देखे जाते हैं। यद्यपि इस समय तक सर्प विष निवृति के लिए पर्याप्त अगद मालूम हो चुके हैं, तथापि इतना होने पर भी कभी २ तो यह खराबी पैदा हो जाती है कि उधर तो किसी घोर विषैले सर्प ने डसा और इधर समय पर उसका अगद प्राप्त न हो सका। जब कहीं से अगद को ढूंढ खोजकर लाये तो इतने समय में बेचारे रोगी की देह लीला समाप्त हो गई। इसलिए उचित है कि यथा सम्भव प्रत्येक स्थान में सर्प दंश का अगद प्रस्तुत रहना चाहिए, अथवा योग ही ऐसा हो जो हर समय सर्वत्र हाथ लग सके। परन्तु आश्चर्य है कि लोग ऐसे अगद का प्रयोग जनता में प्रकट करते हुए भी हिचकिचाते हैं और उनकी अपनी संकुचित प्रकृति उनको ऐसा करने से रोकती है। तथाच्च लेखक ने एक प्रयोग, जो वर्षों से एक कृपण हृदय में बन्द था, कठिनता से प्राप्त करके अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणि" में निसंकोच भाव से प्रकाशित कर दिया है। जो पाठकों को दृष्टिगोचर हुआ होगा। वैसा ही सरल अगद जो प्रत्येक स्थान में हर समय सरलता से प्राप्त हो सकता है, मैंने उदारतापूर्वक अपनी "अनुभूत योग प्रकाश" नामक पुस्तक में वर्णन कर दिया हैं। अब चूंकि "अर्क—गुण—विधान" लिखा जा रहा हैं इसलिये वे प्रयोग, जो इस पुस्तक से सम्बन्ध रखते हैं—नीचे वर्णन किए जाते हैं। आशा है कि इनको याद करके कभी न कभी परीक्षा कर किसी गरीब से आशीर्वाद लेने के भागी बनेंगे।

८१—सर्प-दंश के लिए सुलभ अगद

ज्योंही सर्प काटे, तत्क्षण ही जितना शीघ्र प्रबन्ध हो सके, अर्क दुग्ध प्राप्त करें और दंशित स्थानप र बूंद बूंद टपकाते रहें। दंशित स्थान दूध का शोषण करता रहेगा। जब दूध, उसमें प्रविष्ठ होना बन्द हो जावे अर्थात दंशित स्थान दूध को शोषण न करे तब बस कर जावें। क्योंकि यह इस बात का चिन्ह है कि शरीर निर्विष हो गया है और परमात्मा की कृपा से रोगी की जान बच गई है।

८२—सर्प दंश के लिए अद्वितीय अगद

आक के पत्ते लेकर उनको किसी तरह बेपहचान्त करदें ताकि रोगी को विदित न हो सके कि यह किस चीज के पत्ते हैं। रोगी को यह पत्ते उस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

समय तक निरन्तर खिलाते रहें जब तक कटु प्रतीत न हों। जब कटु प्रतीत होने लगे तब खिलाना बन्द कर दें, क्योंकि यह भी सर्प के विष से रोगी के निर्विष होने का एक चिन्ह है। जिससे रोगी की जान बच जाती है, किन्तु यह अत्यन्त आवश्यक है कि रोगी को कदापि विदित न होने दें कि उसको आक के पत्ते खिलाए जा रहे हैं। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि हो जाने की सम्भावना है। यदि रोगी को वमन हो जावे तो घबरायें नहीं, बल्कि पुनः खिलाना आरम्भ कर दें, क्योंकि विष वमन द्वारा भी निवृत हो जाया करता है।

८३—सर्प-दंश का तृतीय योग

यद्यपि मैंने इस पुस्तक के अन्दर केवल एक मात्र आक के ही लाभ वर्णन किए हैं तथा प्रसंगवश कहीं एक दो चीजें सम्मिलित करदी हैं। परन्तु नीचे एक ऐसा प्रयोग कथन किया जाता है, जिसमें बहुत सी दूसरी औषधियां भी हैं। इसका हेतु यह है कि इसमें मुख्य तो अर्क दुग्ध ही है और दूसरे इस प्रकरण में सर्प दंश का उत्तमतर उत्तम अगद कथन करना भी आवश्यक है। तीसरे इस प्रयोग को बहुत से प्रसिद्ध वैद्यों ने भी आक की विशेषता में कथन किया है, इसलिए मैं भी इस योग को इस पुस्तक में प्रकाशित कर देना उचित समझता हूं। सम्भव है इस योग के सेवन से किसी को लाभ हो जाय। यह प्रयोग सर्वोत्तम तथा उच्च श्रेणी का प्रभावक है। संखिया, अफीम, हरा तूतिया, एलवा, फिटकड़ी, कुचले का चूर्ण, नौशादर, हुक्के का मैल इन सब औषधियों को समभाग लेकर बारीक कर लें और आक के दूध की ३ भावना दें। अर्थात् ३ बार सूखी भीगी करें। पुनः बारीक पीस करके शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—प्रथम दंशित स्थान से थोड़ा ऊपर अच्छी प्रकार कसकर बन्द लगा दें ताकि जहर शरीर में प्रवेश न करने पावे। पुनः सींगी लगाकर विष को निकालकर दंशित स्थान पर २ रत्ती औषधि किसी लोहे की चीज से मल दें। यदि शरीर में विष का प्रभाव हो चुका हो तो १ रत्ती औषधि पानी में घोल कर पिला दें। वमन द्वारा विष दूर हो जायगा। यदि रोगी नितांत अचेत हो तो उसके गले में औषधि टपकादें और थोड़ी सी नाक में फूंक दें। शीघ्र ही चैतनता आ जायगी। यह दवा सर्प दंशित के लिए सर्वोत्तम अगद है। इसमें निस्संदेह सर्प का विष दूर हो जाता है।

८४—अगद अलरक (हलका कुत्ता)

कुत्ते के काटे हुए क्षत पर प्रतिदिन आक का दूध लगाते रहें और घाव भी पूरित (बन्द) न होने दें। इस प्रकार ४० दिवस पर्यन्त करते

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रहें। ईश्वरेच्छा से कुत्ते का विष नितान्त दूर हो जायगा और उसके उन्मादित होने की आशंका न रहेगी।

८५—अद्भुत कथा

हमारे प्रान्त में अलरक का काटा हुआ एक मनुष्य पागल हो गया था। घर के सम्बन्धियों ने उसे श्रृंखला (जंजीर) से जकड़ रखा था और उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। क्योंकि इस अवस्था में पहुंचने पर कभी किसी को ठीक होते नहीं देखा गया। इतने में एक साधू महात्मा कहीं से पधारे और उनके द्वार पर भिक्षा के लिए अलख जगाई। उस महात्मा ने रोगी को श्रृंखला से बंधा हुआ देखकर उसका कारण पूछा, इस पर घर के सम्बन्धियों ने कहा कि इसको अलरक ने काटा था, अब यह उसके विष से पागल हो गया है। साधू ने कहा कि यदि आप कहें तो मैं इसकी कुछ चिकित्सा बताऊं, परन्तु प्रतिज्ञा करो कि यदि इसकी मृत्यु हो जावे तो मुझे दोषी न समझा जावे। उन्होंने कहा कि हमें तो यह आसन्न मृत्यु प्रतीत होता ही है। हम आपको कोई दोष न देंगे। आप अपनी चिकित्सा सहर्ष करें। कदाचित (डूबते को तिनके का सहारा) कुछ आराम होने की झलक दिखाई दे। तथाच साधु ने कहा कि शीघ्र ही २५० ग्राम अर्क दूध, उतना ही श्वेत भसरा के पत्तों का पानी उपस्थित करो। बस थोड़ी ही देर में दोनों औषधियां उपस्थित कर दी गईं। साधु महाराज ने दोनों को मिलाकर रोगी को पिला दिया। बस क्या था, औषधि के अन्दर पहुंचते ही अति वेग से वमन होनी आरम्भ हो गई। एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी, इसी प्रकार कई एक वमन हुईं। लोग प्रतीक्षा कर रहे थे कि ईश्वर की कृपा से अब क्या होता है। थोड़ी ही देर के पश्चात रोगी अपने आपको जन्जीर से बंधा हुआ देखकर आश्चर्य से पूछने लगा कि मुझको इस प्रकार बांध क्यों रखा है। लोगों ने इसका हेतु बतलाया तो वह कहने लगा कि मैं तो अब नितांत स्वस्थ हूं। मुझे जन्जीर से मुक्त कर दें। चुनाचे शीघ्र ही उसे मुक्त कर दिया गया और वह नितांत स्वस्थ हो गया। यह कथा बिल्कुल सत्य है। यदि कहीं अवसर मिले तो इसका अवश्य अनुभव करना चाहिए। सफेद मसरा (हस्ती शुण्डी) एक सर्वत्र मिलने वाली बूटी है। जो चैत में उत्पन्न होकर श्रावण तक रहती है और अन्य बूटियों की अपेक्षा वर्षा से जल जाती है। परन्तु रुक्ष भूमि में खूब फूलती है। यह बूटी प्रायः मरु भूमि में मिलती है। हमारे प्रान्त में अत्यधिक उत्पन्न होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज्वरों का वर्णन

ज्वर एक वह प्रसिद्ध रोग है, जिससे बालक, वृद्ध सभी परिचित हैं। इसके अनन्त भेद हैं। जिनमें से कई प्रकार के ज्वरों का सनिदान वर्णन और उनकी चिकित्सा तथा अच्छे २ प्रयोग हमारी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणि" में वर्णन किये जा चुके हैं। परन्तु आक भी कई ज्वरों की एकमात्र अचूक औषधि है, वरंच अकसीर कही जाती है, अतः यहां ज्वरों के उत्तमोत्तम और चुने हुए योग लिखे जाते हैं। ईश्वर करे आप इनसे लाभान्वित हों और सच्चे हृदय से मुझे आशीर्वाद दें। जिसकी मुझे अधिक आवश्यकता है।

शीत ज्वर (कम्पज्वर)

जो ज्वर शीत लगकर चढ़ता है उसके लिए आक अतीव लाभप्रद वस्तु है। इसके सेवन से सर्दी तो प्रायः पहिले दिन ही दूर हो जाती है।

८६—शीत ज्वर नाशक वटी

आक की जड़ की छाल को लेकर छाया में सुखायें। जब नितान्त सूख जावे तब सूक्ष्म पीसकर उससे आधी पिसी हुई काली मिर्च मिलादें और गाय के दूध से पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें। रोगी को ज्वर होने से घन्टा डेढ घन्टा पूर्व १ से २ गोली तक पानी से खिलावें। अधिक से अधिक तीन दिन में ज्वर उतर जायेगा।

८७—शीत ज्वरों को रोकने की अद्भुत विधि

एक अविकसित अर्क पुष्प लेकर गुड़ में लपेटकर ज्वर आने के १ घण्टा पूर्व रोगी को खिला दें। ३ दिन के सेवन से बल्कि इससे पूर्व ही ईश्वर कृपा से शीत ज्वर उतर जायगा। अतीव लाभप्रद चुटकला है।

८८—ज्वर की तृतीय औषधि

आक की जड़ की राख एक भाग, खांड ६ भाग मिलाकर रक्खें और रोगी को ज्वर होने से २ घण्टा पहले १ से २ चुटकी तक गर्म पानी के साथ दें। ईश्वर की कृपा से ज्वर का चिन्ह भी न रहेगा।

८९—चढ़े हुए ज्वर को उतारने का प्रयोग

आक की जड़ की छाल छाया में सुखाकर बारीक पीस लें और उसकी रंगत बदलने के लिए थोड़ा सा गेरू बारीक पीसकर मिलादें। फिर शीशी में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय २॥ रत्ती औषधि की एक पुड़िया रोगी को गर्म पानी से दें। ईश्वर कृपा से प्रसीना आकर बुखार उतर जायेगा, क्योंकि इसकी छाल उच्च श्रेणी की प्रस्वेदकारक है।

९०—सर्व ज्वर नाशक अकसीर

हरताल तथा अभ्रक की भस्में ज्वर के लिए अत्यन्त ही लाभकारी हैं। उनको भस्मों के अध्याय में देखकर बना लें।

तिजारी ज्वर

जो ज्वर एक दिन छोड़कर दूसरे दिन चढ़ता है उसको तृतीयक ज्वर कहते हैं। उसको रोकने के लिए निम्न प्रयोग लाभकारी हैं।

९१—प्रथम योग

निम्नलिखित योग को हम प्रायः ही काम में लाते और ईश्वर कृपा से सफल होते हैं। आक के फूल आवश्यकतानुसार लेकर १—१ लौंग को गुड़ के अन्दर लपेटकर गोलियां बनायें। ज्वर के रोगी को १ गोली ज्वर के २ घण्टे पूर्व और इसी प्रकार घण्टे घण्टे के पश्चात् दो गोली और खिला दें प्रथम तो ज्वर पहली ही बार रुक जायगा अन्यथा दूसरी बार तो अवश्य ही उतर जायगा।

९२—द्वितीय योग

यह योग एक पैंशनर डिप्टी सुपरिन्टेनडैंट (Deputy Superintendent) ने चिरकाल के अनुभव के पश्चात प्रकाशनार्थ दिया था। ज्वर होने से दो घण्टा पूर्व आक की १॥ कोंपल गुड़ में बन्द करके गोली बनाकर दे दें। आशा है कि ईश्वर कृपा से ज्वर का आना प्रथम दिवस ही रुक जायगा। अन्यथा पुनः दूसरी बार दूसरे दिन सेवन करावें। लाभप्रद हैं।

९३—मीठी क्वीनीन

योरुपियन लोगों को अभिमान है कि हमने ज्वरों के लाभ के लिए क्वनीन एक ऐसी वस्तु निकाली है, जिसकी संसार भर में किसी औषधि से तुलना नहीं की जा सकती। उनको अपने आविष्कार पर इतना विश्वास है, कि वे क्वीनीन के अतिरिक्त किसी और औषधि को सेवन करना पसन्द नहीं करते, चाहे २० दिवस पर्यन्त लाभ न हो। परन्तु मैं कहता हूं कि हमारे देश में ऐसी असंख्य वस्तुयें हैं, जो कि क्वीनीन से किसी तरह कम नहीं। अथच अर्क दुग्ध से भी एक ऐसी औषधि निर्माण हो सकती है जो कि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अति लाभकारी तथा मीठी है। ज्वर की बारी रोकने में क्वीनीन से कई गुणा बढ़कर है, बनाकर परीक्षा करें। अर्क दुग्ध १२ ग्राम, मिश्री दस ग्राम खरल में डालकर इतनी देर तक खरल करें कि नितांत रुक्ष चूर्ण हो जावे। फिर इसको शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—आधी रत्ती से दो रत्ती तक। चढे हुए ज्वर को उतारती और उतरे हुए को दुबारा चढ़ने से रोकती है। सारांश यह है कि बड़े विश्वास की वस्तु है। प्रत्येक वैद्य व हकीम को बनाकर सेवन कराना चाहिए। मलेरिया (विषम ज्वर) के लिए क्वीनीन से बढ़कर सिद्ध होगी।

९४--हर प्रकार के पुराने ज्वर

इससे दैनिक व पुराना ज्वर दूर हो जाता है। आक के ताजा फूल १२ ग्राम, श्वेत अभ्रक कैंची से कतरा हुआ १२ ग्राम। दोनों को पत्थर के कूंडे में डालकर यहां तक खरल करें कि काजल के तादृश्य बन जावे।

सेवन विधि—मात्रा ४ रत्ती गुड़ के साथ या शर्बत या मिश्री आदि से दें। इससे पुराना ज्वर भी दूर होगा। गर्म चीजों से परहेज। भोजन में मूंग की दाल व दलिया दें।

विभिन्न २ रोगों की चिकित्सा

नीचे भिन्न २ रोगों के योग लिखे जाते हैं जो कि सबके सब आक से ही निर्माण होते हैं। दयालु ईश्वर से प्रार्थना है कि इन योगों को सेवन करने वाले रोगियों को स्वास्थ्य लाभ हो।

कुष्ठ

यह वह जटिल रोग है जिससे स्वय वैद्य भी परमात्मा से अपनी रक्षा के हेतु प्रार्थना करता है। इसका पूर्ण वर्णन करने का समय तथा स्थान नहीं क्योंकि इसके अनन्त भेद हैं। यहां केवल इस रोग को दूर करने वाले दो प्रयोग लिखे जाते हैं।

९५--कुष्ठ का प्रयोग

अर्क पुष्प एक ही क्षुप से लेकर छाया में सुखाकर और बारीक पीसकर रखें। पहिले दिन ३ ग्राम, दूसरे दिन ६ ग्राम, तीसरे दिन ९ ग्राम, चौथे दिन १२ ग्राम कुंए के ताजा पानी से पूरे ३७ दिवस पर्यन्त खिलाते रहें। पुन: ३—३ ग्राम प्रतिदिन घटाते जावें और ३ ग्राम पर लाकर छोड़ दें। कुल ४१ दिन में औषधि खत्म होगी। सेवनकाल में भोजन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

में गेहूं व चनों की देसनी रोटी घृत के साथ खाने को दें और घृत का अधिक सेवन कराते रहें। पानी हमेशा एक ही कुंए का पिलाना उचित है, खाने को और कुछ न दें। आशा है कि एक ही चिल्ला हद दूसरे चिल्ले में आराम होगा। औषधि सेवनकाल में यदि रक्तातिसार अथवा साधारण दस्त होने लगें तो घबरायें नहीं, औषधि सेवन कराते रहें।

उपदंश

९६- उपदंश का सरल प्रयोग

आक की जड़ का कोयला बनाकर उसको बारीक पीसकर उसमें समभाग खांड व गाय का घृत मिला दें और प्रतिदिन ६ ग्राम खिलाते रहें। ईश्वर की कृपा से ८–१० दिन में लाभ हो जायगा।

९७--उपदंश

आक की जड़ की छाल १२ ग्राम, काली मिर्च ६ ग्राम बारीक पीसकर १२० ग्राम गुड़ में मिलादें और चने के बराबर गोलियां बनालें। पहले कोई रेचन देकर फिर २ से ३ गोली प्रतिदिन पानी के साथ खिलाया करें। इससे आरोग्यता प्राप्त हो जायगी।

९८--उपदंश का अत्युत्तम योग

जो मनुष्य उपदंश के कारण बिल्कुल दुर्बल हो गया हो, 'जोड़ों में दर्द हो। दशा भी गठिया तक पहुंच गई हो तो ऐसे समय पर निम्नलिखित योग अत्यन्त अकसीर सिद्ध होगा। आक की जड़ का छिल्का छाया में सुखाया हुआ बारीक पीसकर उसमें समभाग खांड मिला दें। मात्रा ३ ग्राम से ६ ग्राम तक ताजा पानी से देते रहें। एक मास पश्चात आक के पंचांग के क्वाथ से दें, जब उपदंश का सम्पूर्ण विष दूर होकर जोड़ों की पीड़ा दूर हो जावे और चलने फिरने की शक्ति उत्पन्न हो जावे-उस समय छोड़ द। अत्यन्त ही अनुपम और सरल योग है। आवश्यकता के समय सेवन करके लाभ उठावें।

९९--प्लेग

रोगी को आक के पत्तों का भेद न देकर खिलाना आरम्भ करें, यावत कटु प्रतीत न हो निरन्तर खिलाते रहें। जब रोगी कहे कि कटु है, तब खिलाना बन्द कर दें। ईश्वर की कृपा से अवश्य आराम होगा। पत्तों का कटु लगना आरोग्यता का चिन्ह है' यह मेरा अनुभूत है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१००—कच्चे पारे को मूत्र द्वारा निकालना

यदि किसी को पारद खिला देने के हेतु से कष्ट हो तो उचित है कि आक की जड़ का कोयला और मिश्री समभाग पीसकर रखें और इसमें से ६ ग्राम प्रतिदिन खिलाया करें। इससे सब पारद मूत्र मार्ग से निकल जाता है।

१०१—अद्‌भुत मंजन

आक के पत्तों को छाया में सुखाकर पीसलें और समभाग काली-मिर्च मिलादें। आवश्यकता के समय दांतों पर मलने से दांत मुक्ता के समान उज्जवल हो जाते हैं।

१०२—एड़ी का शूल

आक के फूलों को जोश देकर एड़ी पर बांधें। इससे एड़ी की पीड़ा दूर होगी।

१०३—वात रोग (नहारवा)

आक के अविकसित पत्ते ७ गुड़ ६० ग्राम दोनों को कूटकर जंगली वेर के बराबर गोलियां बनालें। मात्रा एक गोलीं प्रातः और मध्यान्ह और सायंकाल पानी के साथ दें, अवश्य लाभ होगा।

१०४—वात गुल्म (वायु गोला)

आक की कलियां २५ ग्राम, अजवायन १२ ग्राम बारीक पीसकर इसमें १५ ग्राम खाँड मिला दें। प्रतिदिन एक ग्राम दवा पानी से दिया करें। अत्यन्त लाभप्रद है।

१०५—जलना

जब कोई अग जल जावे तो तत्क्षण ही आक के पत्तों को गर्म करले निचोड़ लें और वह रस ऊपर लगावें। लगाते ही आराम प्रतीत हो जायगा।

१०६—छाला (आबला)

पैदल यात्रा करने से प्रायः पैरों में छाले (आबले) पड़ जाया करते हैं, उन पर आक का दूध लगाने से लाभ होगा।

१०७—बिच्छू काटे का अगद

अर्क क्षार २ रत्ती, शुद्ध पारद १ रत्ती हथेली पर रखकर मुंह के थूक से मलकर दंश पर लगावें। लगाते ही आराम हो जाता है। मानो जादू है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कोष्ठबद्धता (कब्ज)

आक की जड़ को पानी में पीसकर पेट पर लेप करने से कब्ज खुल जाती है।

१०८–मासिक धर्म खोलने की गोली

आक की जड़, काली मिर्च समभाग बारीक पीसकर चने के बराबर गोलियां बनालें। मात्रा एक गोली गर्म पानी से दें।

१०९–बालकों की अनन्त व्याधियों पर अमृत शर्बत अर्क

आक के हरे पत्तों का पानी निकाल लें, फिर इस पानी को रखकर स्वच्छ कर लें, अर्थात् पानी को भली भांति निथार लें। जब पानी निथर जावे तो उस पानी में पुरानी खांड मिलाकर यथा विधि शर्बत तैयार करलें और ठंडा होने पर ऐसी बोतलों में भरें, जो बिल्कुल स्वच्छ और सूखी हों। क्योंकि पानी की लाग से प्रायः शर्बत बिगड़ जाया करता है। पुनः निम्नलिखित विधि से सेवन करावें।

सेवन विधि—६ मास के बालक को २ बूंद, १ साल के बच्चे को ४ बूंद, २ साल के बच्चे को ६ बूंद, ८ वर्ष के बच्चे के लिए ७ बूंद। दिन में दो बार ऋतु की अपेक्षा से शीतल या उष्ण जल से दिया करें।

निर्बल, दुबले, पतले बालक इसके सेवन से मोटे ताजे हो जाते हैं। दांत सरलतापूर्वक निकल आते हैं और उदर पीड़ा, अफारा, बदहज्मी दस्त,, कब्ज, लार पड़ना, मुंह पकना, फोड़े फुन्सियां, कास, ज्वर, डब्बा आदि पर अकसीर है, तथा जिस स्त्री के बालक सूखकर मर जाते हों, उसको गर्भावस्था में ही दस-दस बूंद प्रातः सायं पिलाया करें। यह शर्बत उस समय तक पिलाते रहें जब तक कि बालक माता का दूध पीना न छोड़ दें। बरंच बच्चे को भी उपरोक्त मात्रा में पिलाते रहें। यह प्रयोग मेरे परम मित्र दीवान बोधाराम साहिब हकीम की कृपा से प्राप्त हुआ था।

११०–अकसीरी तिला

आक का दूध, शहद असली, घृत तीनों को समभाग लेकर निरंतर ४ घण्टे तक खरल करके शीशी में सुरक्षित रक्खें और निर्बल से निर्बल मनुष्य के सीवन सुपारी को बचाकर उसकी मालिश करावें। जब जज्ब हो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जावे तब ऊपर पान का या अरण्ड का पत्ता बांध दें। इस प्रकार एक सप्ताह तक करें। फिर १५ दिन छोड़ कर उसी प्रकार पुनः करें। इससे गया गुजरा नामर्द भी परमात्मा की कृपा से स्वस्थ हो जाता है। यदि प्रयोग काल में फुन्सियां निकल आवें तो उन पर जला हुआ घृत लगाया करें। इस तिला से असंख्य रोगियों ने स्वास्थ्य लाभ किया है।

१११–बंधेज का प्रयोग

यह प्रयोग प्राचीन वैद्यों द्वारा प्रस्तावित है। आक का दूध, काले रंग की गाय का दूध और भेड़ का दूध, तीनों को मिलाकर दोनों हाथों की हथेलियों और पांवों के तलुओं पर मालिश करावें। जब बिलकुल सूख जावे तब प्रवृत हों। इससे बहुत बधेज होता है।

॥ प्रथम भाग समाप्तम् ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्क गुण विधान

★ द्वियीय भाग ★

आक से निर्माणित होने वाली भस्मों का वर्णन

प्रत्येक रस शास्त्री इस बात को जानता है कि आक एक ऐसी बूटी है, जिससे प्रत्येक धातु, उपधातु रत्नोपरत्न प्रभृति की अत्योत्तम भस्म बनाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त रसायनी (कीमियागर) लोग भी इससे पूरा २ काम लेते हैं, क्योंकि इससे प्रत्येक वस्तु को स्थित (कायम) मोम सदृश (मोमिया) और तेल रूप बनाया जा सकता है। इससे कई भस्में तो अत्यन्त ही सरलता से बन जाती हैं, परन्तु कई सन्यासीं अकसीरें तैयार करने में पर्याप्त परिश्रम की आवश्यकता होती है। किन्तु वह परिश्रमपूर्वक बनाई हुई अक्सीरें सम्पूर्ण कष्ट को भुला देती हैं। वह अपनी तासीर में इस कदर बढी चढ़ी होती हैं कि अपना चमत्कारिक प्रभाव तत्क्षण दिखला देती हैं। जो रोगी चिरकाल तक चिकित्सा कराते २ निराश हो चुका हो,ऐसी अवस्था में ऐसी अकसीर की एक मात्रा से ही उस रोगी की जान में जान आ जाती है और अपने चमत्कारिक प्रभाव से रोगी को अपने ऊपर मुग्ध बना लेती है। इस प्रकार के कई एक प्रयोग आगामी पृष्ठों पर अंकित किये जायेंगे।

यदि न्याय की दृष्टि से देखा जाये तो निसंदेह यह प्रकरण एक अमूल्य खजाना है, जिसमें हमने अपनी उदारवृत्ति से असंख्य गुप्त प्रयोग रूपी रत्न भर दिये हैं। कई प्रयोग तो पुस्तक के मूल्य से शतगुणा अधिक हैं। अन्त में उस परम पिता जगदीश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको इस भाग से लाभ उठाने की शक्ति प्रदान करे। अस्तु !

लोहमय धातुओं का परिचय

धातु खनिज पदार्थ है जिनको सर्व साधारण लोह या धातुओं के नाम से परिचय देते हैं। जो कि अग्नि ताप से कोमल होकर पिघल जाती है और चोट लगने से बढने लगती है। इन धातुओं की भस्म इसी कामना से बनाई जाती है कि यह अपनी कठोरता को त्याग कर इतनी कोमल और सूक्ष्म हो जावे कि मनुष्य के शरीर में जज्ब हो जाने के योग्य बन जायें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चुनांचे इसी हेतु से लोग स्वर्ण और चांदी के पत्र (वर्क) तैयार करते हैं। किन्तु जहाँ तक मेरा विचार है पत्रों (वर्कों) से मनोर्थ पूर्ण नहीं हो सकता। इसके लिये तो उत्तमोत्तम भस्म बनाना ही श्रेयकर है।

आक एक ऐसा अनुपम क्षुप है कि जिससे प्रत्येक धातु उपधातु की अत्यन्त सरलता से भस्म बनाई जा सकती है। अतएव अगामी पृष्ठों में प्रत्येक धातु उपधातु की भस्म बनाने की क्रिया वर्णन की जाती है।

चादी भस्म

चांदी की भस्म हृदय को बल देने वाली होती है। इसके अतिरिक्त बाजीकर, वीर्य बर्द्धक तथा सभी अवयवों को बल पहुचाने के विशेष गुण इसमें है। नीचे चांदी की भस्म बनाने की कई एक विधियां लिखी जाती हैं।

११२–रोप्य भस्म

चांदी का बुरादा १२ ग्राम लेकर उसमें ५० ग्राम आक का दूध डालकर खरल करें। जब सम्पूर्ण दुग्ध शुष्क हो जावे तब उसका गोला सा बनाकर एक कूजे में बन्द करके दस किलो उपलों की आंच दें। दूसरे दिन भी पूर्वोक्त विधि से ५० ग्राम आक का दूध डालकर पुनः पीसें और गोला बना कर सराव में बन्द करके फूंक दें। इसी प्रकार ३ बार खरल करें और पुट दें। काले रंग की भस्म तैयार होगी। शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—एक रत्ती भस्म ४ ग्राम शहद में मिलाकर सेवन करावें। श्वास तथा कास के लिये लाभप्रद है। बाजीकर तो उच्च श्रेणी की है ही।

११३–चाँदी भस्म नं० २

सफेद गुंजा १२५ ग्राम ३ बार आक के दूध में भिगोवें और सुखावें और पुनः लुग्दी बनाकर इसमें १२ ग्राम चांदी का अत्यन्त सूक्ष्म पत्र रखकर निर्वात स्थान में १० किलो उपलों की अग्नि दें। फिर पूर्वोक्त विधि से गुंजाओं को ३ बार आक के दूध में भींगी व सूखी करके उसकी लुगदी में वही पत्र रखकर १० किलो उपलों की अग्नि दें। इसी प्रकार ३ आंच देने से चांदी का फूला बन जायेगा। पीस कर रखें। मात्रा १ रत्ती भस्म मक्खन में खिलावें। उच्चश्रेणी की बाजीकर है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ताम्र भस्म

यदि उचित रीति से ताम्र भस्म बनाई जावे तो निसन्देह सब भस्मों की रानी है और अत्यन्त ही वाजीकर तथा अनुपम वस्तु बन जाती है। परन्तु अपक्व रहने से हानि की सम्भावना है। आक के द्वारा ताम्र की अत्यन्त ही बढ़िया और निर्दोष भस्म तैयार होती है। नीचे ताम्र भस्म बनाने की कई विधियां लिखी जाती हैं।

११४–ताम्र भस्म नं० १

ताम्र का चूरा २५ ग्राम किसी न घिसने वाले पक्के खरल में डालकर थोड़ा २ आक का दूध मिलाकर खरल करते रहें। जब दूध खुश्क हो जावे तब और डाल दिया करें। इसी प्रकार १२५ ग्राम दूध शोषण करादें। फिर गोला सा बनाकर सरावों में रखकर बिना कपड़मिट्टी किए ही १५ किलो उपलो की आंच दें। शीतल होनेके पश्चात् निकाकर पुनः पूर्वोक्त विधी से खरल करके १५ किलो उपलों की आंच दें। जब बिल्कुल मुलायम और रेखांकित भस्म बन जावे तब इसको शीशी सुरक्षित में रखें।

सेवन विधि—२ चावल से ४ चावल तक मक्खन में अथवा दही में दें। अत्यन्त ही वाजीकरण है और नामर्दों के लिए अमृत है। इसके अतिरिक्त अर्धाङ्ग, अर्दित (लकवा) सन्निपात आदि के लिए भी अत्युत्तम रामबाण औषधि है।

उत्तम भस्म की परीक्षा

ताम्र भस्म लेकर थोड़े से खट्टे दही में मिलाकर रख दें। यदि भस्म खराब होगी तो इसमें नीली रंगत प्रकट हो जायगी अन्यथा नहीं। इस विधि से भस्म की परीक्षा करलें।

चेचक के फोले की अकसीर दवा

११५–ताम्र भस्म नं० २

पीली हरताल १२ ग्राम लेकर उसमें थोड़ा २ आक का दूध डालकर खरल करते रहें। जब ४८ ग्राम दूध खत्म हो जावे–तब राजा शाही पैसे को कूटकर पत्रा सा बनालें और उस पर उपरोक्त हरताल का लेप करें और फिर २५० ग्राम आक के पत्तों का कल्क बनाकर उसके मध्य में उस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ताम्रपत्र को रख दें। फिर इस संग्रह के ऊपर ५०० ग्राम कपड़ा लपेट दें (कपड़ा चाहे पुराना ही हो) और गजपुट की आंच दें। इसी प्रकार दो आंच और दें। फूली हुई नीले रंग की भस्म तैयार होगी। पीसकर शीशी में रखें।

प्रयोग विधि—रात के समय आंखों में दो दो सलाई डालकर सो जाया करें। आंखों का फोला चाहे चेचक का ही क्यों न हों, इससे १७ या १८ दिन में दूर हो जाता है।

११६–श्वेत वर्ण ताम्र भस्म नं० १

योगी और सन्यासी लोग इस भस्म को ऐसे वनों में जहां आक के क्षुप (पौधे) अधिकता से मिलते हों—निर्माण करते हैं। दूसरे इस क्रिया को करने के लिए न्यूनातिन्यून ६ मनुष्यों का होना आवश्यक है। बन में एक भट्टी बनावें और उस पर लोहे की कड़हाई रखकर ऊपर एक ऐसा बर्तन लगावें जिसमें छिद्र हों, ताकि उनमें से आक का दूध बूंद २ होकर गिर सके। अब इस कढाई में पुराने सिक्के के (जिन पर शेर आदि का चित्र बना हुआ होता है) पांच पैसे पृथक २ रख दें और फिर ऊपर वाले बर्तन में आक का दूध भर दें और कढाई के नीचे अग्नि निरन्तर जलाते रहें। जब आक का दूध खत्म होने को आवे तो और डाल दिया करें। इस भट्टी के पास दो मनुष्य दिन में और रात्रि में अपनी ड्यूटी नियत कर लें और शेष दो मनुष्य अर्क दुग्ध संग्रह करते रहें। इसी प्रकार प्रतिदिन क्रम से दो सप्ताह पर्यन्त नीचे अग्नि जलाते और अर्क दुग्ध बूंद २ टपकाते रहें। पांचों पैसों की बताशे की भांति खील होकर श्वेत वर्ण ताम्र भस्म तैयार हो जावेगी, पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। इसका नाम है असली तामेश्वर।

सेवन विधि—मात्रा आधे चावल से १ चावल तक मक्खन आदि से दें। अत्यन्त ही वाजीकर अकसीर है। इसके अतिरिक्त निराश हुए रोगियों के रोग को समूल नष्ट कर देता है। ऐसे प्रयोग को निर्माण करना हमारा काम नहीं है। इसको सन्यासी लोग ही बना सकते हैं और एक बार बनाकर आयुभर के लिए निश्चित हो जाते हैं। लोग कहा करते हैं कि पता नहीं कि सन्यासी लोगों के हाथों में क्या शक्ति होती है कि उनकी तिनका भर राख से ही आरोग्यता प्राप्त हो जाती है। परन्तु उन्हें क्या मालूम

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कि इस राख को बनाते हुए उन्होंने कितना कठिनतम परिश्रम और भांति २ के कष्टों को सहन किया है। बस ! अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। बाजीकरण के इच्छुकों के लिए अनुपम उपहार है।

तांबे की खराब भस्म को ठीक बनाने की विधि

ताम्र की प्रत्येक दूषित भस्म निम्नलिखित विधि से शुद्ध बनाई जा सकती है। यह एक भेद की बात है जिसको बहुत ही कम लोग जानते हैं। भस्म को अर्क दूध में खरल करके कूजे में बन्दकर दो किलो उपलों की अग्नि दें और शीतल होने पर पुनः इसी प्रकार करते रहें, जब तक दही में रंग न बदले। बस भस्म ठीक हो गई। शीशी में रख दें। यथाविधि सेवन करावें।

फौलाद भस्म

फौलाद की भस्म अत्यन्त ही ताकत देने वाली होती है, परन्तु इसका मिलना कठिन है। इसलिए वैद्य लोग फौलाद के स्थान में इस्पात अथवा लोह या मुंड लोह से काम लेते हैं। परन्तु हमने इसका गुप्तभेद "घृत कुमारी गुण विधान" में प्रकट कर दिया, जिससे सरलतापूर्वक फौलाद संग्रह किया जा सकता है।

११७–फौलाद भस्म

फौलाद का चूरा १२ ग्राम, किसी चीनी के बर्तन में रखकर ऊपर २५ ग्राम आक का दूध डाल दें और बर्तन को ढककर रखदें। इस प्रकार तीन बार दूध डालकर सुखायें। कुल ७५ ग्राम दूध खर्च होगा। तद्पश्चात आक के १२ पत्तों में लपेटकर १ छोटे से कूजे में डालकर उसका मुंह बन्द कर दें। फिर कपड़मिट्टी करके गढे में ४ किलो उपलों की अग्नि दें, फौलाद की भस्म बन जायगी है।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती मक्खन में लपेटकर खिलावें, रक्त को उत्पन्न करती है और बलकारक है।

मंडूर भस्म

मंडूर भस्म यकृत को स्वस्थ करने के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। मंडूर जितना पुराना हो, भस्म बनाने के लिए उतना ही श्रेष्ठ है। अतः पुराने थेड़ों में से इसे प्राप्त करना उचित है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्क गुण विधान

११८—मंडूर भस्म नं० १

आक की जड़ की छाल २५० ग्राम धूल मिट्टी से स्वच्छ करके सूक्ष्म पीस लें। फिर आक के दूध में भिगोकर सुखालें। तद्पश्चात एक कूजे में बिछाकर ऊपर शुद्ध किया हुआ १२५ ग्राम मंडूर रख दें। उसके ऊपर ५०० ग्राम भांग का चूर्ण डालकर उसके ऊपर अवशेष आक की छाल का द्रव्य डालकर बर्तन को कपड़मिट्टी करके डेढ मन उपलों की आंच दें और ८ पहर के पश्चात् निकालकर सूक्ष्म पीसकर रखें।

सेवन विधि—२ रत्ती से ४ रत्ती तक दही में मिलाकर दिया करें। यकृत दोष, आमाशय दोष, उदर रोग, पुराने अतिसार, संग्रहणी और पांडु रोग आदि के लिये श्रेष्ठ है।

११९—मंडूर भस्म की द्वितीय विधि

मंडूर को बारीक पीसकर पानी से यहां तक धोवें कि चमकने लगे। फिर उसको तीन बार आक के दूध में भीगा सूखा करें और कूजे में बन्द तथा कपड़मिट्टी करके १० किलो उपलों की अग्नि में फूंक दें। ठण्डा होने पर निकालकर सारे दिन आक के दूध में तर करके आग दें। इसी प्रकार तर करके अग्नि देते रहें, जब तक कि अत्यन्त कोमल भस्म तैयार न हो जावे। यकृत की व्याधियों के लिये अकसीर है। मात्रा १ रत्ती।

१२०—नाग भस्म

सीसे को पिघलाकर सात बार घृत में बुझावें और पुनः साफ करके कड़ाही में डालकर चूल्हे पर रक्खें और नीचे खूब तीव्र अग्नि जलायें। जब पिघलकर पानी की तरह हो जावे तब इसमें आक की ताजा जड़ फिराते रहें। अनुमानतः चार पहर में पीले रग की भस्म तैयार होगी। इसको छानकर इसके समभाग छोटी इलायची पीसकर मिलादें। सुजाक और प्रमेह को लाभदायक है। मात्रा २ रत्ती।

१२१—बंग तथा नाग भस्म

मधुमेह (डायबीटीज) बहुमूत्र की अनुपम औषधि

वंग तथा नाग समभाग किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर आग पर रखें और उनके पिघल जाने पर आक की ताजा जड़ फिराते रहें। अग्नि खूब तीव्र जलादें। जब भस्म हो जावे तब निकालकर कूजे में कपड़मिट्टी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करके मन भर उपलों की आग दें। पीले रंग की भस्म तैयार होगी। छानकर रखें।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक बताशे या मक्खन में दें। बहुमूत्र और बूंद २ पेशाब आने की उत्तम औषधि है। हमारी अनुभूत है। यदि तरबूज खिलाकर यह भस्म खिलादी जाय तो एक बार से अधिक मूत्र न होगा।

१३२–बंग भस्म

उपरोक्त विधि से बंग (कलई) को पिघलाकर उसमें आक की ताजा जड़ फिराते रहें। भस्म बन जायगी। यह भस्म प्रमेह के लिए अतीव लाभकारी है।

अग्नि से उड़ने वाले रस, उपरसों की भस्में

रसोपरस अर्थात् उपधातुओं से यह अभिप्राय है कि वह चोट लगाते ही खण्ड २ हो जाती हैं। (स्वर्ण, रोप्य, नाग, तांवा आदि धातुओं की भांति बढ़ती नहीं) और अग्नि में डालने से या तो पिघलकर जलने हैं या धूम्र रूप होकर उड़ने लगती हैं। यथा गंधक, पारद हरताल, सिंगरफ, सोमलखार, दारचिकना, रसकपूर आदि। इन सबको भस्म करने तथा स्थाई बनाने के लिए आक एक सर्वोत्कृष्ट एवं आश्चर्यजनक वस्तु है। इससे सम्पूर्ण उड़ने वाले द्रव्यों की भस्म बनाई जा सकती है और उन्हें स्थायी बनाया जा सकता है। अत: नीचे प्रत्येक उपरस की आक के संयोग से भस्म बनाने की विधियां सविस्तार वर्णन की जाती हैं।

पारद

इसके अनेक नाम हैं। यथा पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, शिव वीर्य, रस, सूत, शिवाहृय, अमर, अमृत, शिव बीज दिव्यरस, रसायन, श्रेष्ठ मृत्युनाशन, हेमनिधि, त्रिनेत्र, रोपण स्वामी इत्यादि हिन्दी में पारा, फारसी में सीमाब और अंग्रेजी में मर्क्युरी MERCURY कहते हैं।

१२३–पारद भस्म बनाने की विधि

पारद भस्म बनाना कोई सरल काम नहीं है, तथापि नीचे एक ऐसी विधि लिखी जाती है जिससे पारद भस्म तैयार हो जाती है।

प्रथम आक को जलाकर क्षार बना लें। फिर तीन अधन्नियां (रुपये

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

के आकार का बड़ा पैसा जिसका मूल्य दो पैसे होता था) लेकर उनपर खटाई द्वारा एक एक ग्राम पारा चढा लें और मिट्टी की एक बड़ी कुठाली बनाकर उसमें ६० ग्राम अर्क क्षार डाल दें और उस पर एक अधन्नी रखदें। पुनः ६० ग्राम क्षार डालकर दूसरी अधन्नी रखदें। इसी प्रकार तीसरी अधन्नी रखकर ऊपर ३६ ग्राम आक का क्षार रखदें और कुठाली का मुख बन्द करके कपड़मिट्टी करके सुखा लें। फिर २५ या ३० किलो उपलों की आंच दें। पारद की पृथक भस्म होगी और अधन्नियों की पृथक भस्म हो जायगी। यह भस्म आंखों की अनन्त व्याधियों के लिए अनुपम अकसीर सिद्ध हुई है। ममीरा भी इसकी तुलना में तुच्छ है। फूला, जाला धुन्ध, दृष्टिमांद आदि के लिए लाभकारी है। केवल १ सलाई डाला करें।

सिंगरफ की भस्म

सिंगरफ एक प्रसिद्ध वस्तु है, जिसके दो भेद हैं। एक रूमी दूसरी काठी। किन्तु रूमी श्रेष्ठ है। उत्तम विधि से तैयार की हुई सिंगरफ भस्म अर्धांग, अर्दित, संधीपीड़ा, कास, श्वांस, कंपवायु, आमाशय दोष, मूत्राशय की खराबी, उपदंश आदि को अतीव लाभकारी है। विशेष करके मस्तिष्क और स्नायुओं को बल देकर शक्ति को कई गुणा बढा देती है। नपुन्सक को पुन्सक बना देना, मुख की आभा को लाल बना देना सिंगरफ भस्म का ही काम है। यह अत्यन्त वाजीकरण होती है। अब हम नीचे आक के द्वारा सिंगरफ की भस्म बनाने की कई विधियां निवेदन करते हैं। इनको बड़ी सावधानी से तैयार करना उचित है। क्योंकि सिंगरफ में गंधक तथा पारे का संयोग होने के हेतु थोड़ी सी असावधानी से ही उड़ जाया करती है और कूजे में केवल २—४ रत्ती बूटी की भस्म छोड़ जाया करती है तभी तो एक कवि ने इसके विषय में कहा है कि 'उड़ गई सोने की चिड़िया रह गया पर हाथ में' सिंगरफ की भस्म बनाने के अतिरिक्त रसायनी लोग इसको मोम के सदृश भी बना लेते हैं। जिसकी प्रशंसा में इसे "सिंगरफ मोभिया" के नाम से सम्बोधित करते हैं। इसी प्रकार कई महाशय मोमिया से भी बढ़कर सिंगरफ को तेल के रूप में बदल देते हैं। क्योंकि आक से सिंगरफ का तेल भी निकाला जा सकता है और मोमिया भी बनाया जा सकता है। इसलिए हम प्रथम सिंगरफ की भस्में पुनः इसको मोमिया बनाना और फिर तेल निकालने की विधियों का उल्लेख करेंगे। अतः आपको इन तीनों में से जो बनाना स्वीकार हो, बनाकर लाभ उठावें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सूचना—चूंकि इन विधियों में बहुत सी तो बड़ी लम्बी चौड़ी हैं और कई सरलता से तैयार होने वाली हैं। इसलिए प्रथम सरलता से तैयार होने वाली बनाना प्रारम्भ करके पुन: बड़ी क्रियाओं को हाथ लगावें ताकि आपको प्रथम बनाने का अभ्यास हो जावे।

सिंगरफ भस्म बनाने की विधियां

प्रथम सिंगरफ की भस्म बनाने की विधियां लिखी जाती हैं। पुन: मोमिया बनाने और तेल निकालने की विधियां कथन की जावेंगी क्योंकि मोमिया बनाना या तेल निकालना इससे कठिन है।

१२४--सिंगरफ भस्म न० १

सिंगरफ की डली को अर्क दुग्ध के साथ खरल करें। जब दूध खत्म होने को हो तब और डाल दें। इसी प्रकार न्यूनातिन्यून पाव भर दूध खरल द्वारा जज्ब होना चाहिए। फिर इसकी गोली बनाकर उसके ऊपर एक बालिश्त लम्बा चौड़ा खद्दर का कपड़ा (जो तीन बार आक के दूध में भीगा सूखा किया हो) लपेट दें और पुन: इस पर ७२ ग्राम सूत लपेटकर किसी बर्तन के अन्दर रखकर मकान के अन्दर निर्वात स्थान में उपरोक्त गोले को आग लगादें। अग्नि के शीतल होने पर सूत की राख को पृथक करके सिंगरफ की खील निकाल लें और शीशी में सुरक्षित रखें इस भस्म को मैंने एक बार अपने गुरू के समक्ष तैयार किया था जो ठीक सिद्ध हुआ।

सेवन विधि—मात्रा १ चावल से १ रत्ती तक मक्खन या मलाई में दें। बाजीकरण, कासनाशक तथा मुंह की शोभा को बढ़ाने वाली हैं।

१२५–सिंगरफ भस्म नं० २

सिंगरफ २५ ग्राम को ३६ घण्टे तक आक के दूध में खरल करें और पुन: टिकिया बनाकर छाया में सुखावें और मिट्टी के कूजे में अत्यन्त सूक्ष्म पिसी हुई कीकर छाल रखकर ऊपर सिंगरफ की टिकिया रखदें। पुन: पीपल की छाल का चूर्ण १२५ ग्राम रखकर कूजे को अच्छी तरह कपड़मिट्टी करके सुखालें और २ किलो जंगली ऊपलों कीं अग्नि दें। अत्योत्तम भस्म तैयार हो जावेगी।

सेवन विधि—मात्रा आधी रत्ती से १ रत्ती तक गाय के दूध से दें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह बाजीकरण है। कम्पवायु, आमवात, (गठिया) तथा सम्पूर्ण शीत रोगों के लिए लाभकारी है।

स्नायु बलकारक तथा अत्यन्त बाजीकरण

१२६–सिंगरफ भस्म नं० ३

१२५ ग्राम कुचले का चूरा करके हमामदस्ते में डालकर खूब कूट छान लें और इसको १२५ ग्राम आक के दूध में खरल करके कल्क (नुगदा) सा बना लें और इसके बीच में १२ ग्राम सिंगरफ की डली रखकर मिट्टी के कूजे में बन्द करके कपड़ मिट्टी करके सुखा लें। फिर ५ किलो उपलों में अग्नि दें और ठण्डा होने पर निकाल लें, भस्म तैयार हो गई।

सेवन विधि—यह भस्म अत्यन्त ही बाजीकरण तथा स्नायुओं (पट्ठों) को बल देने वाली है और आमाशय को बल देती है। घी दूध को जीर्ण करके शरीर को हृष्ट पुष्ट बनाती है तथा चेहरे की रंगत को लाल कर देती है।

सिंगरफ भस्म न० ४

सिंगरफ की १२ ग्राम की डली लेकर आक के पीले पत्ते लपेटकर थोड़ी सी कपड़ मिट्टी करें और केवल इतनी ही अग्नि दें कि पत्ते जलने के समीप पहूंच जायें, किन्तु सिंगरफ न जलने पावे। इस प्रकार इक्कीस बार करें। बस ! भस्म तैयार है।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती तक गाय के दूध के साथ। कास, श्वास, गठिया और नामर्दी के लिए प्रथम श्रेणी की औषधि है।

१२८–सिंगरफ भस्म नं० ५

जिसके इक्कीस दिन के सेवन से दस वर्ष तक शक्ति बनी रहेगी। आक के पत्तों का एक दोना सा बनालें और इसीं प्रकार दो दिन तक भरते रहें पुनः सूखने दें। जब रुक्ष हो जावे तो इस सिंगरफ की डली को पत्तों के प्याले (दोने) सहित नीचे ऊपर दस किलो आक के पत्तो एक मिट्टी के मटके में रखकर मुंह बन्द करके मटके को अग्नि पर रक्खें और नीचे बारह घण्टे तक खूब तीव्र अग्नि जलावें। फिर मटका शीतल होने पर सिंगरफ कीं डली निकाल लें और ६० ग्राम कूटे हुए मांस के नुग्दे में लपेटकर ६० ग्राम

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गाय के घृत में भून लें। इसी प्रकार इक्कीस वार भूनें। बस भस्म तैयार है। सिंगरफ को बारीक पीसकर शीशी में रखें।

सेवन विधि—आधी रत्ती से १ रत्ती तक सेवन करायें यह भस्म नामर्दों के लिए एक अनुपम रसायन है। यहां तक कि इसकी ५ मात्रा सेवन करने से ही ऐसा नामर्द जिसकी वासना मृतप्राय हो चुकी हो अपने अन्दर विद्युत की भांति बढती हुई शक्ति का अनुभव करेगा। अधिक से अधिक २१ दिन पर्याप्त है।

पूरे परिमाण में श्वेत वरण की
१२९–सिंगरफ भस्म न० ६

१२ ग्राम सिंगरफ की डली को १२५ ग्राम आक के दूध में खरल करके गोला सा बनालें और उस गोले को मिट्टी की दो छोटी प्यालियों में बन्द करके उन पर ३ बार कपड़मिट्टी करें। किन्तु यह याद रखें कि जब तक पहली कपड़मिट्टी सूख न जावे तब तक दूसरी न करें। अब इसको छाया में सुखायें। फिर खुले मुंह के मिट्टी के बर्तन में ५ किलो बालू रेत डालकर उपरोक्त प्यालियों को रखकर सम्पूर्ण मटके को बालू रेत से भर दें और उसका मुंह ढककर अच्छी प्रकार कपड़मिट्टी करके उसे चूल्हे पर चढ़ादें। नीचे पीपल की लकड़ी की आग मध्य श्रेणी की जलाते रहें यहां तक कि मन भर लकड़ियां जल जावें। शीतल होने पर अत्यन्त सावधानी से निकाल कर देख। ईश्वर की कृपा से श्वेत वर्ण की भस्म और परिमाण में पूरी होगी, पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें:

सेवन विधि—मात्रा आधी रत्ती से एक रत्ती तक मक्खन या मलाई में। नामर्द को मर्द बनाती और श्वास, कास और कफ जनित रोग तथा अर्धांग, अर्दित आदि को लाभदायक है।

सन्यासी का प्रयोग
१३०--सिंगरफ भस्म न० ७

यह प्रयोग ईश्वर की कृपा से नपुंसकों को पुंसक बनाने वाला तथा निराशों की आशाएं पूर्ण करने वाला है। जिसकी कई मात्राओं का प्रभाव रग व पुट्ठों में इतनी द्रुत गति से फैल जाता है कि देखकर आश्चर्य होता है। जो भी इसको बनायेगा इसके गुणों से स्वयंमेव ही परिचित हो जायेगा। आक के पुराने क्षुप (पौदे) की जड़ में छिद्र करके इसमें २५ ग्राम

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सिंगरफ की डली रखकर वह चूरा जो छिद्र निकालते समय निकाला था ऊपर रखकर उस पर खादी का दोहरा कपड़ा लपेटकर कपड़े पर मिट्टी लगादें और ऊपर से मिट्टी वगैरह देकर जैसा पहले था वैसा ही बना दें और प्रतिदिन देखते रहें। पूरा एक वर्ष व्यतीत होने पर उस आक के क्षुप को उखाड़ लें और इस पर रूई मिश्रित मिट्टी लेप करके इस छिद्र से नीचे ऊपर कुछ भाग छोड़कर काट लें। पुनः इस काटे हुए आक के टुकड़े पर भली प्रकार कपड़ मिट्टी करलें और एक के सूख जाने पर अति सावधानी से दूसरी और पुनः तीसरी कपड़मिट्टी करके सुखालें। तद्पश्चात् भूमि में गड्डा खोदकर वायु से बचाकर १०-११ किलो उपलों की आग दें और शीतल होने पर निकाल लें वर्फ के समान श्वेत रंग की भस्म होगी। देखकर हृदय प्रसन्न हो जायगा। पीसकर सुरक्षित रक्खें। इस अमूल्य भस्म की मात्रा केवल एक चावल से दो चावल तक है। इसके लाभ वही कर्मवीर जान सकेंगे जो इसको बनाकर अनुभव कर लेंगे। संसार भर की उत्तमोत्तम अकसीरों में से यह भी एक अकसीर है।

सूचना—आग ऐसे स्थान में दें जहां छाया न पड़ती हो, इसका ध्यान अवश्य रखें।

महत् बाजीकरण औषधि

१३१--सिंगरफ भस्म न० ८

यह वही प्रयोग है जिसको एक प्रसिद्ध तथा अनुभवी वैद्य महाशय तैयार करके २० रुपये की एक ग्राम के हिसाब से वेचते रहे हैं। बाजीकरण तथा पुरुषत्व सम्बन्धी रोगों के लिये अकसीर का प्रभाव रखती है। इसकी पहली मात्रा ही सेवन करने वाले के शरीर में विद्युत के समान प्रभाव करती है। यदि आप संसार भर की वाजीकरण ओषधियों में से सर्वोत्तम वाजीकरण औषधि चाहते हैं तो इसे बनाकर तैयार रखें। यद्यपि परिश्रम तो होगा, परन्तु जब मनुष्य बनाने का ही निश्चय कर ले तो कोई हेतु नहीं कि न बना सके। २५ ग्राम सिंगरफ की डली को ५ किलो से आरम्भ करके ४० किलो तक आक के दूध में दोलायन्त्र की विधि से अत्यन्त मन्द मन्द अग्नि पर पकावें फिर निकाल कर ८ दिवस पर्यन्त आक का दूध डाल डाल कर खरल करें और फिर इसका गोला सा बनालें, फिर अत्योत्तम श्वेत वर्ण एक किलो कुक्कटांडत्वक भस्म (मुर्गी के अण्डों के छिलकों की भस्म) लेकर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आक के दूध में गूंधकर उसके मध्य में सिंगरफ के गोले को रखकर लपेट दें और कूजे में बन्द करके भलीभांति कपड़ मिट्टी करदें तथा छाया में सुखाकर २०–२५ किलो उपलों की अग्नि दें। शीतल होने पर अत्यन्त सावधानी से मुर्गी के अण्डे के छिलकों की भस्म से उसे पृथक करलें। अत्योत्तम श्वेत रंग की भस्म होगी। सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—एक चावल से दो चावल तक मक्खन या मलाई से दिया करें। वाजीकरण की अत्युत्तम औषधि है।

सिंगरफ को मोमिया बनाने की विधियां

मोमियां सिंगरफ को रसायनी लोग सिंगरफ भस्म से उत्तम समझते हैं। क्योंकि उनका विचार है कि मोमियां सिंगरफ के लाभ चेतन शरीर को ही नहीं बल्कि जड़ शरीर तक पहुंचते हैं। जैसा कि इसी पाठ के किसी प्रकरण में एक प्रयोग लिखा जायगा, जो कि चेतन व अचेतन शरीर के लिए अकसीर है। किन्तु उस पर परिश्रम बहुत करना पड़ता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को उन अकसीरों के बनाने का अधिकार नही। इन प्रयोगों को वही महाशय निर्माण करने का साहस करें, जो परिश्रम से यदकिंचनमात्र भी न घबराते हों।

१३२--मोमिया सिंगरफ भस्म न० १

नीले थोथे की भस्म १२ ग्राम २५० ग्राम भर अर्क दुग्ध में डालकर इसको १ सप्ताह तक पड़ा रहने दें। दूध फट जायगा। तद्पश्चात छानलें और १२ ग्राम रूमी सिंगरफ की डली को एक मिट्टी के प्याले आदि में रखकर मन्द अग्नि पर चढादें। ऊपर से उसी आक के दूध की (जिसमें नीला थोथे की भस्म मिलाई गई है) बून्द बून्द टपकाते रहें। जब सम्पूर्ण सिंगरफ मोम के सदृश्य हो जावे तब अग्नि पर से उतार कर शीतल करें और सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—मात्रा अधिक से अधिक १ चावल मक्खन या मलाई में दें। वाजीकरण होने के अतिरिक्त श्वास, कास आदि की अत्यन्त प्रभाव पूरित औषधि है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१३३—मोमिया सिंगरफ भस्म नं० २

जो कि अर्धाङ्ग, अर्दित (लकवा), श्वेत कुष्ट, श्वांस, आमवात (गठिया) और नपुन्सकता की अत्युत्तम औषधि है। मिलावा, मालकंगणी हरमल के बीज प्रत्येक २५० ग्राम लेकर इनको थोड़े से आक के दूध में तर करके किसी मिट्टी की हांडी में डालकर पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकालें और इस तेल को किसी चीनी की प्याली में डालकर अपने पास रखें। फिर २५ ग्राम सिंगरफ की डली लेकर इसको पहले इस तेल में डुबोदें और पुनः ४ आक के पत्तों में लपेटकर उनके ऊपर चिकनी मिट्टी का अंगूठे के बराबर मोटा लेप कर दें। फिर शीघ्र ही जलते हुए कोयलों की आग में पकावें। जब गोले का रंग लाल हो जावे तो निकालकर ठण्डा करें। फिर सिंगरफ की डली को निकालकर उसी तेल में डुबो दें और पूर्वोक्त विधि अनुसार आक के चार पत्तों में लपेटकर और चिकनी मिट्टी का अंगूठे के बराबर लेप कर कोयलों की आग पर पकावें तथा लाल होने पर निकालें, एवंमेव ४० बार निरन्तर सिंगरफ की डली को तेल में डुबोते और ४ पत्तों में लपेटकर मिट्टी का लेप करके आग में उष्णता देते जावें। इसी प्रकार ४० बार करने के पश्चात सिंगरफ की डली स्थायी (कायमुलनार) हो जायेगी। यदि मोमिया बनाना हो तो १०१ आंच देना उचित है।

सेवम विधि—मात्रा १ चावल से ४ चावल तक मक्खन या मलाई के साथ देते रहें। बाजीकरण, स्नायु बलप्रद है। अर्धाङ्ग,अर्दित,गठिया,श्वास आदि रोगनाशक है।

सूचना—चिकनी मिट्टी, जिसका लेप करना है-उसमें रूई मिलाकर इमामदस्ते में कूट लेनी चाहिये ताकि मिट्टी अग्नि पर रखने से ही फटकर सिंगरफ को अग्नि की भेंट न करदे। दूसरे गोले को आग में रखकर इसको चारों ओर से बदलते रहना चाहिए ताकि एक तरफ से जल न जाये। इन सब बातों पर अच्छी प्रकार ध्यान देकर तैयार करें।

रसायनिक प्रयोग

१३४—मोमिया सिंगरफ

जो कि चैतन के लिए रसायन और जड़ शरीर के लिए भी रसायन है। "जो रंगे काया सो रंगे माया" की उक्ति को चरितार्थ करती है। इस योग के दाता इस प्रकार कथन करते हैं कि मेरे औषधालय में एक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यकृत शोथ व्याधि ग्रस्त पूर्ण महात्मा पधारे और उनकी ही उपस्थित में एक और महाशय जो कि नितान्त नपुन्सक हो चुके थे चिकित्सा की इच्छा से आये। तब उन सन्यासी महात्मा ने कहा कि हकीम साहिब, आप अच्छी प्रकार ध्यान से मेरी चिकित्सा करें और इसकी चिकित्सा मैं करूंगा। तथाच उन्होंने अपने पास से एक अत्यन्त चमकीली मोम के सदृश एक ग्राम के अनुमान औषधि दी और कहा कि रोगी को सूचित कर दो कि इसको ३ दिवस में इन्द्रिय पर मालिश करले। उनकी आज्ञानुसार मैंने रोगी को वह तिला दे दिया। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, जबकि दूसरे दिन ही वह नामर्द हर्षित होता हुआ मेरे पास आया और कहने लगा कि मुझे आधा आराम है। दूसरे दिन प्रयोग करने के पश्चात तो वह साफ कह उठा कि अब मैं पूर्ण स्वस्थ हूं। मैंने अति कठिनता से उसको तीसरे दिन औषधि प्रयोग कराई। सारांश इस दवा के तीन दिन के प्रयोग से ही वह नपुन्सक नितांत पुन्सत्व को प्राप्त हो गया। ईश्वर कृपा से वे साधू महात्मा भी निरोग हो गये और विदा होते समय मुझे ५० रुपया पारितोषिक स्वरूप देने लगे। मैंने प्रार्थना की कि भगवान मुझे रुपयों की आवश्यकता नहीं। हां उस प्रयोग का हृदय और प्राण से इच्छुक हूं। यदि इच्छा हो तो बतला देने की कृपा करें। यह सुनकर महात्मा जी मुस्कराते हुए कहने लगे कि हकीम जी! आज तक यह प्रयोग हमने किसी को बतलाया तो न था, किन्तु तुम्हारा मुझ पर एहसान है, आपने मेरी चिकित्सा की है इसलिए प्रथम इसका एक और चमत्कार दिखाकर योग बता दूंगा। निदान यह कह कर उन्होंने ताम्र को अग्नि पर रखकर पिघलाया। ताम्र जब अच्छी तरह पिघल गया तो सन्यासी महोदय ने इस अकसीर में से थोड़ी सी दवा डाल दी। ईश्वर की माया, शुद्ध स्वर्ण तैयार हो गया। यह थी संक्षिप्त कथा जो उन साहिब ने वर्णन की। अब वह योग जो सन्यासी ने बतलाया था कथन किया जाता है। जो महानुभाव उद्योगशील हों वे निर्माण करलें। यदि ताम्र का स्वर्ण न भी बनेगा तो न्यूनातिन्यून निराश नपुन्सक को तरुण मनुष्य तो बना ही देगा। मेरे विचार से यह उससे बढ़कर है।

वह प्रशंसित योग यह है

२५ ग्राम रूमी सिंगरफ की डली लेकर उसको लोहे की कड़छी में रखकर ऊपर २५० ग्राम अर्क दुग्ध डालकर मन्द मन्द अग्नि पर उस समय तक पकावें जब तक कि दुग्ध जम न जावे। इसी प्रकार २५० ग्राम आक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

का दूध डालकर प्रतिदिन अग्नि पर खपाते रहें। यहां तक कि पूरे सवा तीन मास अथवा दूसरे शब्दों में १,०० बार दूध खत्म किया जावे। अब इस सिंगरफ की डली को निकालकर किसी चीनी के पात्र में रखक रात्रि के समय ओस में रख दें। भगवान की कृपा से प्रात:काल मोम के सदृश बल्कि मोम से भी आर्द्र दशा में मिलेगी। इसको अत्यन्त सावधानी से रखें। मालिश (तिला) करने से रगों की सुस्ती अधिक से अधिक तीन दिवस में ही नष्ट हो जाती है और असीम पराक्रम तथा शक्ति उत्पन्न होती है। इसकी एक २ सींख मलाई में रखकर खिला भी दिया करें। प्रतिदिन सेवन करने की कोई माई का लाल शक्ति नहीं रखता। सप्ताह में केवल दो बार सेवन करना ही पर्याप्त है। इसकी कई एक खुराकों से नपुन्सक से नपुन्सक और निर्बल से निर्बल पुरुष पुंसक शक्ति का अधिष्ठाता बन जायगा और जो पहिले ही पराक्रमवान हैं उनका तो कथन ही क्या ? द्वितीय यदि इसमें से २ रत्ती औषधि लेकर १२ ग्राम शुद्ध ताम्र को पिघलाकर चक्र खाने की दशा में डाल दी जावे तो ईश्वर की कृपा से शुद्ध निर्दोष स्वर्ण तैयार हो जाता है।

१३६–तेल सिंगरफ

सिंगरफ रूमी १२ ग्राम को अर्क दूध में खरल करें जो कि कपड़े में से छाना हुआ हो, एवं निरन्तर ५ दिवस तक खरल करते रहें। पुन: ५० ग्राम शुद्ध मोम पिघलाकर उसमें (उपरोक्त सिंगरफ में) मिला दें और और मन्द २ अग्नि पर पकावें ताकि दोनों परस्पर मिलकर एक जान हो जावें। पुन: एक आतशी शीशी में डालकर अच्छी प्रकार मुलतानी मिट्टी (रूई मिली हुई) का लेप कर दें। सूखने पर एक और आतशी शीशी लेकर उसका मुंह पहली शीशी से मिला दें। अब एक कड़ाही में बालू रेत बिछा कर कोयलों की अंगीठी पर रक्खें और कोयलों को प्रज्वलित करें ताकि उपरोक्त बालू रेत भली भांति गरम हो जावे। पुन: उस शीशी को जिसके अन्दर मोम मिश्रित सिंगरफ है, (जिसकी मुलतानी मिट्टी से कपड़मिट्टी की गई है) कड़ाही में रेत पर और दूसरी शीशी को बाहिर रखें। सिंगरफ का तेल अर्क की भांति टपक कर दूसरी शीशी में चला जायेगा। जब विदित हो कि सम्पूर्ण सिंगरफ का तेल निकल चुका है तो अग्नि बन्द करके शीतल होने पर तेल को निकालकर अन्य शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—इस तेल में से ४ बूंदें प्रात:काल मक्खन में रखकर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

खिलाया करें अथवा ५ बूंद २५० ग्राम गरम दूध में डालकर पिलाते रहें। धातु क्षीण, शीघ्रपतन, निर्बलता, नपुन्सकता को मिटाकर असीम बल देता है और हर प्रकार की साम व्याधियों को मिटाता है। पार्श्वशूल के लिए ५ बूंदें घृत में मिलाकर मालिश करें और ऊपर अरण्ड का पत्ते या पान अथवा रूई का नमदा बांधें। तत्काल आराम होगा : पुरानी से पुरानी खांसी और श्वांस के लिए एक बूंद पान में खिलाया करें। सारांश यह एक अद्भुत व आश्चर्यजनक औषधि है।

बरकिया हरताल

विवरण—हरताल एक खनिज वस्तु है। जो कि सूक्ष्म पत्रे २ स्वर्ण की चमक जैसी अत्यन्त प्रकाशित होती है। इसके पांच भेद हैं। पीतवर्ण, रक्तवर्ण, श्वेत, खाकी और हरी : इनमें पीतवर्ण की हरताल अच्छी होती है।

स्वभाव—उष्ण तथा रूक्ष।

नाम—अर्बी में जरनीख, असफरावर, हिन्दी में हरताल तबकी और यूनानी में अरमननेकून कहते हैं। रुसायनी लोगों की स्वयं निर्मित परिभाषा में इसके अनन्त नाम हैं। यथा—इलम मुकलम, कसीरूलार्ज करतातीस, सगरी, इलमरूह आदि-आदि।

स्वभाव—कच्ची हरताल इन रोगों में काम आती है—बढे हुए मांस और मस्सों को काटती है। कण्डू और पीपयुक्त घावों और दुष्ट क्षतों को निर्मल करती है। बालों को उड़ाती है।

हरताल की भस्म से लाभ

बढिया भस्म शीत जनित तथा कफ जनित व्याधियों में लाभ करती है। अपस्मार (मृगी), पक्षाघात, अर्दित (लकवा),कम्प पीनस, नजला, उन्माद कफज कास, प्रमेह, सर्दी, पुराने ज्वर, अर्श इत्यादि इत्यादि। नीचे आक से हरताल भस्म बनाने की विधियां उल्लेख की जाती हैं।

१३७–हरताल भस्म नं० १

बरकिया हरताल की १२ ग्राम की डली खरल में डालकर खरल करें और उसमें थोड़ा थोड़ा अर्क दुग्ध मिलाकर खरल करते रहें। यहां तक कि २५० ग्राम दूध खत्म हो जावे। फिर उस पर एक बालिश्त कपड़ा लपेट दें जो तीन बार आक के दूध में भिगो भिगोकर सुखाया गया हो। उस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कपड़े पर ७५ ग्राम सूत लपेटकर मकान के भीतर अग्नि दें और शीतल होने पर निकाल लें। मात्रा ४ चावल। मलाई से खिलायें। कफज रोगों को अकसीर औषधि है।

१३८—हरताल भस्म नं० २

जो कि श्वेत वर्ण और पूरे परिमाण में तैयार होती है। लोग हरताल को सपरिमाण भस्म तैयार करने के असीम इच्छुक हैं। किन्तु तैयार नहीं कर सकते। उनको उचित है कि सिंगरफ की छठी विधि के अनुसार हरताल भस्म बनालें। जिस प्रकार सिंगरफ की सपरिमाण और श्वेत वर्ण की भस्म तैयार होती है, उसी प्रकार हरताल भी भस्म बन जाती है और जो गुण हरताल में होने चाहिए वे सब इसमें विद्यमान होते हैं।

श्वांस तथा खांसी की अनुपम औषधि

१३९—हरताल भस्म नं० ३

१२ ग्राम वरकिया हरताल को चार दिवस निरन्तर आक के दूध में खरल करते रहें पुनः इसकी चक्रिका (टिकिया) बनाकर छाया में सुखायें और दो कच्ची ईंट लेकर उनके मध्य में जरा सा गढढा करके उसमें हरताल की चक्रिका रखकर दोनों ईंटों को मिलादें और भली प्रकार कपड़ मिट्टी करके सुखालें। जब अच्छी प्रकार सूख जावे तब वायु से बचाकर केवल ३ उपलों कीं आंच दें। भस्म होगी। यह भस्म प्रायः कृष्ण वर्ण की निकला करती है।

सेवन विधि—मात्रा एक रत्ती पान में रखकर खिलाया करें। श्वास तथा बलगमी खांसी की अत्यन्त लाभप्रद तथा विश्वस्त औषधि है।

१४०—हरताल भस्न न० ४

१८ ग्राम बरकिया हरताल को प्रतिदिन १२५ ग्राम अर्क दूध में खरल करते रहें, पांच दिवस के पश्चात चक्रिका बनाकर एक कपड़े पर धूप में रखकर इसके पासे बदलते रहें। इस प्रकार १५ दिवस तक तेज धूप में रखें ताकि भली प्रकार सूख जावे। फिर इस चक्रिका को ८५ ग्राम पीपल की राख के मध्य में रखकर दो उपलों में (जो काफी बड़े हों) रखें। डेढ़ किलो और उपले चुनकर निर्वात स्थान में अग्नि दें। लालिमा लिये हुए श्वेत भस्म होगी। पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सेवन विधि-१ चावल से एक रत्ती तक नमक अथवा खांड में रखकर दिया करें। सम्पूर्ण सर्दी व कफज रोगों में लाभदायक है। विशेषकर पक्षाघात, अर्दित, श्वास, पुरानी खांसी, जीर्ण ज्वर के लिए तो रसायन है। बाजीकरण और आनन्ददायक बन्धेजकारक है। इसके सेवन से क्षुधा पर्याप्त बढ़ जाती है सारांश यह है कि प्रत्येक शीत रोगों के लिए अच-सीर है।

१४१--हरताल भस्म नं० ५

२५० ग्राम मैंनफल को दो दिवस पर्यन्त आक के- दूध में भिगोकर रक्खें और फिर खरल करके कल्क (नुगदा) बनालें और इसके मध्य में २५ ग्राम हरताल की डली को रखकर एक कूजे में बन्द करके अच्छी प्रकार कपड़ मिट्टी करके सुखा लें तथा पुन: कपड़ मिट्टी करें और छाया में सुखालें और फिर निर्वात स्थान में ५ किलो उपलों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकालें। क्वीनीन के सदृश्य श्वेत वर्ण भस्म निकलेगी।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती, गुलकन्द या मुनक्का में रखकर दें। अथवा पान में खिलावें। कास, श्वास, पार्श्वशूल और जीर्ण ज्वरों को लाभ-दायक है:

डली की डली सपरिमाण श्वेत वर्ण भस्म बनाने की विधि

१४२--हरताल भस्म न० ६

रीठे की छाल तथा गिरी२४० ग्राम का चूर्ण बनाकर २५० ग्राम अर्क दुग्ध में कल्क (नुगदा) बनावें और उसमें १२ ग्राम वरकिया हरताल का टुकड़ा रखकर ऊपर १ किलो पुराने कपड़ों को लपेटकर निर्वात स्थान में रक्खें फिर उसके ऊपर एक जलता हुआ अंगारा रखदें। इसमें धीरे २ जलकर अग्नि स्वयं शीतल हो जायगी। शीतल होने पर भस्म निकाल लें। डली की डली सपरिमाण श्वेत वर्ण भस्म प्राप्त होगी।

परीक्षा—थोड़ी सी भस्म अग्नि पर डालकर देखें यदि धूम्र न निकले तो तैयार समझें।

सेवन विधि—मात्रा २ चावल से ४ चावल तक मक्खन में दिया करें। कण्डू, चमंदल, फोड़े, फुन्सी को लाभप्रद है। नपुन्सम के लिए अतीव लाभकारक तथा अत्यन्त ही बाजीकरण है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रासायनिक लोगों के लिए अनुपम उपहार

१४३–हरताल का स्थिति करण

हरताल को मोमिया तथा स्थाई बनाना कोई सरल बात नहीं है। इसके इच्छुक लोग मारे २ फिरते हैं। किन्तु यह सौभाग्य अल्प को ही प्राप्त होता है। यद्यपि निम्नलिखित प्रयोग वास्तव में अकसीरी और नितान्त सत्य है, तथापि इसमें भाग्य की ही प्रधानता है। निदान इस योग के सम्बन्ध में मौलवी निजामुद्दीन साहिब प्रसिद्ध रसायनी का कथन है कि जिसके भाग्य में इसका बनाना नहीं लिखा वे प्रायः ही इसके निर्माण काल में ही कहीं न कहीं आलस्य कर जाते हैं, अन्यथा कोई हेतु नहीं कि मनुष्य ध्यान पूर्वक और परिश्रम से बनायें और सफल न हों। ऐसे योगों को लोग अपने दुर्गुणों की भान्ति गुप्त रखते हैं। परन्तु मैं पाठकों की सेवा में निष्कपट भाव से प्रकट करता हूं ताकि आप लोगों को भाग्य परीक्षा का अवसर मिल सके। नहीं कह सकता कि कितने लोगों के भाग्य में इस कोष की प्राप्ति मेरे इस प्रयास से लिखी हो। वास्तव में यह कोई साधारण योग नहीं बल्कि एक अकसीरी चीज है इसलिए इसके निर्माण करने में आवश्यकता से अधिक सावधानी से काम लेना पड़ता है वरनां या तो इसका सत्व उड़ जाता है या कच्ची रह जाती है।

वरकिया भस्म को मोम के सदृश बनाने की विधि

वरकिया हरताल की २५-२५ ग्राम की ४ डलियां लें और उनके नीचे व ऊपर आक के चार चार पत्ते लगाकर उनको लोहे की तार आदि से चारों ओर से सी दें और पुनः एक बालिश्त चौड़ाई में उतनी ही गहराई में पृथ्वी को खोदकर गाड़ी के पहिये का सा आकार बनालें। उपरोक्त सम्पूर्ण चक्र को बकरी की मींगनी से भर दें। फिर एक ओर से अग्नि लगा दें। जब थोड़े से स्थान में अंगारे हो जावें और धुंवा बन्द हो जावे तब इसमें हरताल पत्तों समेत दबा दें। जब प्रतीत हो कि पत्ते सूख गये होंगे परन्तु जले न होंगे उस समय निकालकर गरम २ डलियों को नमक के पानी से बुझा दें। (जो कि पहले ही पानी में घोल रखा हो) फिर उन डलियों को उसी प्रकार आक के पत्तों के मध्य में बन्द करके और किसी तार से सीकर मिंगनियों की अग्नि में दबा दें। जो कि तैयार हो गई होगी। इस प्रकार पत्तों का पानी खुश्क होने पर नमक के पानी में बुझा दें। एवंमेव १०० बार पुट पाक करें (पहले हरताल का रंग पीला और पुनः लाल और अन्त में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पीला हो जावेगा) आशा है कि प्रथम तो मोमिया ही हो जांयगी, अन्यथा स्थायी तो अवश्य हो लायेगी। यह वह वस्तु है जिसके लिए दुनिया भटकती फिरती है। ताम्र पर लेप करके विधि पूर्वक भाग्य परीक्षा करें। निर्दोष शुद्ध स्वर्ण प्राप्त होगा। यदि १ चावल से २ चावल तक पान में रखकर खिलादें तो अत्यन्त वाजीकरण सिद्ध होगीं। श्वास, खांसी तथा गठिया नष्ट होंगे।

नोट–इस क्रिया में निरन्तर आंच देने की तनिक भी आवश्यकता नहीं यथा सम्भव सरलतापूर्वक १० या बीस आँच नित्य देना पर्याप्त हैं। इसी प्रकार १०० आंच पूरी कर दें।

१४४–बर्किया हरत्ताल का तेल बनाना

१२ ग्राम बर्किया हरताल की डली लेकर मिट्टी के कूजे में डाल कर ऊपर से १२५ ग्राम अर्क दुग्घ डाल दें और उसके मुंह को भली भांति सुदृढ बन्द करके कपड़मिट्टी करके भूमि में गाड़ दें और ११ दिन के पश्चात निकाल कर इसको खरल करें। जब गोलियां बनाने योग्य हो जावे तब तनिक लम्बी लम्बी गोलियां बनाकर छाया में सुखालें और कपड़मिट्टी की हुई आतशी शीशी में डालकर पाताल यन्त्र से तेल निकाल लें।

सेवन विधि—इस तेल में से एक सींख अथवा २ सींख मक्खन या मलाई में अथवा हलवे में मिलाकर खिलायें। श्वास, कास, निर्बलता आदि के लिए अकसीरी तेल है।

१४२–हरताल तेल न० २

बर्किया हरताल १२ ग्राम, अरंड के बीजों की गिरी नग १२, दोनों को खरल में डालकर पीसें और आक दूध डालकर पीसते रहें। इसी प्रकार १२ पहर तक खरल करते रहें। सिर आतशी शीशी में भरकर विधिवत पाताल यन्त्र से तेल निकाल लें। हस्त मैथुन वाले तथा सुस्त मनुष्य के लिए आश्चर्यजनक प्रभावशाली तिला हैं। सीवन सुपारी को बचाकर इन्द्री पर मर्दन किया करें, ऊपर से अरंड का पत्ता बांध दें। एक सप्ताह के प्रयोग से ही रगों में पूर्ण शक्ति उत्पन्न हो जाती है। इसी प्रकार १ रत्ती दवा दूध में मिलाकर पिलाया करें। निर्बल मनुष्यों के लिए अकसार, पार्श्वशूल हृदयशूल आदि के लिए तिलों के तेल में मिलाकर मर्दन करावें और ऊपर से रूई का नमदा बांधें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१४६—बर्किया हरताल का तेल बनाना नं० ३

आक के दूध को कपड़े से छान लें और १२ ग्राम बरकिया हरताल को इस दूध के साथ सारा दिन खरल करते रहें। इसी प्रकार ८ दिन तक प्रतिदिन खरल करते रहें। फिर ६० ग्राम आक के दूध और १२५ ग्राम अर्क गुलाब में क्रमशः खरल करें। यहाँ तक नितांत सूख जावे। फिर १८० ग्राम छिली हुई बादामों की गिरियां कूटकर मिला दें और १८० ग्राम आक दूध मिलाकर खरल करें। यहां तक फिर पीसते २ स्वयंमेव तेल पृथक होने लगे। फिर इसको आतशी शीशी में डालकर पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकालें।

सेवन विधि—इसमें से ४ बूंद तेल मिश्री में मिलाकर खिलायें और ऊपर से गाय का दूध पिला दिया करें। वाजी० शक्ति को बढाने की अनुपम औषधि है। उपदंश, कण्डू, दद्रु, चर्मदल आदि को लाभकारी है।

१४७-हरताल का सत्व

२५० ग्राम बर्किया हरताल को १० किलो गाय के दूध में लटका कर आग पर पकावें। जब दूध रबड़ी की तरह हो जावे तब निकाल लें और फिर इसको मिट्टी की सुराही में डालकर उसके मुंह को बन्द करके आग पर रखदें, नीचे चार पहर तक अग्नि जलावें। शीतल होने पर सुराही की ग्रीवा से सत्व निकाल लें।

निरन्तर १४ दिन तक आक के दूध में खरल करके चक्रिका बनालें। पुनः सूखने के पश्चात् अभ्रक के दो टुकड़ों के बीच में रखकर रेत के भरे एक वर्तन में दबाकर १२ पहर वालू यन्त्र की अग्नि दें।

हरताल सत्व के लाभ

श्वास, पुरानी खांसी और सम्पूर्ण कफज रोगों के लिए उत्तम अकसीर है। इसमें से एक एक रत्ती सत्व पान या लौंग के चूर्ण में रखकर दें। अत्यन्त ही क्षुधावर्द्धक और पाचक है। इसको सेवन करने वाला एक ही बार में पांच किलो भोजन खाकर जीर्ण कर जाता है, इसके अतिरिक्त अत्यन्त ही वाजीकरण है।

संखिया

विवरण—यह एक प्रसिद्ध तीक्ष्ण विष है, जिसके रंग की अपेक्षा से कई भेद हैं। यथा—श्वेत (दूधिया), बिल्लौरी, पीला, लाल और काला तथा हरा आदि-आदि।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नाम— सोमलखार, जहरआदम, मर्गमोष, आर्सेनिक, आन्निकम अलबम, संबुलखार, दूधिया संखिया आदि आदि नामों से पुकारा जाता है।

स्वभाव – गर्म ४ श्रेणी का और रूक्ष भी ४ श्रेणी का है। इसको अत्यन्त ही अल्प मात्रा में सेवन करना—बाजीकरण, शारीरिक बल को बढाने वाला, पट्ठों को बलदाना, आमाशय बलप्रद, वंधेजकारक, अर्धाङ्ग, अर्दित, गृध्रसी (रींगनवाय), श्वास, पुरानी खांसी, दस्त, प्रवाहिका, संग्रहणी, रक्त की न्यूनता, कण्डू, फोड़ा, फुन्सी, जीर्ण ज्वर, तृतीयक, चतुर्थक ज्वरादि व्याधियों के लिए हमारा बारम्बार का परीक्षित और अनुभूत है। परन्तु अधिक सेवन करने से प्राणों की इतिश्री कर देता है।

कच्चे सोमलखार की सेवनविधि

कच्चे संखिये को सेवन करना अत्यन्त ही सरल है। परन्तु इसके सेवन करने के नियम विदित होने चाहियें। निदान लेखक तो छोटे छोटे दुग्धाहारी बालकों को भी सेवन कराकर सदैव सफल होता रहता है। मैं यहां पर इसके सेवन करने की विधि वर्णन करता, परन्तु क्योंकि इसका कथन करना मुझे मेरे प्रकरण से बाहर ले जाता है, अतः मैं विवश हूं। हां! जिन महाशयों को इसके देखने की इच्छा हो वे मेरी लोक प्रसिद्ध रचना "अनुभूत योग चिन्तामणि" को मंगा कर देखें। इस पुस्तक में मैंने इसके सेवन करने की विधियां और अपने अनुभव स्पष्ट रूप से सविस्तार वर्णन कर दिये हैं, जिनको पढ़कर असंख्य लोग लाभान्वित होकर सफलता के पत्र लिख रहे हैं। अब हम सोमलखार की भस्मों का वर्णन करते हैं।

१४८-संखिया भस्म नं० १

संखिया १२ ग्राम को किसी पक्के खरल में डालकर और इसमें थोड़ा थोड़ा अर्क दुग्ध डालकर खरल करते रहें। यहां तक कि २५० ग्राम दूध प्रविष्ट हो जावे। फिर गोला बनाकर उस पर ८५ ग्राम सूत लपेट दें और उस गोले को मकान के किसी कोने में एक बर्तन में रखकर ऊपर जलती हुई चिनगारी रखदें। फिर शीतल होने पर अत्यन्त धीरे से श्वेत रंग की भस्म निकाल कर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि— मात्रा आधा चावल मक्खन या मलाई के साथ दें। श्वांस, खांसी, गठिया, नपुंसकता के लिये लाभप्रद भस्म है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नपुंसकता के लिये अकसीर मरदमी

१४९-सोमलखार भस्म नं० २

संखिया की सपरिणाम भस्म अत्यन्त ही अकसीर सिद्ध होती है। इसको सपरिणाम भस्म बनाने के लिए सिंगरफ भस्म नं० ६ की भांति तैयार करें। इसी प्रकार सिंगरफ, वरकिया हरताल और सोमलखार सब फूले हुए और सपरिमाण तैयार हो जाते हैं।

सेवन विधि—एक खसखस के दाने से आरम्भ करके आधा चावल तक ले जावें और मक्खन अथवा मलाई में दे दिया करें। इसके सेवनकाल में घृत दूध अधिक सेवन करें। खांसी, श्वास, निर्बलता, नपुंसकता, आमवात (गठिया), गृध्रसी आदि-आदि के लिए अत्यन्त ही अकसीरी है।

सपरिणाम डली की डली को भस्म बनाने की विधि

१५०-सोमलखार भस्म नं० ३

निम्नलिखित विधि से निर्माण की हुई भस्म निःसन्देह अकसीरे मरदमी सिद्ध होती है। यह प्रयोग श्रीमान हकीम बाबा शोभाराम जी का है। बनाकर परीक्षा करें। २५ ग्राम संखिया को ४ दिन तक आक के दूध में खरल करें और चक्रिका बनाकर छाया में सुखालें, तत्पश्चात् पीपल की छाल को दो किलो राख के मध्य में रखकर ऊपर से दबा दें और बर्तन को चूल्हे पर रखकर ४ पहर तक अग्नि जलावें। शीतल होने पर निकालें।

सेवन विधि—मात्रा आधा चावल से एक चावल तक मक्खन अथवा मलाई में इस्तेमाल करावें। पुंसत्व बल बढ़ाने के लिये अत्यन्त लाभप्रद भस्म है। इसके अतिरिक्त कफज व्याधियों को दूर करने के लिए विशेष गुण रखती है।

१५१-संखिया भस्म नं० ४

जोकि अत्यन्त बाजीकरण तथा बंधेजकारक है। ५०० ग्राम आक का दूध लेकर चीनी के प्याले में डालें और गर्म भूभल पर रखें। जब थोड़ा गर्म हो जावे तब इसमें ३ ग्राम नीलेथोथे की भस्म डाल दें (जिसकी विधि आगे कथन की जायेगी) थोड़ी ही देर बाद दूध फट जायेगा। जब दूध फट जाय तब उसको कपड़े में से छान लें और उसमें १२ ग्राम संखिया डालकर यहां तक खरल करें कि दूध सूख जावे। पुनः एक मिट्टी की हंडिया में आकके क्षुप की भस्म (राख) आधा किलो डालें और उसके ऊपर सोमलखार वाली

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

टिकिया को रखकर टिकिया के ऊपर आधा किलो राख और डालकर हंडिया के मुख को अच्छी प्रकार बन्द व कपड़मिट्टी करके वायु से बचाकर १० उपलों में अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल लें। मात्रा आधे चावल से एक चावल तक मक्खन अथवा मलाई में दें। बाजीकरण, बन्धेज करता और घृत को बहुत ही शीघ्र पचाने वाली भस्म है।

१५२-मोमिया सोमलखार

आक, अपामार्ग, कटेरी इन तीन बूटियों को जलाकर राख कर लें, प्रत्येक की दो किलो राख लेकर आठ गुने पानी में भिगोकर तीन दिवस तक पड़ी रहने दें। परन्तु उसको दिन में ३—४ बार किसी लकड़ी आदि से हिला दिया करें। तीन दिन के पश्चात् उसके ऊपर से पानी नितारलें और कड़ाही में डालकर चूल्हे पर रखें और अग्नि जलादें। पकते पकते जब सब पानी जल जायगा तब कड़ाही में श्वेत रंग का क्षार शेष रह जायगा। अब इस क्षार में से आधा लेकर लोहे की कड़छी में रखें और इसके ऊपर संखिये की पचास ग्राम की डली रखकर ऊपर शेष क्षार देकर कड़छी को कोयलों की अग्नि पर पूरे ३ घण्टे तक रखें। मोमिया निकलेगा।

मात्रा—खसखस के दाने के समान मक्खन में रखकर दिया करें। भोजन-मुर्गी के मांस का रस, खिचड़ी आदि। श्वास, खांसीको ईश्वर की कृपा से तीन दिन में ही आराम कर देता है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण वातज तथा कफज व्याधियों को लाभप्रद है। बाजीकरण और बन्धेज करता है।

उपरत्न

उन वस्तुओं की भस्में जो पाषाण भेद से हैं

इससे पूर्व धातु उपधातु की भस्मों का तथा रस उपरसों का सविस्तार वर्णन कर दिया गया है और अब पत्थरों की भस्में बनाने की विधियां कथन की जाती हैं। परन्तु भस्मों की विधि बताने से पूर्व यह आवश्यक प्रतीत होता है कि पाठकों को यह बता दिया जावे कि इनका सम्बन्ध किस किस वस्तु से है।

पाषाण किसे कहते हैं

पाषाण से तात्पर्य उन वस्तुओं से है जो भिन्न भिन्न खानों से निकलते हैं, परन्तु न तो वे उपधातुओं की भांति अग्नि पर रखने से धूम्र रूप

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

होकर उड़ते ही हैं और न ही धातुओं की भान्ति चोट लगने से बढ़ते हैं और न ही अग्नि की उष्णता से पिघल कर पानी की तरह तरल होते हैं वरंच उन पर चोट लगने से टूट जाते हैं। इसलिये इनको उपरत्न कहना चाहिए।

लाभ—यह बात सिद्ध हो चुकी है कि पत्थरों का प्रभाव मनुष्य के शरीर पर अवश्य पड़ता है। इसकी भस्म बनाकर खिलाना तो दूर इसको गले में बांधने और अंगूठियों में नग जड़ाने से भी आश्चर्यजनक प्रभाव प्रकट होते हैं। इसको न केवल यूनानी हकीम तथा वैद्य ही मानते हैं, वरंच अब इसे डाक्टर लोग भी मानने लगे हैं। नीचे आक के द्वारा कई किस्म के पत्थरों की भस्म बनाने की विधियां लिखी जाती हैं ताकि उनसे लाभ उठाया जा सके।

अकीक

यह एक प्रसिद्ध पाषाण है। यह कई प्रकार के रंगों का होता है। लाल, पीला, सफेद आदि। परन्तु हकीमों के कथनानुसार लाली व जरदी लिये बिना दाग जिसको अकीक यमनी के नाम से पुकारा जाता है—अच्छा होता है।

लाभ—हृदय को बल देने वाला, चिन्ता को दूर करने वाला, प्रमेह, उष्णवात को अतीव लाभकारी है। वाजीकरण और उच्च अवयवों को लाभ देने वाला, यह अत्यन्त कठोर पत्थर है। इसलिये इसकी भस्म बनाने में पूरी पूरी सावधानी की आवश्यकता है ताकि अंजन की तरह कोमल, बिना रड़क की भस्म तैयार हो जावे अन्यथा मोटा रहने की दशा में हानिकारक होने का सन्देह है। इसकी अच्छी भस्म बनाने की विधि यह है कि इसको कई अग्नि दें, दूसरे पीसने में पर्याप्त परिश्रम करें। जब इच्छानुकूल भस्म तैयार हो जावे तो सेवन करावें।

१५३-अकीक भस्म

अकीक का बड़ा सा दाना लेकर आग में अच्छी तरह गरम करें। जब अग्नि के सदृश्य प्रतीत होने लगे तब इसको आक के दूध में बुझादें। पुनः निकाल कर गर्म करें और बुझावें, यहां तक कि टूटने लग जावे। पुनः इसको ६० ग्राम आक के फलों के नुगदे में रखकर और ऊपर कपड़मिट्टी करके २० किलो उपलों की आग दें। परन्तु इसको अधिक कोमल बनाने के लिये एक दिवस आक के दूध में और खरल करके टिकिया बनाकर फिर कूजे में बन्द करके २० किलो उपलों की अग्नि दें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सेवन विधि—मात्रा आधी रत्ती, अर्क गाजवां के साथ। हृदय को बलकारक, श्वास तथा खांसी को नाश करता है।

संगयशब

यह एक प्रसिद्ध सुन्दर पत्थर है। जिसको हृदय की शक्ति बढ़ाने के लिये दिया जाता है।

नाम—संग यशब, संग यशम, हजरूल यशफ, हजरूल यशम आदि नामों से पुकारते हैं।

वर्णों की अपेक्षा इसके कई भेद हैं। यथा श्वेत, लालिमायुक्त और पीततायुक्त, गहरा हरा, किन्तु जैतूनी सबसे बढ़िया माना जाता है।

इसकी भस्म के लाभ—उच्च अवयवों को बल देने वाला, उन्माद को दूर करने वाला, आमाशय व यकृत को लाभकारी और सर्प विष के लिये अगद है।

१५४-संगयशब भस्म

१८० ग्राम उत्तम संगयशब को निरन्तर ३ दिन तक आक के दूध में खरल करें, फिर गोला सा बनाकर कूजे में बन्द करके १० किलो उपलों की अग्नि दें। इसके पश्चात् ३ दिवस शहद में बारीक पीसकर १० किलो की अग्नि दें। तत्पश्चात् तीन दिवस घृतकुमारी के रस में पीसकर उसी प्रकार अग्नि दें। फिर निकालकर एक दिन रूह केवड़ा में खरल करके शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती खमीरा गाजवां अम्बरी या मुश्की के साथ दिया करें। अनुभूत है। यकृत की निर्बलता, हृदय की धड़कन उन्माद आदि की बीमारी के लिये एक उच्च श्रेणी की दवा है। अल्पकाल के सेवन से ही हृदय अत्यन्त ही बलवान और सुदृढ़ हो जाता है।

सेलखडी [संगजराहत]

यह एक प्रकार का पत्थर है, परन्तु पत्थरों की सी कठोरता इसमें नहीं होती। इसके दो भेद हैं। एक श्वेतता लिये नीला और दूसरा श्वेत चमकदार बर्किया। इसको सेलखड़ी कहते हैं। कई हकीमों का मत है कि संगजराहत उपरोक्त वस्तु का ही नाम है और सिलाखेड़ी (सेलखड़ी) नितांत भिन्न वस्तु है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

निरुक्ति—चूंकि क्षतों में से बहते हुए रक्त को बन्द करने के लिये यह पत्थर साधारणतया इस्तेमाल किया जाता है, इसलिये लाभप्रद है। प्रस्वेद लाकर ज्वर को उतारता है।

इसकी भस्म के लाभ—बहते हुए रक्त को रोकता है, घावों को भरता है, उष्णवात (सुजाक), जीर्ण उष्णवात (कुर्राह) के लिए लाभकारी है। स्वेद लाकर ज्वर को उतारता है।

१५५-संगजराहत की भस्म

संगजराहत को इमामदस्ते में कूटकर चूर्ण बनावें। पुनः आक के पत्तों के पानी में ३ घण्टे खरल करके टिकियां बनालें और छाया में सुखाकर कूजे में बन्द करके कपड़मिट्टी करके २० किलो उपलों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल कर खरल में पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक मक्खन में दिया करें। अर्श (बवासीर), कास, ज्वर, उष्णवात आदि को लाभकारी है।

गोदन्ती हरताल

यह भी एक प्रकार का पत्थर है जो कि अधिकतर श्वत सुरमे के सदृश होता है परन्तु इसमें सुरमे की अपेक्षा कठोरता कम होती है। थोड़ी सी चोट से टुकड़े टुकड़े हो जाती है। इसके भी कई भेद हैं। एक तो बिल्कुल रद्दी मलीन सा होता है, दूसरा श्वेत सुरमे के रंग का। इसके अभ्रक के सदृश वर्क (पत्र) पृथक पृथक हो जाते हैं। तीसरा भेद इन सबसे श्रेष्ठ है। इसमें कलमी शोरे के समान लम्बी लम्बी कलमें (तरियां) सी होती हैं। इसको साधारणतया गोदन्ती हरताल के नाम से पुकारा जाता है। यद्यपि यह हरताल का भेद नहीं है। नितान्त भिन्न वस्तु है।

गोदन्ती हरताल भस्म के लाभ—कास, श्वास, प्रमेह, अतिसार, स्वप्नदोष, गठिया और स्त्रियों के सोम रोग (श्वेत प्रदर) रजोधर्म की अधिकता के लिये लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त विषम (मौसमी) ज्वरों के लिए यह अनुपम है। निदान साधु लोग इसकी डली को जलाकर अपनी धूनी की राख मिला देते हैं और विषम ज्वर के दिनों में अपने शिष्यों को धूनी की राख कह कर देते रहते हैं। लोगों को जो कुछ लाभ पहुंचता है है वह साधु जी की शक्ति समझी जाती है। वास्तव में राख के परदे में लाभ इसी चीज से उठाया जाता है। यह एक अत्यन्त ही बढिया और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

निर्दोष वस्तु है। यदि इसको परिमाण से थोड़ा न्यूनाधिक भी दे दिया जाय तो किसी बात का भय नहीं। दूसरे इसकी भस्म बनाने में कोई विशेष परिश्रम या कष्ट नहीं उठाना पड़ता। बस थोड़ी सी अग्नि में सफेद बुर्राक खील खील हो जाती है, जो कि सरलता पूर्वक हाथ से ही पिस सकती है। इसकी उत्तम लाभप्रद भस्म जैसी आक से बनती है वैसी और किसी वस्तु के संयोग से कम ही बनती होगी। यहां कई एक विधियों का उल्लेख किया जाता है।

१५६-हरताल की भस्म नं० १

गोदन्ती हरताल ६० ग्राम कूट कर छोटे छोटे टुकड़े करें और कूजे में डालकर ऊपर १२० ग्राम आक का दूध डाल दें और कूजे के मुंह को बन्द करके १० किलो उपलों की अग्नि दें। भस्म तैयार होगी।

सेवन विधि मात्रा दो रत्ती भस्म अर्क गाजवां अथवा इच्छानुकूल शर्बतादि के साथ सेवन करादें। यह भस्म हर प्रकार के ज्वरों में लाभकारी है। विशेषकर राजयक्ष्मा (तपेदिक) की पहली श्रेणी में अधिक लाभप्रद है। दूसरे खांसी के लिये भी अधिक गुणकारी वस्तु है।

१५७-हरताल भस्म नं० २

जो कि बहुत सी व्याधियों में सेवन कराई जाती है।

गोदन्ती हरताल की २५ ग्राम की डली लेकर कूजे में डाल दें और अर्क दुग्ध इतना उस पर डालें कि डली अच्छी तरह डूब जावे। तत्पश्चात् कूजे के मुंह पर ढकना आदि रखकर भलीभांति कपड़मिट्टी करदें और २० किलो उपलों की अग्नि दें। अति श्वेत भस्म तैयार होगी, जो कि "कम खर्च बाला नशीन" कहलाने की अधिकारणी सिद्ध होगी। यह बहुत सी व्याधियों के लिये लाभकारी है।

सेवन विधि—आमवात (जोड़ों का दर्द) के रोगी को २ रत्ती भस्म रात के समय दूध की मलाई में रखकर खिलाया करें। ईश्वर की कृपा से लाभ होगा।

१५८-उदर पीड़ा

अजवायन ६ ग्राम, नमक १ ग्राम में २ रत्ती भस्म मिलाकर दे। हर प्रकार की उदर पीड़ा को लाभकारी है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१५९-बारी का ज्वर

प्रातः समय रोगी को शर्बत वनफशा ६० ग्राम में ६० ग्राम पानी डालकर पिलावें और ज्वर आने से पूर्व दो घण्टे के अन्तर से १-१ रत्ती भस्म मुनक्का के वीज निकालकर उसमें भरकर दें। आशा है कि प्रथम तो ज्वर उसी दिवस न होगा, अन्यथा दूसरी या तीसरी बारी को तो अवश्य रुक जायेगा। उच्च श्रेणी की बारी रोक वस्तु है।

१६०-प्रस्वेद जनक

चाहे किसी प्रकार का ज्वर हो, यदि उसमें प्रस्वेद न आता हो तो २५० ग्राम दूध और २५० ग्राम गर्म पानी मिलाकर उसमें १ रत्ती भस्म मिला कर रोगी को पिलादें। एक घण्टे में स्वेद आ जायगा और रोम कूप (रोमावली) खुलकर ज्वर उतर जायेगा।

१६१-कास

एक रत्ती भस्म रात के समय पान में रखकर खिलावें। कठिन से कठिन खांसी को भी आराम हो जाता है।

१६२-अपस्मार का वेग

जब रोगी मृगी के वेग से अचेत हो गया हो तो उस समय उसकी नासिका रन्ध्रों में भस्म रखकर किसी नलकी आदि द्वारा फूंक मारें ताकि उसका असर रोगी के मस्तिष्क पर हो। अपस्मार के रोगी को ईश्वर की कृपा से शीघ्र चेत हो जायेगा।

अभ्रक

यह भी एक खनिज वस्तु है जो कि आकर (खान) से निकलती है, इसलिये इसको भी पत्थरों में गिना जाता है। रसायनी लोग अभ्रक में से पारद निकालते हैं।

नाम—इसको अरबी में तलक और कोकबअल आरज तथा फारसी में सितारा जमीन के नाम से कथन करते हैं। इसके अतिरिक्त करबोन अभ्रक और मोडल आदि भी इसी के नाम हैं। इसकी दो ही किस्में मिलती हैं। श्वेत और काली। सुनने में आता है कि पीली भी होती है। काली को वज्राभ्रक कहते हैं।

स्वभाव—शीतल तथा रूक्ष है। इसको प्रायः भस्म बनाने से पहले धान्याभ्रक बनाते हैं। जिसकी विधि निम्नलिखित है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

धान्याभ्रक (महलूब) करना

अभ्रक को इमामदस्ते में कूटकर अत्यन्त सूक्ष्म सूक्ष्म पत्र बना लें। पुनः मोटे कपड़े की थैली में डालकर इसके साथ पत्थर के छोटे टुकड़े अथवा छुहारे की गुठलियां डाल दें और फिर थैली का मुंह बन्द करके किसी बड़ी परात आदि में गरम पानी डालकर थैली को इसमें डाल दें। भीग जाने पर दोनों हाथों से मसलें। अभ्रक, धान्याभ्रक होकर सूक्ष्म कणों के रूप में थैली से निकलकर पानी में आता जायेगा। थोड़ी ही देर के पश्चात् पानी को नितार कर फैंक दें। अभ्रक नीचे पड़ा हुआ रह जायेगा। इसको पृथक करलें। बस यही भस्म बनाने के काम आता है।

अभ्रक की भस्म के लाभ—अभ्रक की भस्म प्रत्येक व्याधि के लिये लाभप्रद है। विशेषकर कास, श्वास, अतिसार प्रवाहिका, संग्रहणी, स्नायुओं की निर्बलता, नपुंसकता, उच्च अवयवों की निर्बलता और धातुक्षीण, वीर्य की न्यूनता, उष्णवात, मूत्रदोष आदि के लिये तथा इसके अतिरिक्त हर प्रकार के ज्वरों को, जो गर्मी से हों—अकसीर है। उचित अनुपान से सेवन करावें।

१६३-अभ्रक की भस्म नं० १

काला धान्याभ्रक ६० ग्राम लेकर ३ दिन तक आक के दूध में खरल करें। पुनः इसका गोला बनाकर मिट्टी के कूजे में कपड़मिट्टी करके दस किलो उपलों की आग दें। इसी प्रकार पुनः अर्क दुग्ध में खरल करके और गोला बनाकर पूर्व विधि अनुसार अग्नि दें। एवमेव बीस अग्नि पूरी करदें। लाल रंग की भस्म तैयार होगी। केवल पित्त जनित ज्वरों में ही नहीं, वरंच कफज रोगों के लिये भी अकसीर सिद्ध होगी। कफज व्याधि में अदरक के रस के साथ दें। अजीर्ण में अर्क सौंफ के साथ और खांसी के लिये अर्क गाजवां के साथ दें। वीर्य की न्यूनता के लिये अधभुने अण्डे या मक्खन के साथ दें।

१६४-श्वेताभ्रक भस्म नं० २

श्वेत अभ्रक के सूक्ष्म पत्र १२ ग्राम उतार कर उन पर आक का दूध २५ ग्राम, कलमी शोरा ६ ग्राम मिलाकर पत्रों के ऊपर नीचे लगाकर किसी मिट्टी की प्याली आदि में बन्द करके सात किलो उपलों की आंच दें। अत्युत्तम भस्म तैयार होगी। कदाचि अग्नि की असावधानी से अभी चमक बाकी हो तो एक दिन अर्क दुग्ध में खरल करके गोला बनावें और कूजे में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कपड़मिट्टी करके ५-६ किलो उपलों में अग्नि दें। अत्युत्तम भस्म तैयार होगी, जो कि ईश्वर की कृपा से बड़ी बड़ी भस्मों को मात करेगी।

सेवन विधि–मात्रा एक रत्ती खांड में मिलाकर किसी अनुकूल शर्बत के साथ दें। पुराने ज्वर व खांसी को दूर करती है। राजयक्ष्मा के पहले दर्जे में एक रत्ती भस्म देकर ऊपर से दही का प्याला पिलावें। ईश्वर की कृपा से आराम होगा।

१६५-वज्राभ्रक भस्म नं० ३

जिसके सेवन से पुनः केश (बाल) काले हो जाते हैं। कृष्णाभ्रक शुद्ध को ४ पहर अर्क के दुग्ध में खरल करके चक्रिका बनालें और मिट्टी के कूजे में प्रथम नीचे अर्क पत्र रखकर ऊपर अभ्रक की टिकिया रखदें तथा उसके ऊपर भी अर्क पत्र रखकर कपड़मिट्टी करें और सूख जाने पर दो किलो उपलों की आग दें। इस प्रकार अर्क दुग्ध में खरल करके सात अग्नि दें। उपरोक्त विधि अनुसार सात बार बट की जटा की कोपलों के स्वरस की भावना देकर अग्नि दें। परन्तु हर बार उपलों का ७५ ग्राम वजन न्यून करते जावें, ताकि अन्त में ७५० ग्राम की अग्नि रह जावे। सम्पूर्ण १४ पुटों में भस्म तैयार होगी। फिर इसके समभाग गाय का घृत डालकर लोहे की कढ़ाही में नीचे यावत अग्नि जलावें कि सम्पूर्ण घृत शुष्क हो जावे। फिर पीस कर रखें।

सेवन विधि—मात्रा एक रत्ती बताशे में रखकर सेवन करावें। असंख्य रोगों को लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त बहुत दिन सेवन करते रहने से श्वेत बाल भी पुनः भंवरे के सदृश काले हो जाते हैं। खोई हुई तरुणाई वापिस लौट आती है।

१६६-पारदीय अभ्रक नं० ४

जिससे पारद स्थाई हो जाता है

अभ्रक भस्म गुड़वाली ६० ग्राम, शुद्ध पारद ६० ग्राम। दोनों को आक के अर्क में इतनी देर तक खरल करें कि पारद प्रतीत न हो। फिर इसका गोला बनाकर कूजे में डालकर कपड़मिट्टी करें और ५ किलो उपलों की आंच दें तथा दूसरे दिवस ५ ग्राम पारद मिलाकर अर्क मदार से सारे दिन खरल करें और कूजे में बन्द करके अग्नि दें। इसी प्रकार प्रतिदिन ४ ग्राम पारद मिलाकर और आक के अर्क में खरल करके ५ किलो उपलों की अग्नि देते रहें। इस प्रकार कुल १०० अग्नि दें। पारद इसके अन्दर ही

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रहेगा उड़ेगा कदापि नहीं । बस, अनुपम रसायन भस्म तैयार है।

सेवन विधि—मात्रा एक चावल, मक्खन अथवा मलाई में दें। इसके लाभ–अत्यन्त बाजीकरण और क्षुधावर्धक हैं। रसायनी लोग ही जानते हैं कि स्थाई पारद भस्म में कितनी शक्ति होती है। बस, वे सब गुण इसमें मौजूद हैं। इस भस्म में (१) अभ्रक भस्म गुणवाली और (२) अर्क आक का वर्णन आया है। अत: इन दोनों को बनाने की विधियां निम्नलिखित हैं।

१—कृष्णाभ्रक २५० ग्राम, गुड़ १८० ग्राम। दोनों को मिला कर दस घण्टे तक कूटें और फिर कूजे में कपरोटी करके ३ किलो उपलों की अग्नि दें। फिर इसमें अभ्रक के समभाग कलमी शोरा मिलाकर दस किलो उपलों की अग्नि दें। तत्पश्चात् पानी से धोकर शोरा निकाल दें और धूप में रखकर सुखा लें। बस, यही अभ्रक गुड़वाली है।

२—आक का पंचांग लेकर उसका अर्क निकाल लें और उसमें खरल करें।

समुद्री वस्तुयें और उनकी भस्में

बहुत सी वस्तुयें ऐसी हैं जो कि सागर अथवा नदियों में से निकलती हैं। जो कई एक रोगों में निःसन्देह लाभप्रद सिद्ध होती हैं। इनमें से कई तो स्वल्प मूल्य से हस्तगत हो जाती हैं और कई अत्यन्त अधिक मूल्य पर मिलती हैं। समुद्री वस्तुओं से हमारा तात्पर्य शंख, कपर्दिकायें, मूंगा, मोती आदि से है। इनकी भस्में बनाकर खिलाने से तो प्रभाव होता ही है, किन्तु इनको पास रखने अथवा गले में बांधने से भी आश्चर्यजनक प्रभाव होता है। प्रवाल (मूंगा), मुक्ता (मोती) तो बिना भस्म किये भी सेवन कराये जा सकते हैं। जिनको सेवन कराने की विधियां प्राय: सर्व साधारण पुस्तकों में भी मिलती हैं।

समुद्री वस्तुओं की भस्मों के विशेष गुण

समुद्रीय वस्तुओं की भस्में अत्यन्त सरलतापूर्वक निर्माण हो जाती हैं और कइयों को अपक्वावस्था में सेवन करना ही लाभप्रद सिद्ध होता है। इसलिये ये भस्में धातुओं (स्वर्ण, चांदी, ताम्र, लोहा, बंग, नाग आदि) और रसों में (पारद, हिंगुल, हरताल आदि की अपेक्षा) अधिक अहानिकर सिद्ध होती है क्योंकि इनको प्रत्येक मनुष्य बना करके पक्व अपक्व का सन्देह किये बिना ही सेवन कर सकता है। यह किसी दशा में भी हानिकारक सिद्ध नहीं होती।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कपर्दिका

यह एक प्रसिद्ध नादेय वस्तु है जिसको भारत का बच्चा बच्चा जानता है किन्तु भारत का दुर्भाग्य तो देखिये ! इससे लाभ उठाने की बजाये लोगों ने इसे बरबादी का साधन बना लिया है। यहां तक कि देहातों में बच्चे जब थोड़ा सा बोलने लगते हैं तभी क्रीड़ा करने के लिए कर्पदिका मांगा करते हैं। मानों द्यूत क्रीड़ा का साधन है। यद्यपि द्यूत क्रीड़ा के इस युग में और भी अनेक साधन बन चुके हैं तथापि मुझे जहां तक प्रतीत है. सर्व प्रथम यह क्रीड़ा कर्पदिकाओं से ही आरम्भ हुई थी। सुयोग्य वैद्य हकीम इनके द्वारा अनन्त व्याधियों की चिकित्सा करते हैं। अतः नीचे कर्पदिका भस्म बनाने की विधि लिखी जाती है। आशा है पाठक वृन्द इससे लाभान्वित होंगे।

नाम—कर्पदि, कोड़ी, कचकोड़ी, खरमोरा, दिमाग खर मोहरा, हलजों खुर्द आदि।

भेद—आकृति, वर्ण, परिमाण की अपेक्षा से इसके अनन्त भेद हैं। पीली, सफेद, गिट्ठी आदि।

१६७-कर्पादिका भस्म

आवश्यकतानुसार कर्पदिकायें लेकर कूजे में डालें और उन पर अर्क दुग्ध इतना डालें कि कर्पदिकाओं के ऊपर तक आ जावे फिर कपड़मिट्टी करके १० उपलों की अग्नि दें। सफेद रंग की फूली हुई भस्म तैयार होगी। सूक्ष्म पीसकर शीशी में रक्खो।

सेवन विधि—मात्रा एक रत्ती से दो रत्ती तक मक्खन या मलाई में सेवन करायें।

लाभ—उष्णवात (सुजाक), धातुक्षीण, स्वप्नदोष, अतिसार, प्रवाहिका, स्त्रियों का सोम रस (श्वेत प्रदर) आदि के लिये लाभकारी है। कर्ण शूल के लिए थोड़ी सी कान में डालकर ऊपर से नींबू का रस निचोड़ दें। कैसा ही भयंकर कर्ण शूल हो तत्क्षण बन्द हो जाता है। यह साधारण सी वस्तु है तथापि अनन्त रोगों का नाश करती है। हमारे भाइयों को उचित है कि इस प्रकार की साधारण चीजों से लाभ उठाना सीखें।

शंख

विवरण—यह भी कर्पदिका की तरह नादेय (दरियाई) कीट के ऊपने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

का खोल है। जब कीट मर जाता है या निकल जाता है तो इस खोल को शंख नाम से पुकारते हैं।

नाम—शंख, नाकूस, घोंघा शंख, हलजों आदि नामों से पुकारा जाता है।

भेद—आकार भेद से इसके कई भेद पाये जाते हैं। छोटे से छोटा एक रत्ती तक और अधिक से अधिक चार किलो तक परिमाण में मिलता है। बड़े शंखों को ब्राह्मण लोग मन्दिरों में और कथाओं के आदि और अन्त में बजाते हैं।

शंख भस्म के लाभ—शंख भस्म अत्यन्त ही लाभप्रद उच्च प्रभावक अकसीर वस्तु है। चिकित्सक इससे प्रत्येक व्याधि की चिकित्सा करने में सफल हो सकता है। चाहे व्याधि का कारण गर्मी हो या सर्दी, प्रत्येक रोग में लाभप्रद है। विशेष कर हर प्रकार के ज्वर, सांप का विष और पागल कुत्ते के काटे का विष (अलर्क) का उत्तम अगद है। इसके अतिरिक्त धातु-क्षीण, स्वप्नदोष, श्वेत प्रदर, बवासीर, नाड़ीव्रण, भगन्दर, हर प्रकार के अतिसार, संग्रहणी, उष्णवात, आमवात और कण्डू आदि के लिए लाभ-प्रद है।

विशेष लाभ—ज्वर में सेवन कराने से पसीना आकर शीघ्र ही बुखार उतर जाता है। परन्तु एन्टीफाईवरीन की तरह हृदय को निर्बल नहीं करता। यह विशेष गुण है। लेखक ने स्वयं शंख भस्म को कई रोगों पर प्रयोग किया है। निःसन्देह "कम खर्च बाला नशीन" कहलाने की अधि-कारी है। विशेषतया सर्पदंश व कई प्रकार के ज्वर, प्रमेह, अतिसार आदि को बहुत लाभकारी है।

उच्च प्रभावक पथरी तोड़ रसायन

१६८-शंख भस्म नं० १

आक के दूध में थोड़ा सा पिसा हुआ नमक डालकर एक कूजे में डालें और ऊपर से शंख का टुकड़ा डाल दें। आक का दूध इतना होना चाहिये कि शंख का टुकड़ा अच्छी तरह तर हो जाये। फिर कूजे को सम्पुट करके २० किलो उपलों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल लें। शंख नितान्त फूला हुआ मिलेगा। पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—मात्रा ४ रत्ती दिन में ३ बार बताशे में रखकर खिलाया करें। सेवनकाल में जौ अथवा गेहूं की रोटी, कुक्कुट मांस रस के

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

साथ खिलाना उचित है। इस प्रकार गिनती के दिनों में इस भस्म के सेवन पथरी (अश्मरी) टूट कर निकल जावेगी।

१६९-शंख भस्म नं० २

शंख का खड़ लेकर इमामदस्ते में कूटकर छोटे छोटे टुकड़े बना लें और किसी कूजे में रखकर उन टुकड़ों को आक के दूध से तर करदें। फिर कूजे को अच्छी प्रकार सम्पुट करके सूखने के पश्चात् २० किलो उपलों की अग्नि देकर शीतल होने पर निकाल लें। श्वेत रंग की फूली हुई भस्म प्राप्त होगी। इसको सूक्ष्म पीसकर सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—मात्रा एक रत्ती से दो रत्ती तक उचित अनुपान से दें। यथा ज्वर वाले को अर्क सौंफ अथवा गरम दूध से, अतिसार वाले को छाछ या चावलों के पानी से, प्रमेह वाले को मक्खन में रखकर दें। सर्प दंशित को घृत की घूंट के साथ खिलावें। अनेक व्याधियों के लिए लाभप्रद औषधि है।

सर्प दंश का उत्तम अगद

१७०-शंख भस्म नं० ३

दो तोला शंख का टुकड़ा लेकर इमामदस्ते में कूटकर चूर्ण बनालें और उसे सारा दिन आक के में खरल करते रहें। फिर कूजे में डालकर उसके अन्दर आक का दूध इतना और डाल दें जो औषधि के ऊपर तक आ जाये। पुनः कूजे को मिट्टी से सम्पुट करके ५ किलो उपलों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल कर सारा दिन अर्क दुग्ध में खरल करके इसकी चक्रिका बनालें और सुखा लें। जब सूख जावे तो न्योला का पेट चाक करके पेट के अन्दर शंख की टिकिया रखकर न्योले को मिट्टी के बड़े से बर्तन में रखकर और उसको कपड़मिट्टी करके इस प्रकार अग्नि दें कि सम्पूर्ण जलकर राख हो जावे। शीतल होने पर न्योले की राख समेत सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। उच्च श्रेणी का एक रासायनिक अगद है। इसको बना कर हर समय तैयार रखिए ताकि आवश्यकता के समय ऐसा अवसर न देखना पड़े कि उधर तो हम सर्प दंश का अगद ढूंढते फिरें और, इधर रोगी की मृत्यु हो जावे। इसलिये इस अगद को हर समय तैयार रखना उचित है।

सेवन विधि—मात्रा एक रत्ती साठ ग्राम शक्कर में मिलाकर खिलावें और एक एक पहर के अन्तर से इसी प्रकार खिलाते रहें। विष दूर हो जायेगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवाल (मूंगा)

सागर की तह में छोटे छोटे कीट रहा करते हैं, जो कि जल के भीतर ही परिश्रम करते और स्वनिर्माणित छोटे छोटे छिद्रों में निवास करते हैं मानो वह इनके गृह हैं। उन्हीं को लोग प्रवाल (मूंगा) की जड़ कहते हैं। कइयों का मत है कि प्रवाल भी पत्थर का एक भेद है और कइयों का मत यह है कि यह एक समुद्रीय वृक्ष है जो जल के भीतर ही उत्पन्न होकर लम्बी लम्बी शाखायें छोड़ता है। निदान उनका कथन है कि शाखायें अत्यन्त कोमल होती हैं परन्तु वायु के स्पर्श से कठोर हो जाती हैं।

नाम—प्रवाल, मूंगा, मरजान, वसद और गुजराती में प्रवाल, मराठी में प्रवाल तथा संस्कृत में प्रवाल एवं अरबी में मिरजान कहते हैं।

इसके लाभ—प्रवाल की भस्म भी शंख की भस्म की भांति अगद है। लेखक ने तो इसको अनन्त रोगों में अक्सीर के तुल्य अगद पाया है। यथा—नेत्र कण्डू, दृष्टिमन्द, उन्माद, प्यास की अधिकता, पुराने अतिसार तथा खांसी, प्लीहा, प्रमेह, श्वेत प्रदर, मासिक धर्म की अधिकता, ज्वर, सर्व प्रकार की पीड़ायें आदि आदि को लाभप्रद है। इसके विवरण में लोगों को पर्याप्त मतभेद है। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है।

१७१-प्रवाल शाखा भस्म

शाखा प्रवाल १२ ग्राम को किसी चीनी के प्याले में डालकर रखें और अर्क दुग्ध इतना डालें कि ऊपर तक आ जावे। पुनः इसको इसी प्रकार एक दिन तक पड़ा रहने दें। तत्पश्चात् उन शाखाओं को दूध में से निकालकर किसी मिट्टी के कूजे में बन्द करके १५-२० किलो उपलों की अग्नि दें। यदि भस्म का रंग श्वेत हो जावे तो अच्छा, अन्यथा पुनः अर्क दुग्ध में भिगोकर अग्नि दें। श्वेत होने पर सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—मात्रा एक रत्ती मक्खन या गुलकन्द आदि में दें।

लाभ—खांसी, अतिसार, प्रवाहिका, श्वास, हृदय की धड़कन आदि को लाभप्रद है।

१७२-प्रवाल की जड़ की भस्म

जो कि श्वास तथा कफज कास की विशेष औषधि है। प्रवाल की जड़ ५० ग्राम, अर्क दुग्ध सवा किलो। दोनों को मिट्टी की हांडी में डालकर और जौ के आटे से मुंह बन्द करके १० किलो उपलों की अग्नि दें। अग्नि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शीतल होने पर निकाल लें। प्रवाल भस्म को पृथक रखें और अर्क दुग्ध भस्म को अलग रखें। दोनों काम आवेंगी। अर्क दुग्ध भस्म कफज कास और बारी के ज्वरों के लिये लाभप्रद है।

सेवन विधि—मात्रा २ चावल से ४ चावल तक वंगला पान में दें। और बारी के ज्वरों में ज्वर होने से पूर्व एक एक घण्टा के अन्तर से दो बार दुग्धापान से सेवन करावें। प्रवाल जड़ की भस्म आधी रत्ती से एक रत्ती तक वंगला पान में दें। श्वास के लिये अकसीर है।

भोजन—अरहर की दाल घी डालकर खावें और सम्पूर्ण वस्तुओं से परहेज रखना अत्यन्त आवश्यक है।

शुक्ति (सीप)

यह एक भिन्न सामुद्रीय जीव के ऊपर का खोल है, जो बहुधा प्रत्येक छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी नदियों में पाई जाती है।

नाम—सदफ, सीप, सीपी, सीपड़ीगोश, महीशुक्तिका आदि आदि।

भेद—शुक्तिका वर्ण तथा परिमाण भेद से कई प्रकार की होती हैं। परन्तु सबसे अच्छी वह शुक्ति है जिसमें से मुक्ता (मोत) निकलते हैं। इसको मुक्ता शुक्ति के नाम से पुकारा जाता है।

स्वभाव—कई प्रकार के ज्वरों को लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त कास, श्वास, प्लीहा, धातुक्षीण, हृदय की निर्बलता, पार्श्वशूल को लाभप्रद वस्तु है।

१७३-लघु मुक्ताशुक्ति की भस्म नं० १

छोटी शुक्तिकायें लेकर किसी कूजे में डाल दें और उन पर दो अंगुल ऊपर तक अर्क दुग्ध भर दें। फिर कूजे को सम्पुट करके १५-२० किलो उपलों की अग्नि दें। सम्पूर्ण शुक्तिकायें फूली हुई निकलेंगी। इनको सूक्ष्म पीसकर रखें।

सेवन विधि—मात्रा ४ रत्ती खांड के मध्य में रखकर खिलावें और ऊपर से ६० ग्राम समोष्ण सौंफ का अर्क पिलायें।

लाभ—पार्श्वशूल की एक विशेष अद्वितीय महौषधि है। इसको खाते ही रोगी को ऐसा प्रतीत होता है, मानो पीड़ा के स्थान पर लेप लग गया है। इसके अतिरिक्त श्वास, खांसी के लिए खांड में, खुश्क खांसी वालों को मक्खन से दिया करें। ईश्वर की कृपा से आराम होगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१७४-शुक्ति भस्म नं० २

बड़ा सीप लेकर उसको आक के दूध में भिगोवें। पड़े पड़े जब सम्पूर्ण दूध सूख जावे तो इसको कूजे में डालकर कपड़मिट्टी करके १५ किलो उपलों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल लें और सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि-मात्रा ३ रत्ती मक्खन या मलाई में रखकर खिलाया करें। पाचक और बाजीकरण है। धातुक्षीण की उत्तम औषधि है।

१७५-शुक्ति भस्म नं० ३

मुक्ता शुक्ति को किसी प्याले में रख कर अर्क दूध इतना डालें कि ऊपर तक आ जावे। पुनः कपड़मिट्टी करके २० किलो उपलों की आग दें। श्वेत भस्म हो जायेगी।

सेवन विधि-इसमें से २ रत्ती मक्खन, मलाई या दूध से दिया करें।

लाभ-हृदय बलकारक, आमाशय तथा स्नायुओं को बल देने वाली है। खांसी के लिए भी लाभकारी है।

१७६-मुक्ताशुक्ति भस्म नं० ४

बड़ी बड़ी शुक्तियों को एक सप्ताह आक (अर्क) दूध में भिगोदें और फिर चाकू आदि से उनकी स्याही को खुरच कर फैंक दें तथा पुनः इनको इमामदस्ते में कूटकर खरल में डाल दें और सारे दिन आक दूध में खरल करके चक्रिका बनावें फिर कूजे में सम्पुट करके २ किलो उपलों की आग दें। इसी प्रकार पुनः ३ घण्टे आक के दूध में खरल करके २ किलो उपलों की आग दें।

सेवन विधि-मात्रा एक रत्ती मक्खन या मलाई में दें।

लाभ-बाजीकरण व बन्धेजकारक है। प्रमेह के लिये लाभकारी है।

भिन्न भिन्न भस्में

भिन्न भिन्न भस्मों के बनाने की विधियां निम्नलिखित हैं। जिसमें प्राणिज तथा पार्थिव वस्तुयें भी सम्मिलित हैं।

तुत्थ (तूतिया)

विवरण—यह उपधातु ताम्र से ही प्राप्त की जाती है। रसायनिक लोग इससे पुनः ताम्र निकाल लेते हैं जो कि उत्तम तथा शुद्ध होता है। वायु के स्पर्श से खराब हो जाता है। इसके दो भेद हैं। नीला तथा हरा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नाम-अरबी में तूतियाए अखजर, फारसी में तूतियाए सब्ज, अंग्रेजी में सल्फेट आफ कापर और संस्कृत में तुत्थ कहते हैं।

स्वभाव–उष्ण तथा रुक्ष है।

गुण-अधिक मात्रा में सेवन कराने से वमन कारक है। उष्णवात के रोगियों को इसकी पिचकारी दी जाती है। इसके अतिरक्त कुकरों के लिए अत्यन्त ही लाभप्रद है। उपदंश के क्षत को दूर करता है।

रसायनिक सूचना–यदि इसकी सपरिमाण श्वेत भस्म की जावे तो गन्धक का तेल निकालने में सहायता देता है। सिंगरफ को मोमिया बनाता है, जैसा कि सिंगरफ भस्म के कथन में लिखा जा चुका है।

विशेष भेद की बात-संसार ताम्र भस्म को श्वेत तथा स्थाई बनाने की खोज में मारा मारा फिर रहा है। उनको चाहिए कि तूतिया की श्वेत भस्म कर लें। यह भस्म ताम्र भस्म का विनिमय ही नहीं वरंच निश्चय वही वस्तु है।

१७७-तुत्थ भस्म

२५० ग्राम रीठे की छाल को सूक्ष्म पीस कर १८० ग्राम आक के दूध में गूंधें और इसकी २ चक्रिकायें बना लें। फिर दोनों के मध्य में १२ ग्राम तुत्थ की डली रखकर दोनों टिकियों के मुंह परस्पर मिलाकर दो प्यालों में वन्द करके ऊपर कपड़मिट्टी कर दें और पृथ्वी में गढ़ा खोदकर ४ किलो घरेलू उपलों की आग दें। परन्तु यह क्रिया निर्वात स्थान में करनी चाहिए। शीतल होने पर निकाल लें। तैयार है। इसमें से थोड़ी सी भस्म दही में डालकर देखें, यदि नील वर्ण न दे तो तैयार, अन्यथा अर्क दूध में २ घण्टे खरल करके भूभल पर रखकर उष्णता दें।

सेवन विधि–मात्रा एक चावल से चार चावल तक मलाई में दिया करें।

लाभ–पुराना उष्णवात, उपदंश, कण्डू, दद्रू और चरमदल को लाभकारी है। औषधि सेवन के दिवसों में रोगी को स्निग्ध भोजन (अधिक घृत मिश्रित) सेवन करना उचित है।

१७८-हरित तुत्थ भस्म

जो कि तिमिर रोग, नेत्र पटल तथा मोतियाविन्द को बिना शालाक्य चिकित्सा के मिटा देता है।

खनिज हरा तुत्थ (इसके दो भेद हैं, एक खनिज दूसरा कृत्रिम। यहां खनिज लेना है) २५ ग्राम सूक्षम पीसकर इसको एक घण्टा पर्यन्त आक के

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दूध में खरल करें और छाया में सुखायें। फिर खरल करें और सुखायें। एवमेव १०१ बार यही क्रिया करते रहें। इसके पश्चात् इस औषधि को गौ घृत में मिश्रित करके मलहर बनालें और इस मलहर में रुई को भिगोकर बत्ती बनावें और दीपक के अन्दर रखकर जलादें। दीपक के ऊपर मिट्टी का कच्चा प्याला उल्टा लटका दें ताकि सम्पूर्ण धूम्र उपरोक्त प्याले में संग्रह हो जावे। बत्ती के सम्पूर्ण जल जाने पर इस धूम्र को तथा जली हुई बत्ती को साथ मिलाकर खरल में डाल भलीभांति पीसकर सुरक्षित रखें। बस, अकसीर तिमिर तैयार है।

सेवन विधि—इस औषधि में से आधी रत्ती से एक रत्ती तक लेकर शलाका द्वारा तिमिर, मोतियाबिन्द के रोगी की आंखों में अंजन किया करें और ऊपर अरंड के पत्ते बांध दें। ३ घण्टे के पश्चात् पट्टी खोलकर पुनः औषधि डालें। इसी प्रकार दिवस में चार बार औषधि का अंजन करें। यदि अरंड के पत्ते प्राप्त न हो सकें तो पान के पत्ते बांधें। एक ही दिवस में किसी किसी रोगी की दृष्टि खुल जाती है। मानो यह औषधि शालाक्य क्रिया का प्रतिनिधि है। परन्तु शर्त यह है कि इस औषधि को ऐसे रोगी पर प्रयुक्त किया जाये जिसकी दृष्टि बन्द हुए न्यूनातिन्यून १ वर्ष का समय व्यतीत हो चुका हो। वरंच ३ या ४ वर्ष से दृष्टि बन्द हो चुकी हो तो और भी अच्छा है।

कई एक सूचनायें

जिस दिन औषधि सेवन कराई जावे उस दिन रोगी को ऐसे मकान के अन्दर रखें, जहां वायु नितान्त न लगती हो, परन्तु यद्किंचित प्रकाश अवश्य होना चाहिए। चारों बार औषधि प्रयोग कर चुकने के बाद पट्टी को खोल डालें और आंखों को गर्म पानी से धोवें। इससे पूर्व नेत्रों को कदापि न खोलने दें। वरंच गर्म पानी से धोने के पश्चात् शनै शनै प्रकाश स्वरूप परमेश्वर का नाम लेकर नेत्र खोलने की आज्ञा दें। आशा है अवश्य सफलता प्राप्त होगी। द्वितीय, रोगी को उस रात सोने न देना चाहिए। उस दिन रोगी को यदि अधिक अरति (बेचैनी) न हो तो शुभ चिन्ह समझें। यह क्रिया प्रत्येक सर्व साधारण तथा अनाड़ी लोगों के करने की नहीं है। अतः योग्य वैद्य और चिकित्सक ही इससे लाभान्वित होने का आचरण करें।

कंकुष्ट (मुरदार संग)

विवरण—यह एक प्रसिद्ध धातु सीसे की ही शाखा है। अत्यन्त गुरु तथा पीतता लिए होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नाम—साधारणतया मुरदारसंग, मुरदारसंज और संस्कृत में कंकुष्ट आदि नामों से पुकारा जाता है।

कंकुष्ट भस्म के लाभ—कंकुष्ट भस्म सम्पूर्ण शीत और कफज व्याधियों को लाभप्रद है। विशेषतया कास, श्वास, उदरकृमि, उष्णवात, उपदंश को लाभकारी है।

१७६-कंकुष्ट भस्म नं० १

कंकुष्ट १२ ग्राम के सूक्ष्म कण करके मिट्टी के कूजे में डालकर अर्क दुग्ध से तर करें और आठ पहर के पश्चात् कपड़मिट्टी करके सूख जाने के पश्चात् केवल १ किलो उपलों की अग्नि दें और अग्नि के शीतल होने पर सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती मक्खन में लपेट कर दिया करें अथवा खांड के मध्य में रखकर खिलायें।

लाभ—उष्णवात, उपदंश, उदरकृमि को लाभप्रद है और सर्पदंशित के लिए शलाका से नेत्रों में अन्जन करायें। ईश्वर कृपा से विष दूर होगा।

१८०-कंकुष्ट भस्म नं० २

रसोन (लहसुन) ३५ ग्राम को अर्क दुग्ध में खरल करके १२ ग्राम कंकुष्ट की डली को बन्द करके आधा किलो उपलों की अग्नि दें, एवमेव सात सात बार करें।

सेवन विधि—मात्रा आधी रत्ती। अर्श (बवासीर) व उदरकृमि को लाभप्रद है।

॥ इति ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रसायन फार्मेसी (प्रकाशन विभाग), नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एवम् वितरित पुस्तकें

आयुर्वेदिक

अनुभूत योग चिन्तामणि (दो भाग)	क० गणपतिसिंह वर्मा	१५-००
अनुभूत योग प्रकाश	,, ,, ,,	१०-००
भारतीय जड़ी बूटी (प्रति भाग)	,, ,, ,,	५-००
पैसे पैसे के चुटकुले	,, ,, ,,	५-००
गुप्त योग रत्नावली	डा० नरेन्द्रसिंह नेगी	५-००
श्वास रोग चिकित्सा प्रदीप	वैद्य मोहर सिंह	२-००
अर्श रोग चिकित्सा	,, ,, ,,	२-००
आयुर्वेद गाईड	पं० अमोलचन्द्र शुक्ल	३०-००
औषधियों का भण्डार	,, ,, ,,	१५-००
इलाजुलगुर्बा	,, ,, ,,	१५-००
वृद्धों के रोग तथा वृद्धावस्था का प्रतिकार	आचार्य रघुवीर प्रसाद	१२-००
रोगी की सेवा और पथ्य	डा० सुरेश प्रसाद गर्ग	४-५०
अनुभूत योग चर्चा (दो भाग)	श्री बंसरीलाल साहनी	१०-००
गुप्त अनुभूत योग	,, ,, ,,	४-००
साधू, सन्यासियों, योगियों के अनुभूत योग	,, ,, ,,	३-००
घरेलु दवाइयां	राजेश दीक्षित	८-५०
पेटेन्ट मरवियात	आर० एस० बंसल	६-००
देहाती अनुभूत योग संग्रह (दो भाग)	पं० अमोलचन्द शुक्ल	१६-५०
आयुर्वेदीय द्रव्य गुण विज्ञान	डा० शिवकुमार व्यास	१८-००
सचित्र रस शास्त्र	बंसरी लाल साहनी	१८-००
आयुर्वेद चिकित्सा मार्ग दर्शिका	बंसरी लाल साहनी	४-००
मेघमुनि प्रणित मेघ विनोद	कविराज नरेन्द्र नाथ शास्त्री	६-००
रतिज रोग परिचय	डा० वीरेन्द्र सहगल	४-००
आयुर्वेद विज्ञान	डा० कमला प्रसाद मिश्र	४-००
अपूर्व चिकित्सा विधान	डा० महेन्द्र नाथ पांडे	७-५०
सचित्र पंचकर्म विज्ञान	डा० शिवकुमार व्यास	६-००

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ऐलोपैथिक

ऐलोपैथिक मेडिकल प्रैक्टिशनर	डा० महेश्वरप्रसाद उमाशंकर	२०-००
माडर्न पेटेंट ड्रग्ज	डा० जे० पी० सक्सेना	१४-००
वर्मा ऐलोपैथिक निघन्टु	डा० रामनाथ वर्मा	१६-००
वर्मा ऐलोपैथिक गाइड	डा० रामनाथ वर्मा	२०-००
ऐलोपैथिक मेटेरिया मेडिका	डा० शिवदयाल गुप्त	२०-००
माडर्न डायग्नोसिस	—	१६-००
स्त्रियों के रोग और उनकी आधुनिक चिकित्सा	डा० रघुवीरप्रसाद	२२-००
ऐलोपैथिक मेडिसन नवनीत चार्ट	डा० कोकचा	१५-७५
दर्दों की चिकित्सा	डा० एस० पी० मेहता	५-००
विष चिकित्सा	डा० एस० पी० मेहता	६-००
माडर्न निरीक्षण विज्ञान	डा० ओमप्रकाश शर्मा	६-००
प्रैस्क्रिप्शन बुक	डा० ए० पी० गौड़	६-००
आधुनिक ऐलोपैथिक इन्जेक्शन बुक	डा० कोकचा	१२-००
ऐलोपैथिक आयुर्वेदिक यूनानी टेबलेट गाइड	डा० कोकचा	१२-००
ऐलोपैथिक इन्जेक्शन चिकित्सा नवनीत चार्टस	डा० कोकचा	१८-००
ऐलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा नवनीत चार्टस	डा० कोकचा	२२-७५
अपटूडेडेट ऐलो० पेटेंट मेडिसन नवनीत चार्टस	डा० कोकचा	१५-७५
लेडी डाक्टर	—	६-००

होम्योपैथिक

होम्योपैथिक मेटेरिया मेडिका रेपर्टरी सहित	डा० विलियम बोरिक	२०-००
होम्योपैथिक रेपर्टरी		१०-००
फेरिंगटन का तुलनामूलक मेटेरिया मेडिका		१२-०७
होमियो पारिवारिक चिकित्सा		२२-००
होमियो बाल रोग चिकित्सा		५-५०
स्त्री रोग चिकित्सा (सचित्र)		७-००
होम्योपैथिक मेटेरिया मेडिका		६-५०
भारतीय औषधावली व होम्यो पेटेन्ट मेडिसन		३-००

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दो हजार आश्चर्यजनक होम्यो० दवायें	४-००
चमत्कारी होम्योपैथिक दवायें	२-००
बेलाडोना से १०० रोगों की चिकित्सा	१-००
स्त्री रोगों की होम्यो० औषधियां	१-००
होम्योपैथिक मिक्सचर्स	२-००
पेट के रोगों की होम्यो० चिकित्सा	२-५०
थूजा	२-००

प्राकृतिक चिकित्सा

फलों के चमत्कार	डा० गणपतिसिंह वर्मा	१०-००
भोजन द्वारा चिकित्सा	डा० गणेश नारायण चौहान	४-५०
योग से रोग निवारण (सचित्र)	स्वामी शिवानन्द	१५-००
प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार	चौ० जुगल किशोर	१२-००
स्वमूत्र द्वारा चिकित्सा		३-००
यूरिन थैरापी	डा० एस० पी० मेहता	३-००
पोषण विज्ञान व आहार आयोजन	—	६-००
कायाकल्प	—	५-००
वृक्ष विज्ञान चिकित्सा	—	३-५०
हम सौ वर्ष कैसे जीवें ?	केदारनाथ गुप्त	३-००
प्राकृतिक चिकित्सा	केदारनाथ गुप्त	३-००
स्वास्थ्य और योगासन	आचार्य भगवानदेव	४-००
ब्रह्मचर्य प्रदीप	पं० जगतकुमार शास्त्री	४-००
सैक्स पावर बढ़ाने के व्यायाम	डा० ए० सी० चौधरी	१५-००
संतति निरोध	डा० प्रिय कुमार चौबे	६-००
गुप्त सेक्स ज्ञान	—	१२ ००
सदा जवान रहो	—	१८-००

पुस्तकें मंगाने का एकमात्र स्थान :

रसायन फार्मेसी (प्रकाशन विभाग)

३, दरियागंज, अंसारी रोड, नई दिल्ली-११०००२

दूरभाष : २७१४७९

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अनुभूत योग प्रकाश

लेखक—डाक्टर गणपति सिंह वर्मा

जिसकी आप वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे थे, वह ग्रन्थ चौथी [illegible] छपकर तैयार हो गया है, जिसमें सब रोगों का पूर्ण निदान, लक्षण और [illegible] त्सा ऐसे अनुभूत और गुप्त योग छपे हैं जिनको आज तक जमाने की हवा [illegible] नह लगी। यह कोई साधारण योग नहीं हैं बल्कि १५ वर्ष के सतत् [illegible] परिणाम है। इसमें सबसे बड़ी आपको वह रीसर्च मिलेगी, जि[illegible] ज तक आपने सुना भी न होगा अर्थात् समुद्रीय द्रव्यों यथा मुक्ता शुक्ति, [illegible], शख, कपर्दिका आदि का तैल बनाना। इन तैलों की तुलना में इन द्रव्यों का भस्में बहुत ही तुच्छ लाभ पहुंचाती है। इन तैलों से अनेक कष्ट साध्य और असाध्य कहे जाने वाले रोग निश्चय ही ठीक हो जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि पारद, हरताल, सिंगरफ आदि उड़नशील द्रव्यों को इन तैलों में घोटने से उनमें स्थायीत्व आ जाता है। इसी प्रकार कैन्सर जैसे भयकर रोग का अनुभूत इलाज भी आपको इसी पुस्तक में मिलेगा। सारांश इस पुस्तक में ऐसा कोई रोग नही छोड़ा जिसका अनुभूत एवं चमत्कारी योग इस पुस्तक में न छपा हो। सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य १२-०० डाक व्यय अलग।

फलों के चमत्कार

"फलों द्वारा अनुभूत चिकित्सा"

यह अनुभव द्वारा सिद्ध हो चुका है कि फल केवल पथ्य या स्वल्पाहार के लिए ही नहीं है बल्कि इनमें रोगनाशिनी शक्ति सब प्रकार की औषधियों से कहीं बढ़कर है। 'फलों के चमत्कार' नामक पुस्तक में तीस चोटी के चिकित्सों की अनुभूत चिकित्सा पद्धति प्रकाशित की गई है। जिसमें सिर से पांव तक होने वाले सभी रोगों तथा आजकल के बहुचर्चित हृदय की कमजोरी, मधुदेह, अशक्ति, स्नायुदौर्बल्य आदि साधारण और जीर्ण तथा कठिन रोगों का इलाज आप सर्वत्र मिलने वाले सुमधुर फलों द्वारा स्वयं घर में कर लिया करेंगे। इसी प्रकार स्त्रियों के आजकल के प्रचलित रोगों एवं बालकों के विभिन्न २० रोगों की चिकित्सा फलों से करना तथा फलों द्वारा कल्प करना भी बताया गया है। इस चिकित्सा पद्धति में औषधोपचार से अधिक समय भी नही लगता और न खर्च ही अधिक पड़ता है। प्राकृतिक चिकित्सकों व सद्गृहस्थों के लिए समान उपयोगी है। मूल्य १२-०० डाक-खर्च अलग अंग्रेजी का नवम संस्करण १२-०० डाक व्यय अलग।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida